CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

9.2

निराले हीरे की खोज

राहुल सांकृत्यायन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निराले हीरे की खोज

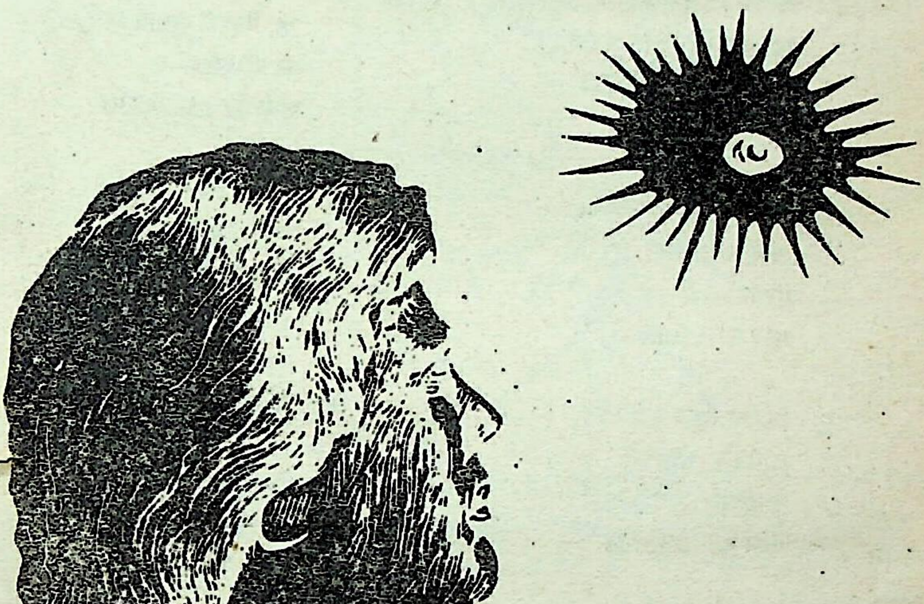

राहुल सांकृत्यायन

किताब महल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रथम संस्करण : 1965
द्वितीय संस्करण : 1981
तृतीय संस्करण : 1993

मुख्य वितरक

1. किताब महल एजेन्सीज,
84, के० पी० कक्कड़ रोड,
इलाहाबाद — 211003
फोन नं० : 50540

2. किताब महल डिस्ट्रीब्यूटर्स,
28, नेताजी सुभाष मार्ग,
नई दिल्ली — 2
फोन नं० : 3273230

3. किताब महल एजेन्सीज,
अशोक राजपथ,
पटना — 4
फोन नं० : 50599

4. किताब महल,
मनोज बिल्डिंग,
सेन्ट्रल बाजार रोड,
रामदास पेठ, नागपुर — 10

5. किताब महल एजेन्सीज,
A3/4A, मछोदरी,
वाराणसी — 220001
फोन नं० : 332721

6. पी० जी० परदेसी,
6 मेघदूत, 27 पी० एम० मार्ग,
विले पार्ले (पूर्व)
बम्बई — 400057
फोन नं० : 6132360

प्रकाशक : किताब महल, 22 ए, सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद।
मुद्रक : सेन्चुरी प्रिन्टर्स, 22, सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निराले हीरे की खोज, विस्मृति के गर्भ में, सोने की ढाल और जादू का मुल्क, चारों उपन्यासों को "स्वान्तः सुखाय" के अतिरिक्त अपने नवतरुणों में साहस पैदा करने के ख्याल से भी १९२४ में मैंने किन्हीं विस्मृत अंग्रेजी लेखकों के उपन्यासों में बहुत से परिवर्तन के साथ अनुवादित किया था।

इतने साल पहले जब इन उपन्यासों का कायाकल्प करके मैंने अनुवाद किया था, उस समय हमारे देश के कितने ही समझदार सज्जनों को देश की स्वतन्त्रता दूर की नहीं, स्वप्न की बात मालूम होती थी, उस समय मेरा इन उपन्यासों के पात्रों को एक स्वतन्त्र देश के नागरिक की भाँति चित्रित करना काल तथा स्थान-मनौचित्य का काम था, किन्तु अब वह बात नहीं है और आशा है हमारे तरुण पाठक ज्ञान-विज्ञान के परिचय तथा देश-विदेश के पर्यटन के लिये अपने को अच्छे साहसी जिज्ञासु घुमक्कड़ सिद्ध करेंगे।

राहुल सांकृत्यायन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशकीय

हिन्दी साहित्य में महापंडित राहुल सांकृत्यायन का नाम इतिहास-प्रसिद्ध और अमर विभूतियों में गिना जाता है। राहुल जी की जन्मतिथि 9 अप्रैल, 1893 ई० और मृत्युतिथि 14 अप्रैल, 1963 ई० है। राहुल जी का बचपन का नाम केदारनाथ पाण्डे था। बौद्ध दर्शन से इतना प्रभावित हुए कि स्वयं बौद्ध हो गये। 'राहुल' नाम तो बाद में पड़ा—बौद्ध हो जाने के बाद। 'सांकत्य' गोत्रीय होने के कारण उन्हें राहुल सांकृत्यायन कहा जाने लगा।

राहुल जी का समूचा जीवन घुमक्कड़ी का था। भिन्न-भिन्न भाषा साहित्य एवं प्राचीन संस्कृत-पाली-प्राकृत-अपभ्रंश आदि भाषाओं का अनवरत अध्ययन-मनन करने का अपूर्व वैशिष्ट्य उनमें था। प्राचीन और नवीन साहित्य-दृष्टि की जितनी पकड़ और गहरी पैठ राहुल जी की थी—ऐसा योग कम ही देखने को मिलता है। घुमक्कड़ जीवन के मूल में अध्ययन की प्रवृत्ति ही सर्वोपरि रही। राहुल जी के साहित्यिक जीवन की शुरुआत सन् 1927 ई० में होती है। वास्तविकता यह है कि जिस प्रकार उनके पाँव नहीं रुके, उसी प्रकार उनकी लेखनी भी निरन्तर चलती रही। विभिन्न विषयों पर उन्होंने 150 से अधिक ग्रंथों का प्रणयन किया है। अब तक उनके 130 से भी अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। लेखों, निबन्धों एवं भाषणों की गणना एक मुश्किल काम है।

राहुल जी के साहित्य के विविध पक्षों को देखने से ज्ञात होता है कि उनकी पैठ न केवल प्राचीन-नवीन भारतीय साहित्य में थी, अपितु तिब्बती, सिंहली, अंग्रेजी, चीनी, रूसी, जापानी आदि भाषाओं की जानकारी करते हुए तत्तत् साहित्य को भी उन्होंने मथ डाला। राहुल जी जब जिसके सम्पर्क में गये, उसकी पूरी जानकारी हासिल की। जब वे साम्यवाद के क्षेत्र में गये, तो कार्ल मार्क्स, लेनिन, स्तालिन आदि के राजनीतिक दर्शन की पूरी जानकारी प्राप्त की। यही कारण है कि उनके साहित्य में जनता, जनता का राज्य और मेहनतकश मजदूरों का स्वर प्रबल और प्रधान है।

राहुल जी बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न विचारक हैं। धर्म, दर्शन, लोकसाहित्य, यात्रासाहित्य, इतिहास, राजनीति, जीवनी, कोश, प्राचीन तालपोथियों का सम्पादन आदि विविध क्षेत्रों में स्तुत्य कार्य किया है। राहुल जी ने प्राचीन के खण्डहरों से गणतंत्रीय प्रणाली की खोज की। 'सिंह सेनापति' जैसी कुछ कृतियों में उनकी यह अन्वेषी वृत्ति देखी जा सकती है। उनकी रचनाओं में प्राचीन के प्रति आस्था, इतिहास के प्रति गौरव और वर्तमान के प्रति सधी हुई दृष्टि का समन्वय देखने को मिलता है। यह केवल राहुल जी थे जिन्होंने प्राचीन और वर्तमान भारतीय साहित्य-चिन्तन को समग्रतः आत्मसात् कर हमें मौलिक दृष्टि देने का निरन्तर प्रयास किया है। चाहे साम्यवादी साहित्य हो या बौद्ध दर्शन, इतिहास-सम्मत उपन्यास हो या 'वोल्गा से गंगा' की कहानियाँ—हर जगह राहुल जी की चिन्तक वृत्ति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशकीय

हिन्दी साहित्य में महापंडित राहुल सांकृत्यायन का नाम इतिहास-प्रसिद्ध और अमर विभूतियों में गिना जाता है। राहुल जी की जन्मतिथि 9 अप्रैल, 1893 ई० और मृत्युतिथि 14 अप्रैल, 1963 ई० है। राहुल जी का बचपन का नाम केदारनाथ पाण्डे था। बौद्ध दर्शन से इतना प्रभावित हुए कि स्वयं बौद्ध हो गये। 'राहुल' नाम तो बाद में पड़ा—बौद्ध हो जाने के बाद। 'सांकत्य' गोत्रीय होने के कारण उन्हें राहुल सांकृत्यायन कहा जाने लगा।

राहुल जी का समूचा जीवन घुमक्कड़ी का था। भिन्न-भिन्न भाषा साहित्य एवं प्राचीन संस्कृत-पाली-प्राकृत-अपभ्रंश आदि भाषाओं का अनवरत अध्ययन-मनन करने का अपूर्व वैशिष्ट्य उनमें था। प्राचीन और नवीन साहित्य-दृष्टि की जितनी पकड़ और गहरी पैठ राहुल जी की थी—ऐसा योग कम ही देखने को मिलता है। घुमक्कड़ जीवन के मूल में अध्ययन की प्रवृत्ति ही सर्वोपरि रही। राहुल जी के साहित्यिक जीवन की शुरुआत सन् 1927 ई० में होती है। वास्तविकता यह है कि जिस प्रकार उनके पाँव नहीं रुके, उसी प्रकार उनकी लेखनी भी निरन्तर चलती रही। विभिन्न विषयों पर उन्होंने 150 से अधिक ग्रंथों का प्रणयन किया है। अब तक उनके 130 से भी अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। लेखों, निबन्धों एवं भाषणों की गणना एक मुश्किल काम है।

राहुल जी के साहित्य के विविध पक्षों को देखने से ज्ञात होता है कि उनकी पैठ न केवल प्राचीन-नवीन भारतीय साहित्य में थी, अपितु तिब्बती, सिंहली, अंग्रेजी, चीनी, रूसी, जापानी आदि भाषाओं की जानकारी करते हुए तत्तत् साहित्य को भी उन्होंने मथ डाला। राहुल जी जब जिसके सम्पर्क में गये, उसकी पूरी जानकारी हासिल की। जब वे साम्यवाद के क्षेत्र में गये, तो कार्ल मार्क्स, लेनिन, स्तालिन आदि के राजनीतिक दर्शन की पूरी जानकारी प्राप्त की। यही कारण है कि उनके साहित्य में जनता, जनता का राज्य और मेहनतकश मजदूरों का स्वर प्रबल और प्रधान है।

राहुल जी बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न विचारक हैं। धर्म, दर्शन, लोकसाहित्य, यात्रासाहित्य, इतिहास, राजनीति, जीवनी, कोश, प्राचीन तालपोथियों का सम्पादन आदि विविध क्षेत्रों में स्तुत्य कार्य किया है। राहुल जी ने प्राचीन के खण्डहरों से गणतंत्रीय प्रणाली की खोज की। 'सिंह सेनापति' जैसी कुछ कृतियों में उनकी यह अन्वेषी वृत्ति देखी जा सकती है। उनकी रचनाओं में प्राचीन के प्रति आस्था, इतिहास के प्रति गौरव और वर्तमान के प्रति सधी हुई दृष्टि का समन्वय देखने को मिलता है। यह केवल राहुल जी थे जिन्होंने प्राचीन और वर्तमान भारतीय साहित्य-चिन्तन को समग्रतः आत्मसात् कर हमें मौलिक दृष्टि देने का निरन्तर प्रयास किया है। चाहे साम्यवादी साहित्य हो या बौद्ध दर्शन, इतिहास-सम्मत उपन्यास हो या 'वोल्गा से गंगा' की कहानियाँ—हर जगह राहुल जी की चिन्तक वृत्ति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और अन्वेषी सूक्ष्म दृष्टि का प्रमाण मिलता जाता है। उनके उपन्यास और कहानियाँ बिलकुल एक नये दृष्टिकोण को हमारे सामने रखते हैं।

समग्रतः यह कहा जा सकता है कि राहुल जी न केवल हिन्दी साहित्य अपितु समूचे भारतीय वाङ्मय के एक ऐसे महारथी हैं जिन्होंने प्राचीन और नवीन, पौर्वात्य एवं पाश्चात्य, दर्शन एवं राजनीति और जीवन के उन अछूते तथ्यों पर प्रकाश डाला है जिन पर साधारणतः लोगों की दृष्टि नहीं गई थी। सर्वहारा के प्रति विशेष मोह होने के कारण अपनी साम्यवादी कृतियों में किसानों, मजदूरों और मेहनतकश लोगों की बराबर हिमायत करते दीखते हैं।

विषय के अनुसार राहुल जी की भाषा-शैली अपना स्वरूप निर्धारित करती है। उन्होंने सामान्यतः सीधी-सादी सरल शैली का ही सहारा लिया है जिससे उनका सम्पूर्ण साहित्य— विशेषकर कथा-साहित्य—साधारण पाठकों के लिए भी पठनीय और सुबोध है।

प्रस्तुत कृति 'निराले हीरे की खोज' राहुल जी द्वारा अनूदित कहानियों का रोचक संग्रह है, जिसकी रचना उन्होंने सन् 1923 में की थी। प्रस्तुत संग्रह में बीस कहानियाँ हैं जिनका अनुवाद उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन के प्रारंभ काल में ही किया था। यह सभी कहानियाँ उनके घुमक्कड़ी प्रवृत्ति और ऐतिहासिक खोज की भूख मिटाने में सक्षम हैं। कहानियों का कलेवर अति मानवीय करूणा व रहस्यों से ओत-प्रोत है।

'निराले हीरे की खोज' की कहानियाँ राहुल जी की चमत्कारी लेखनी का एक नया और आकर्षक स्वरूप है।

प्रकाशक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय-सूची

समुद्र का उपद्रव	1
रेतीली खाड़ी में दो स्टीमर	6
महागर्त का तल	12
बँगले वाला आदमी	16
भगेलू की राम-कहानी	22
जेल का भीतरी	29
कप्तान का सन्देश	37
भयंकर बुलबुला	43
महापथ	50
मुर्दों की गुफा	55
मोहनस्वरूप का भूत	64
आँख	72
शैतान की आँख	78
बँगले में क्या देखा-सुना	85
पुष्पक का अंत	91
हमारा घनिष्ठ संघ	97
शुभाशा का निर्माण	104
यात्रारम्भ	109
जल-भित्तिका	113
आँख का जानकार	119

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समुद्र का उपद्रव

मधुच्छत्र-द्वीप के दिखाई पड़ने की पहली रात—कप्तान प्रभुनाथ सूर्यास्त से किरण फूटते तक प्रायः बराबर अपनी जगह पर डटे रहे। उन्होंने सिर्फ एक घण्टे के लिये, तीन और चार बजे के बीच विश्राम किया। इसी समय एक अद्‌भुत घटना घटी। चौकीदारों में से मनोहर ने, तारावोर्ड में प्रकाश की सूचना देते हुए झूठी पगली घण्टी कर दी और किसी ने भी उस प्रकाश को नहीं देखा। मनोहर ने भी जिरह में स्वीकार किया कि शायद मुझसे भूल हुई हो। अतः कप्तान को उठाने की नौबत नहीं आई और बात मजाक में उड़ गई।

"जो आदमी दो घण्टे बराबर अँधेरे में ढूँढ़ता रहे, उसे बिल्कुल सम्भव है कि तारे दिखलाई दें"—हरिकृष्ण ठाकुर ने मुझसे दूसरे दिन कहा जबकि मैं उनके साथ 'नकशाघर' में था। मनोहर ने कहा था कि उसने आकाश में एक प्रकार की लौ देखी। उसका चमकना और बुझना दोनों ही आधा सेकण्ड या उससे कम ही में हुआ होगा; अतः उसके नोट करने के लिए काफी समय नहीं था।

"शायद, वह बड़ा शक्की है"—मैंने कहा।

"हाँ! मैं भी उस पर एकदम विश्वास करने नहीं जा रहा हूँ।"—तृतीय अफसर ने मुस्कुराते हुए कहा।

इस समय "इन्द्रायुध" द्वीप के पूर्वी ओर, दक्षिणी किनारे पर शरण लेने के लिये जल्दी-जल्दी सरक रहा था। मधुच्छत्र के टीलों की ऊँचाइयाँ कुहरों से छिपी हुई थीं। यद्यपि भूमि को देखकर हम लोग खुश थे, तथापि यह प्राणि-शून्य प्रदेश ऐसा सूनसान मालूम होता था कि हृदय सिहरने लगता था। ऊपर, हजार हाथ ऊँचे ऊबड़-खाबड़ चट्टानों की पंक्तियों पर घना कुहरा और बादलों की चादर; नीचे, चञ्चल समुद्र के जहाज के लोह-गात पर फेन और लहरों के थपेड़े।

हरिकृष्ण ने कहा—"कितने क्रूर हैं यह थपेड़े, किन्तु तूफान के समय यही दशा सभी बन्दरों की होती है। पीताम्बर कहते हैं कि किसी शान्त स्थान में बारह घण्टे लंगर डाल सकने पर इंजन सुधारा जा सकता है। देखो तो माधव! 'नाविक' ने क्या बतलाया है!"

"अटलाण्टिक नाविक" मेज पर वैसा ही खुला पड़ा था, जैसा कि कप्तान प्रभुनाथ ने उसे छोड़ा था। वहाँ एक पैरा पर पेन्सिल से निशान थे, मैं उसी को ऊँचे स्वर से पढ़ने लगा—

"मधुच्छत्र—(अक्षांश 35°—देशान्तर दे 25°—4, पश्चिम) इसलिए नाम पड़ा, क्योंकि इसके टीलों और उनके बीच के गड़हों से इसका आकार मधु के छत्ते की भाँति जान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पड़ता है। किनारा सब जगह 1000–2000 फीट ऊँचा है। उतरने लायक एक ही दक्षिण-पश्चिम घाट है जहाँ सुरक्षित जल है तथा पास ही गड़्हों में मीठा पानी है। इस द्वीप की लम्बाई पाँच मील और चौड़ाई चार मील है। पहाड़ियाँ प्रायः मेघाच्छादित रहतीं हैं। कहीं न वनस्पति है, न प्राणियों का पता। यहाँ तक कि समुद्री चिड़ियाँ भी इस स्थान पर नहीं जातीं। भारतीय सैनिक जहाज 'बाज' 1900 में यहाँ टकरा गया और सभी व्यक्ति नष्ट हो गये।

"नहीं, सचमुच भयंकर है उस वर्णन से भी अधिक। लेकिन तो भी उपयोगी होगा।"—हरिकृष्ण बोले।

उनके मुख-मंडल पर भी वही आतंक-रेखाएँ अंकित थीं जो कप्तान से लेकर लड़कों तक के मुखों पर दीख पड़ती थीं। यह आश्चर्य की बात भी न थी। अपनी यात्रा के चौदहवें महीने में 'इन्द्रायुध' मोन्तेवाइदो से टेबुल-खाड़ी की ओर जब जा रहा था तो उस अक्षांश के लिए उस ऋतु में भयानक वायव्य ट्रेडविण्ड उग्र हो उठी। विस्तीर्ण अगाध नील समुद्र ने वायु और वृष्टि के सम्पर्क से, एक विकट युद्धक्षेत्र का रूप धारण कर लिया, जिसकी पर्वताकार लहरें बराबर हमारा पीछा करने लगीं। दूसरे दिन जहाँ धूप बिल्कुल नहीं थी, वहाँ बूँद की झड़ी और गुर्राती हवा ने भयंकरता और भी बढ़ा दी। तीसरे दिन यह लक्षण और भी भयंकर, अन्धकारपूर्ण तथा निराशामय हो गया, किन्तु इस सभी समय बूढ़ा "इन्द्रायुध" अपने मार्ग पर उसी मेहनत और बहादुरी से, यद्यपि लुढ़कते और डगमगाते, तथापि अपनी प्रतिपक्षी लहरों को चीरते हुए अग्रसर हो रहा था। पुराने और कुरूप होने पर भी, यह 'इन्द्रायुध' की मजबूती और दृढ़ता थी जिसके कारण पोतारोही भय नहीं खाते थे। उस समय मोमजा में बिना कोई आदमी पोततल पर नहीं आ सकता था और न कोई वहाँ आकर, बिना सिहरे, बिना नस-नस ढीली किये तथा बौछार खाये लौट पाता था। यह सब कुछ था, किन्तु नाविकों के लिए तब तक कोई चिन्ता न थी जब तक इन्द्रायुध की जीवन-अग्नि बनी थी। कप्तान प्रभुनाथ बड़े हिम्मत वाले आदमी थे। उनके ऐसे दृढ़ नाविक सप्तसिन्धुओं में बहुत कम मिलेंगे।

यह तीसरा दिन था जबकि वज्रपात हुआ—महान् समुद्र का धक्का, जिससे अपनी रक्षा के लिए पुराने पोत का महान् प्रयास, रगड़ खाते लोहों का चीत्कार, पुनः नाड़ी का गत्यवरोध एवं इंजन की सिसकाहट का अन्त। पतवारों के जकड़ जाते ही आग की शक्ति क्षीण हो गई। कुछ क्षण 'इन्द्रायुध' भीषण तरंगमालाओं पर निःसहाय लुढ़कता रहा, किन्तु अन्त में उसे युद्ध-पराङ्मुख हो सीधा तूफान के पीछे चलना पड़ा। यह भगदड़ दो दिन, दो रात रही, किन्तु सौभाग्य से कोई व्यक्ति नष्ट नहीं हुआ।

तूफान खतम हो गया। सूर्य अपने पीले और लज्जित से मुख को बादलों के पीछे से दिखला रहा था। इस बीच इंजीनियर चुपचाप नहीं बैठे थे। वह बराबर इंजन को ठीक करने में लगे थे। उन्होंने कुछ भाग सुधार भी लिया था। इंजन अब धीरे-धीरे चलने लगा। पतवार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फिर पानी हटाने लगे। यद्यपि पहली जैसी शक्ति नहीं थी, तथापि एक बार फिर वृद्ध "इन्द्रायुध" ने पुनरुज्जीवित हो अपने मुख को पूर्व की ओर फेरा। माँगे से पूँछ तक की सारी शक्ति लगाकर, अब वह घण्टे में चार मील चलने योग्य हो सका था। उस समय आफिसरों ने कर्तव्य-निर्णय किया। समीपतम आबाद-स्थल त्रिस्त्वन्-द-अकुन् था। किन्तु प्रथम तो ढाई सौ मील की यात्रा, यदि "इन्द्रायुध" ने वह किसी प्रकार झेल भी ली, तो भी वहाँ कोई वन्दर नहीं था। मधुच्छत्र यद्यपि आबाद नहीं था एवं मार्ग से हटकर भी था, तथापि वह सौ मील समीप था तथा वहाँ एक सुरक्षित वन्दर था। अतः जहाज दक्षिण की ओर चलाया गया। अब हम अपनी अस्थायी मंजिल के पास पहुँच रहे थे।

धीरे-धीरे खिसकते हुए हमने दक्षिणी किनारे को देखा। चारों ओर नंगी चट्टानों की विशाल दीवार और फेनिल अरार था, किन्तु जब हम अग्निकोण की ओर हुए तो चट्टानों की छाया में अपेक्षाकृत शान्तिपूर्ण पथ पर थे। अभी दूर ही 'इन्द्रायुध' ठहर गया।

एक नाव डाली गई और प्रथम अफसर छै आदमियों के साथ पता लगाने को रवाना हुए। यद्यपि तट साफ था, तथापि कप्तान प्रभुनाथ वह आदमी नहीं थे कि बिना जाने अनावश्यक जोखिम सिर पर लेने के लिये तैयार होते—जहाँ इतना समय व्यय हुआ, वहाँ एक घण्टा और सही, स्थान का ठीक-ठीक पता तो लग जायगा।

ऊपरी छत से हम लोग नाव का अग्रसर होना देख रहे थे। मेरा सहाध्यायी उम्मीदवार विक्रम अपनी सम्मति वहीं खड़ा-खड़ा दे रहा था—"कैसा बुखार लाने वाला दृश्य है। कभी ऐसा माधव! तुमने और देखा? मर्जी है, इसे मधुच्छत्र कहो। किन्तु है कहीं यहाँ मिठास? वाह! मेरी राय में इसे एक नया नाम देना चाहिए। तुम क्या कहते हो? "सर्वनाश द्वीप" या "भूतों का द्वीप" या "प्रेत-द्वीप"? इसके पता लगाने की आवश्यकता नहीं कि यहाँ भूत-प्रेत हैं कि नहीं, हमें तो ऐसे निठुर स्थान को कोई उपयुक्त नाम देना है।"

"तो, हमें तीनों ही प्रयुक्त करना चाहिये। किन्तु चाहे कुछ भी हो, मुझे तो एक बार किनारे उतरना है।"—मैंने कहा।

"हाँ! जरूर!! मैंने आते समय ही यह आशा नहीं की कि मुझे समुद्र बाहर जाने देगा।" विक्रम ने नापसन्द करते हुये ताने के साथ कहा।

"कुछ नहीं, एक बार वहाँ जाकर लौट आने से ही फिर समुद्र आनन्दमय लगने लगेगा।" —मैंने अनुत्साहपूर्ण उत्तर दिया।

"कुछ नहीं, मुझे मरुद्वीप की चाह थी, सो मिल गया; देखो कैसा है।"—उसने कहा।

"नहीं आप तो मूँगा-द्वीप चाहते थे, जहाँ सुनहली बालू, हरी घास और सुन्दर मधुर वन्य फल हों। क्यों? और यह भी कि जहाँ सदा ही नीला आकाश और सूर्य का प्रकाश हो।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हाँ ! और कुछ भोले-भाले जंगली जो मुझे अपना राजा बना लें।" —विक्रम ने रूखे स्वर से कहा।

इस पर हँसी न रुक सकी जिसे तिरछे देखकर विक्रम कहने लगा—

"हमारी किस्मत में ऐसा ही किनारा तो बदा है। कैसा भद्दा और भयानक ! यदि यहाँ तकदीर खुलने की बात भी हुई, तो उन्हीं की खुलेगी जिनके कप्तान सम्बन्धी हैं और जो तृतीय अफसर के बड़े भाई बनते हैं—इत्यादि। यदि यहाँ भाग्य खुलने की भी कोई बात हुई तो अपने लोग पहले देखे जायेंगे, दूसरों के पल्ले पड़ने की कहाँ आशा है ?"

विक्रम से पाँच मिनट भी बिना डाह-भाव प्रकाशित किये बात करना असम्भव था, किन्तु मैंने उससे झगड़ना छोड़ दिया था। एक दिन विक्रम ने मुझे क्रोधित किया था। फिर क्या था, दोनों की गुत्थम-गुत्था हुई, यद्यपि मैंने उसे खूब पटकी मारी और जमीन पर रगड़ा। विक्रम के ख्याल में भी मैंने अच्छी प्रकार ठीक कर दिया था। किन्तु जब मुझे आपबीती याद आई कि किस प्रकार मेरी नाक, हाथ, पैर, चमड़े छिल गये थे, अंग-अंग दर्द कर रहा था, तो मन ही मन मैंने फिर ऐसा करने से तोबा की। यही वजह थी कि मैं अब विक्रम की बातों का अधिक ख्याल नहीं करता था।

अब मैं वहाँ से दूसरी जगह हटकर नाव को देखने लगा। नाव अब चट्टानों की आड़ से किनारे के पास चली गई थी। मेरा ख्याल अब विक्रम की ओर गया। मैं भी सचमुच उसी की भाँति पहले स्वप्न देखा करता था—किस प्रकार अनेक द्वीप-द्वीपान्तरों की सैर होगी; किस प्रकार वहाँ के कष्टों और बलाओं को पारकर एक सुख का साम्राज्य विजय करेंगे, जिसमें सोना, चाँदी, अन्न, धन सभी चीजें बिना प्रयास हाथ में आयेंगी; किसी चीज की कमी नहीं रहेगी—इत्यादि। किन्तु अब यथार्थ बात मालूम होती है। समुद्र में कहीं लक्ष्मी फेंकी हुई नहीं है। वहाँ भी वैसी ही मेहनत की जरूरत है जितनी और जगह। मुझे यह सच्चाई तब मालूम न थी। इसलिये मैं बहिन कमला को निःसहाय अपने भाग्य पर छोड़ आया। मेरे लिये यह योग्य न था जिसने कष्ट और प्रेम से माता-पिता के अभाव को विस्मरण करा मुझे बड़ा किया; जिसने अनेक कष्ट सह मेरी उन्नति और भलाई का मार्ग साफ किया; अवश्य ही यह मेरी कापुरुषता थी, उसकी सहायता करने के समय मैं इधर भाग आया। किन्तु क्या करूँ ? यही स्वप्न तो इसके कारण हुए।

मेरा विचार-सूत्र यहीं भंग हो गया, क्योंकि इसी समय औरों ने प्रथम आफिसर के वहाँ से लौटने की बात कही। मैंने भी देखा। किनारे पर पहुँच उन्होंने उतरने की आवश्यकता शायद नहीं समझी। सब बात तो खुली थी, वहाँ विश्राम-घर और उतरने के घाट तो बने नहीं थे। आफिसर ने देखकर नाव मोड़ी। वह धीरे-धीरे जहाज की ओर आ रही थी। हाथ में हिलता हुआ सफेद रूमाल हमें सूचना दे रहा था कि सब ठीक है। कप्तान और अन्य अफसर पुल पर से भी उधर ही देख रहे थे।

यह जीवन का सन्देश था। थोड़ी देर में 'इन्द्रायुध' फिर धीरे-धीरे अग्रसर हुआ। वह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शनैः-शनैः सरकने लगा। तब तक नाव भी पास आ गई। प्रथम आफिसर अब सीढ़ी पर दौड़े। जब वह पोततल पर पहुँचे तो कप्तान ने पूछा—

"सब ठीक तो है, महाशय समरसिंह ?"

"हाँ जनाब। बिल्कुल ठीक है। पूरा अवकाश, और साफ रास्ता, और तिस पर भी पर्याप्त तराऊ पानी। सचमुच इससे अच्छा स्थान नहीं मिल सकता। इतना ही नहीं—"

"हाँ ?" कप्तान ने प्रश्न के तौर पर कहा, जिस पर समरसिंह मुस्कुराये—

"नहीं जनाब ! हमीं अकेले नहीं हैं। वहाँ खाड़ी में एक और भी पोत खड़ा है।"

सभी कानों और हृदयों ने बड़े ध्यान और आश्चर्य के साथ इसे सुना। सैकड़ों मील रास्ते से हटकर, दूसरा भी स्टीमर ! इस पर कितने ही सेकण्ड बीत गये जब कप्तान का मुँह खुला—

"कैसा स्टीमर है, कैसे यहाँ पहुँचा ?"

"यह एक छोटा-सा अमेरिकन स्टीमर है, महाशय ! न्यु-आर्लियन का। "मौड मूलर" उसका नाम है। स्टुअर्ट जेक्सन उसके कप्तान हैं। उसके मिल जाने से इतनी देर लौटने में हुई। जरा एक मिनट ठहरें, मैं सब बताये देता हूँ।"

वह अपने नौकारोहियों को आवश्यक हिदायत दे, फिर सीढ़ी से चढ़ पुल पर कप्तान के पास चले गये। इसके बाद कितने मिनट तक सब अफसर आपस में बातचीत करने में लग गये। उनकी बात धीरे-धीरे होती थी, इसलिये हम लोगों की जिज्ञासा और बढ़ गई।

———

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रेतीली खाड़ी में दो स्टीमर

"रेतीली खाड़ी में तंग प्रवेश-मार्ग की दाहिनी ओर, तट से प्राय: तीस गज की दूरी पर "इन्द्रायुध" अब विश्राम कर रहा था। उस छोटी खाड़ी में जिसकी लम्बाई कुल तीन सौ गज की होगी, वह बड़ा-सा मालूम होता था। किन्तु हजार फीट ऊँचे टीलों की छाया में वह यथार्थ में बहुत छोटा-सा था। उसकी दाहिनी ओर "मौड मूलर" खड़ा था।

वह एक अत्यन्त सुन्दर अगिनबोट था। आकार "इन्द्रायुध" से बहुत छोटा। उसकी स्वच्छता और सुन्दरता किसको नहीं दो घंटा सामुद्रिक सैर के लिए प्रलोभित करेगी! हमारे लंगर गिराने के आध घंटे के बाद ही उसके कप्तान अपने एक मित्र के साथ मिलने के लिए आये। उनकी मुलाकात के समय मैं अपने कप्तान के पास ही था, इसलिये मैं उन्हें भली प्रकार देख-भाल सका। कप्तान जेक्सन बड़े दुबले-पतले आदमी थे। उनके चेहरे और दृष्टि से उनका स्वभाव बहुत नर्म मालूम होता था। किन्तु यह खूब मालूम होता था कि उनकी स्वच्छ नीली आखें सम्मुखागत प्रत्येक वस्तु को भली प्रकार भाँप लेने वाली हैं जिनके कितने ही अंश दूसरे लोगों से छूट जा सकते हैं। उनके साथी बड़े डीलडौल के आदमी थे। किन्तु यह देखने मात्र से कहा जा सकता था कि वे नाविक नहीं हैं। वे वृद्ध पुरुष हैं—करीब 60 वर्ष के। वे मामूली सूट और एक मोटी काली ओवरकोट पहने थे। मूँछ-दाढ़ी एकदम मुड़ी हुई और बाल सफेद थे। चेहरा भरा हुआ, सुनहली कमानी के चश्मे के अन्दर तीक्ष्ण नेत्र विशेष चित्ताकर्षक थे। यद्यपि देखने में वे बहुत सीधे-सादे मालूम होते थे, तथापि देखने मात्र ही से मुझे उस व्यक्ति में साहस प्रतीत हुआ।

कप्तान शिष्टाचार से पूर्ण अभिज्ञ थे। उन्होंने आते ही हमारे कप्तान से कहा—

"महाशय! ऐसी अवस्था में, मैं यह तो निश्चित तौर पर नहीं कह सकता कि मैं आपका दर्शन कर बहुत प्रसन्न हुआ। किन्तु मैं अवश्य कहूँगा कि आपकी सेवा और सहायता के लिये मैं बिल्कुल तैयार हूँ।"

दोनों कप्तानों ने हाथ मिलाये, तब कप्तान प्रभुनाथ ने कहा—"मैं नहीं समझता कि हमें सहायता की आवश्यकता होगी। हमारे पास सभी आवश्यक वस्तुएँ हैं और मेरे प्रधान इंजीनियर कहते हैं कि बारह घंटे में हमारा जहाज बिल्कुल ठीक हो जायगा। किन्तु मैं आपसे, कप्तान जेक्सन, निवेदन किये विना न रहूँगा, यदि मुझे कोई आवश्यकता होगी। सचमुच ऐसे वीरान स्थान में सुहृदयों का मिलना बड़े सौभाग्य की बात है। मेरे प्रथम अफसर ने मुझसे कहा है कि आप यहाँ कुछ समय से ठहरे हुए हैं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कप्तान जेक्सन—"करीब एक मास से, और आशा है, एक मास और अभी रहना होगा। हाँ, यहाँ 'रायो' विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डेलिंग से मैं आपका परिचय कराना चाहता हूँ। वे हमारी पार्टी के मुखिया हैं।"

प्रोफेसर डेलिंग ने झुककर हाथ मिलाया। वास्तव में वह कम बोलने वाले आदमियों में से हैं। कप्तान जेक्सन ने अपनी बात को जारी रखते हुए कहा—

"हम लोग एक भूगर्भीय नाप में निकले हैं। विश्वविद्यालय ने प्रोफेसर महाशय को छै मास का अवसर दिया है कि वे दक्षिणी अटलांटिक के कुछ टापुओं को भूगर्भशास्त्रीय अन्वेषण की दृष्टि से देखें और "मौड मूलर" एवं मुझे भी साथ में कर दिया है। साथ ही ब्राजील एवं अर्जेण्टाइन प्रजातंत्रों से इस खोज का आज्ञा-पत्र भी दे दिया है। कप्तान प्रभुनाथ ! आप जानते हैं कुछ भूगर्भ-शास्त्र के विषय में ?"

हमारे कप्तान ने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया—

"कप्तान जेक्सन ! मैं भी वैसा ही कोरा हूँ, किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि विषय बड़ा रोचक है, अवसर आने पर प्रोफेसर से बात करेंगे।"

"और मैं महाशय ! इसके कहने की आवश्यकता नहीं समझता कि न्युआर्लियनवासी स्टुअर्ट जेक्सन, विज्ञान के पवित्र कार्य में नियोजित करके कृतार्थ कर दिया गया है। मैं उम्मीद करता हूँ कि थोड़े ही दिनों में इन टापुओं के विषय में हमें एक बड़ा ग्रन्थ प्राप्त होगा जिसमें मैं और मेरा पोत भी होगा। है न प्रोफेसर साहब ?"

यह प्रथम बार था कि प्रोफेसर का मुख खुला। वे सूखी मुस्कुराहट के साथ बोले—

"मैंने इसके लिये, कप्तान जेक्सन, वचन दिया है, उसका पालन अवश्य होगा। मुझसे जहाँ तक हो सकेगा, आपको अमर करने का प्रयत्न करूँगा। सचमुच आप ऐसे पुरस्कार के भाजन हैं !"

सब लोग हँसने लगे जिसमें कप्तान जेक्सन की हँसी खुली हुई थी। लोग सीधे हमारे कप्तान के वासा में गये। वहाँ इस मुलाकात के उपलक्ष्य में जलपान तैयार रखा था। दस मिनट के बाद विदा होते समय कप्तान जेक्सन ने कहा—

"मैं आपके सुधारने के काम में यद्यपि बाधक नहीं होना चाहता, कप्तान प्रभुनाथ ! तथापि मैं अपने को बड़ा सम्मानित समझूँगा, यदि आप या आपके अफसरों में से कोई विदा होने से पूर्व 'मौड मूलर' पर तशरीफ ले जायेंगे।"

इस निमंत्रण के साथ, जिसको हमारे कप्तान ने भी बड़े उत्साहपूर्वक स्वीकार किया, दोनों सज्जन सीढ़ी से नीचे उतर डोंगी पर सवार हुए और अपने जहाज को लौटे।

सचमुच दोनों पुरुषों ने बड़ी सम्वेदना और शुभेच्छा प्रकाशित की जो ऐसे अवसर के लिये अत्यन्त उपयुक्त थी। यह वास्तविक मनुष्यता अथवा मानव-बन्धुता का असाधारण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आकर्षण था जिसने अपने आपद्ग्रस्त भाई की दिलजोई पर एक-दूसरे को बाध्य किया। उस समय मुझे यह उम्मीद न थी कि उससे भिन्न रूप में मैं फिर कभी उन दोनों महानुभावों को देख पाऊँगा।

उनके विदा होने से पूर्व ही मरम्मत का काम आरम्भ हो गया था। इंजीनियर महाशय ने 12 घंटे की ही देरी बतलायी थी, किन्तु इंजन के अतिरिक्त वहाँ और भी कई बातें सुधारनी थीं। बहुत जल्द सारा जहाज आरों और हथौड़ों की आवाज से गूँज उठा। जब इधर यह काम हो रहा था, उसी समय जल की अपेक्षा समझ कप्तान ने मुझे और विक्रम को तृतीय आफिसर के साथ पानी के जोगाड़ में लगा दिया। "नाविक" में लिखे अनुसार ही जलकुंड टीले के सामने नीचे था। उस तंग तट-प्रान्त की बालू साधारण समुद्र-तट की बालू जैसी न था। बारीक धूल थी जिसमें काले-काले तरखंड मिले हुए थे। पीछे पहाड़ी एकदम सीधी 50 फीट ऊँची दीवार-सी खड़ी थी जिसके ऊपर जरा पीछे हटकर दूसरी दीवार थी। इसी क्रम से 1000 फीट ऊँची। वह पहाड़ी मानो एक महाकाय आरे की भाँति खड़ी थी जिस पर ऐसी नीरवता छाई थी कि किसी सामुद्रिक पक्षी की धीमी चहचहाहट तक सुन नहीं पड़ती थी।

हरिकृष्ण ने कहा—"इस भाग के दूसरे सारे ही टापू सामुद्रिक पक्षियों से पूर्ण हैं, किन्तु यहाँ देखो, एक भी पर का पता नहीं। कैसा जीवन-शून्य श्मशान-सदृश यह स्थान है?

"यहाँ उन्हें कुछ खाने को नहीं मिल सकता, इसीलिये तो", विक्रम ने मुँह बना कर कहा।

"हाँ! सचमुच देखो न, लेकिन पानी बहुत अच्छा है।"—तृतीय अफसर ने कहा।

जल बहुत स्वादिष्ट और स्वच्छ था। हम लोगों का काम दोपहर से पूर्व ही समाप्त हो गया था। हमारे काम के समाप्त होते ही विक्रम ने एक प्रस्ताव पेश किया—

"क्यों माधव! एक बार जरा किनारे की सैर कैसी रहेगी? इस पहाड़ी पर चढ़कर जरा आसपास देखना चाहिये। जहाज में एक जगह पड़े-पड़े दिल ऊब गया है। चलो न, जरा टहल आयें।"

मैं—"हाँ, ठीक तो है। मेरी भी तबियत यही करती है। जाओ न फिर समरसिंह से कहो।"

विक्रम दाँत पीसने लगा। उसके लिये प्रथम अफसर जहर-सा था। उसने बात मार के कहा—

"तुम जाओ, बड़े भाई से कहो। कहोगे तो मैं तुम्हें एक चीज दूँगा कभी।"

मैंने "एक चीज" वहीं विक्रम को भुगता दी, लेकिन हरिकृष्ण से जाकर इसके लिये कहा। उनकी इच्छा भी जरा घूमने की थी।

उन्होंने कहा—"मैं भी टहलना पसन्द करता हूँ। मैं देखता हूँ कि इसके लिये हमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवकाश है। लेकिन तुम दोनों बदमाशों को एकसाथ जाने देने के लिये मैं तय्यार नहीं हूँ।"

कप्तान ने भी इसका कोई विरोध नहीं किया, किन्तु सचेत कर दिया—

"खबरदार, मधुच्छत्र इसका नाम व्यर्थ नहीं है। गड़हे-खड्डों को बचाकर चलना। यह भी ख्याल रखना कि हम लोग बहुत समय बर्बाद कर चुके हैं। यदि तुम लोग रास्ता भूल गये तो हम प्रतीक्षा नहीं करेंगे। सूर्योदय होते ही लंगर यहाँ से उठा दिया जायगा, मगर सभी कुछ ठीक-ठाक रहा तो !"

हम लोगों ने रसोईघर में जाकर कुछ खाना-दाना किया और वहाँ से निकल पड़े। जब मैं तट पर पहुँचा तो मुझे यह विद्यालय के आधे दिन की छुट्टी की भाँति आनंद-दायक मालूम हुआ। मुझे इस समय अपना सहाध्यायी, दोस्त मोहनस्वरूप याद आने लगा, मानो नालन्दा विद्यालय से आधे दिन की छुट्टी हो जाने से आज राजगृह पर्वत की सैर तय पाई है। मुझे अब वहीं का दृश्य सम्मुखीन होता मालूम होने लगा। आगे-आगे मैं चल रहा हूँ। पीछे मित्र मोहन आ रहा है। मैं इस ध्यान में इतना मग्न हो गया कि एक बार मैंने पीछे फिरकर देखा। किन्तु वहाँ मोहन न था। विक्रम ने पूछा—

"क्यों, क्या बात है ? क्या ख्याल आ गया ?"

मैं—"कुछ ख्याल कर रहा था।"

विक्रम—"क्या ?"

मैं—"एक पुराना, सहाध्यायी मित्र याद हो आया।"

वि०—"हाँ, तुम मेरे बदले उसको यहाँ चाहते थे !"

मैं—"क्यों नहीं ?"

वि०—"तो क्या करोगे, यहाँ तो मैं ही हूँ, वह तो है नहीं।"

हरिकृष्ण की इच्छा एक-एक रौंदा करके ऊपर चोटी पर चढ़ने की थी कि वहाँ से फिर चारों ओर का दृश्य देखा जाय। किन्तु थोड़ी दूर चलने पर हमें एक रास्ता-सा मालूम हुआ। उससे हम खाड़ी की पश्चिम की ओर पर पहिले रौंदे के ऊपर पहुँच गये। वहाँ से फिर उसी तरह दूसरी पैंडी पर पहुँचने का निशान बना हुआ था। इस तरह चुपचाप चलते हुए हम 6 सौ फीट पर पहुँचे। यहाँ कुछ विश्राम लेने की राय हुई। नीचे छोटी-सी बावली में "इन्द्रायुध" और "मौड मूलर" डोंगी की भाँति दीख पड़ते थे। उनके बौने आदमी इधर-उधर अपने-अपने काम में व्यस्त थे। हथौड़ों की 'ठुक-ठाक' बराबर सुनाई देती थी। हमारे ऊपर अब भी ऊँची दीवार थी। दीवार बहुत सख्त और लोहे की तरह काली थी। मैंने ध्यान से देखा तो जान पड़ा, हमारी पगडंडी पर के टुकड़े न पत्थर थे, न बालू।

मैंने कहा—"कितना सूनसान है ? यहाँ कभी सहस्रों सामुद्रिक पक्षी रहे होंगे, किन्तु आज एक भी नहीं है।"

विक्रम—"क्यों, उन्हें यह भी जगह बुखार की तरह लगने लगा, जैसे हमें ? यह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखो, नया रास्ता फूटा है। इस पर चलें ?"

अब हम लोग आठ सौ फीट ऊपर थे। यहाँ से अटलांटिक की अनन्त जलराशि आकाश से मिली मालूम पड़ती थी। यहाँ पहिले-पहिल दीवार का सिलसिला टूटा हुआ मालूम पड़ा। यह एक प्रवेश-मार्ग की भाँति मालूम होता था जो नीचे से बिल्कुल ही दिखलाई नहीं पड़ता था। जितना ही यह अन्दर की ओर जाता था, उतना ही विस्तार भी अधिक होता जाता था।

हरिकृष्ण ने कहा—"यह रास्ता-सा मालूम होता है। यद्यपि यह खड़ा नहीं है, तथापि जरूर यह कहीं शिखर पर जा निकला होगा। देखें क्या है। कितना अच्छा हुआ होता, यदि चलने से पूर्व प्रोफेसर महाशय से यहाँ के बारे में पूछताछ कर ली होती। वे जरूर इधर घूमे होंगे। अच्छा, हम अपने नोट चलकर उनसे मिलावेंगे। देखेंगे, हमने कोई नई चीज देखी कि नहीं !"

हम लोग क्रमशः आगे बढ़ने लगे। उस रास्ते को छोड़ कर दूसरा कोई रास्ता आगे चढ़ने का नहीं दिखाई पड़ता था। दीवारें सीधी खड़ी थीं। रास्ता यद्यपि घूमता हुआ जा रहा था; तथापि उसका मुँह ऊपर की ओर ही था। सामने प्रायः मील भर पर हमें एक ऊँची चोटी-सी दिखाई पड़ती थी। मालूम होता था, उससे ऊँची और कोई चोटी न होगी। हमने अटकल लगा ली कि जब वहाँ पहुँच जायेंगे, तो लौटने भर के ही लिये समय हमारे पास रहेगा।

यह वही रास्ता था जिसमें आफत सिर पर पड़ी। हम लोगों ने कप्तान के आदेश के अनुसार गड़हों और खड्डों की ओर पूरा ध्यान दिया था। अब हमारी दाहिनी ओर एक-ब-एक उतराई आ गई थी। हम लोगों ने उसकी परीक्षा करना आरम्भ किया। वास्तव में अब हम एक बड़े गड़हे के मुँह पर खड़े थे। वह गड़हा गोल न होकर अंडे की शक्ल का था। ऊपर कहीं कुछ छोटी-छोटी झाड़ियाँ ढाके हुए थीं। जिस वक्त हमने इसे आँख भर देखा, हमारे होश गुम हो गए। यह था एक ऊँची पहाड़ी के पेट में भयानक कगार, जिसके मुँह पर मृत्यु की नीरवता छाई हुई थी। क्या कभी कोई किस्मत का मारा इसमें गिरा होगा ?

"अरे राम !" विक्रम ने फुसफुसाते हुए कहा—"मैंने जिन्दगी में ऐसा भयानक गड़हा कभी नहीं देखा। मालूम होता है, यह सीधा पृथ्वी के मध्य तक चला गया है।"

मैं—"हाँ ! जहाँ पृथ्वी की जठरानल अहर्निशि धू-धू करती रहती है।"

विक्रम—"ऐसा ! नहीं, मैं समझता हूँ, यहाँ नीचे पानी है। देखो, पता लगा जाता है।"

उसने एक बड़े पत्थर को उठाकर नीचे फेंका। हम लोग साँस रोककर थोड़ी देर खड़े रहे। अन्त में एक धीमी-सी आवाज सुनाई दी जिसमें पानी में उछलने की-सी ध्वनि थी।

विक्रम—"यही पानी है जिसने आग को बुझा दिया है। ओह !" वह यह कहकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरी ओर घूरने लगा। मैंने उससे जान बचाने के लिये और नजदीक से झुककर नीचे देखना चाहा। इसके बाद क्या हुआ, मुझे पूरा याद नहीं। और जो आदमी है, उसका भी ख्याल करते ही हृदय काँपने लगेगा।

मालूम होता है, मैंने अपने कदम बढ़ाते वक्त फासिले का ठीक अन्दाज नहीं किया। मैंने समझा था, गढ़ा कड़े पत्थरों में खुदा हुआ है। लेकिन मुझे यह नहीं मालूम था कि इसकी वारी पर झाँई है। मुझे पैर रक्खे एक सेकण्ड भी अभी नहीं हुआ था। अभी मैं अपने खतरे का अनुभव भी न कर सका था कि मेरे पैर के नीचे की मिट्टी खिसक पड़ी। एक चीत्कार के साथ मेरे हाथ गिर गये और मैं नीचे की ओर चल पड़ा। मेरी यह अवस्था देख, हरिकृष्ण मुझे पकड़ने दौड़े, किन्तु वह अपने आपको सँभाल न सके। मैंने अपनी बगल में उन्हें भी नीचे की ओर चलते देखा। विक्रम के विषय में इससे अधिक नहीं जानता कि हमारे गिरते ही उसकी आँखें फटी-फटी-सी रह गईं। वह चिल्लाकर पीछे की ओर भागा; और हमारे आँखों से ओझल हो गया।

———

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महागर्त का तल

उस दिन के बाद भी मैं अनेक आपत्तियों में फँसा, किन्तु उस दिन जिस प्रकार का आतंक मेर हृदय पर छाया, वैसा कभी नहीं देखने में आया। आज भी जब कभी स्वप्न में भी वैसा दृश्य सम्मुख आता है तो जागकर भागने की चेष्टा करने लगता हूँ। मेरी नसें थर्राने लगती हैं और शरीर पसीने-पसीने हो जाता है। मुझे वह महागर्त भयंकर स्वप्न-सा प्रतीत होता है।

मैं नीचे को गिर रहा था। मेरे कानों में अब भी विक्रम की चिल्लाहट गूंज रही थी। मेरे पैरों के नीचे अब भी यह टुकड़ा था। एक बार उस भयंकर गर्त और अपने परिणाम का स्मरण आते ही मेरी आँखें अन्धी हो गईं। गात्र शून्य हो गये। मन निश्चेष्ट हो गया। मैं उसी संज्ञाहीन दशा में गिरता जा रहा था। मुझे स्वप्न की क्षीण स्मृति की भाँति मालूम होता है कि कोई घास-सी मेरे हाथ पड़ी थी। मैंने उसे पकड़ लिया। कुछ क्षण के लिये उसने भी मुझे रोक रक्खा। किन्तु अन्त में उसे भी मेरे साथ ही रसातल की ओर जाना पड़ा। इस प्रकार एक, दो, तीन स्थान पर वैसी ही घासें मिलीं। मुझे अब याद आता है कि यह वही घासें थीं जिन्होंने मार्ग में मेरी आत्मा को शरीर से पृथक् न होने दिया। यद्यपि हम सैकड़ों हाथ नीचे गिरे, तथापि एकबारगी नहीं, बीच में तीन-चार बार थम-थमकर। मेरी ही तरह हरिकृष्ण भी रुकते हुए नीचे पहुँचे। प्रकाश का अभाव तो बीच ही से आरम्भ हो गया था, किन्तु हम जितना ही नीचे जाते थे, उतनी ही उसकी गहनता बढ़ती जाती थी। उस अतल जल ने एक बार तो मुझे अपने उदर में छिपा लिया; किन्तु जब ऊपर आया तो देखता हूँ कि बिल्कुल अँधेरा है। हाथ-पाँव मार कर जब मैंने एक ओर से दूसरी ओर अपना मुँह फेरा, तो मुझे एक छेद से प्रकाश दिखाई देने लगा। यह छेद अंडाकार था। उसी समय पीछे से एक आवाज सुनाई दी—

"माधव ! ठीक हो न ?"

आह ! वह आनन्द के आनन्द, मेरे सन्ताप को बहुत कुछ कम कर दिया। मैं उसके उत्तर में चिल्ला उठा और थोड़ी देर में हरिकृष्ण, यद्यपि स्तब्ध, तथापि वास्तव में मुस्तैद, मेरी बगल में थे।

हरि—"चोट तो नहीं लगी ?"
मैं—"न-नहीं" ! "आपको ?"
हरि—"बहुत नहीं—"

अब हमने एक बार स्वतंत्रता से साँस ली। हम लोग थोड़ी देर चुप रहे। किन्तु हरिकृष्ण कुछ सोच रहे थे। मैंने उन पर सोचना छोड़ दिया, क्योंकि मैं समझता था कि वे दोनों के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिये सोच रहे हैं। मुझे उस समय उनकी विचार-शक्ति पर विश्वास हो गया और मुझे आनन्द है कि पिछले अनुभवों ने उसे और दृढ़ बना दिया। यद्यपि अवस्था में हरि 23 वर्ष के अर्थात् मुझसे 6 वर्ष ही अधिक थे, तथापि इतने दिनों में उन्होंने बहुत ऊँचा-नीचा देखा था। तजर्बा उन्हें कितनी ही लाभदायक शिक्षाएँ दे दी थीं, जो अब शुरू हुई थीं।

अन्त में उन्होंने कहा—"हमें किनारे लगना चाहिये। मैं आगे-आगे चलता हूँ, किन्तु तुम पास ही रहना। यह अच्छी बात है जो पानी बहुत ठण्डा नहीं है, किन्तु तो भी यह अधिक देर ठहरने के योग्य नहीं है। इसकी ठण्डक हमारे शरीर को शून्य बना देगी और फिर हमारे हाथ-पैर हमारे काबू में न रहेंगे। माधव! आओ चलें।"

हमारे उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही वे चल पड़े। हम लोग नाविक थे, अतः हमारे लिये तैरना तो कोई बड़ी बात न थी। किन्तु चित्त उस समय फिर चकित और उदास होने लगा जब पचास हाथ मारने पर हमें गर्त का दूसरा छोर न मिला और वह प्रकाश-छिद्र भी आँख से ओझल हो गया। हमें यह आशा न थी कि ऊपर की अपेक्षा वह गड़हा इतना अन्दर से भारी होगा।

यदि हमारे साथ हरिकृष्ण न होते तो मुझे नहीं उम्मीद है कि मैं कुछ कर सकता। किन्तु वे उस अन्धकार में बराबर आगे ही बढ़ते जाते थे। चूँकि मुझे उनके पास रहना था, मैं उस सिहरा देने वाले जल, उस भयानक अन्धकार में बराबर आगे ही चलने का प्रयत्न कर रहा था। आतंक इतना था कि मैंने उस पर न विचार कर अपने मस्तिष्क को रिक्त रखना ही उचित समझा। कितनी देर तक वह अवस्था रही? यद्यपि हरिकृष्ण ने 10 ही मिनट बतलाया, तथापि मेरे लिये तो वह हजारों मिनट की भाँति मालूम हुई। एक बार मेरे देह से कोई चीज छू गई—जो शायद मेरे ही द्वारा उखाड़ी घास होगी—तो मेरा होश जाता रहा। मैं फिर संज्ञाहीन-सा होने लगा। इतने ही में मेरे कानों में आवाज आई—

"पीछे-पीछे चले आओ, माधव! हम लोग ठीक रास्ते पर हैं।" उसी समय मेरे मुख पर शीतल वायु-तरंग का हल्का स्पर्श अनुभव हुआ। यह वही हवा थी, जो उसी छिद्र से उस अन्धतामिस्र जल-तल पर आ रही थी। उसने मुझे बड़ा उत्साह दिया। मुझे विश्वास होने लगा कि जरूर इधर कोई मार्ग है, स्थल, प्रकाश और जीवन का।

हरि—"बराबर सीधे। मेरा हाथ भूमि में लगा।"

एक ही क्षण के बाद मैंने भी भू-स्पर्श किया। थोड़ी ही देर में जल से बाहर ही हम सूखी भूमि पर चले आये। हरिकृष्ण ने मेरे हाथ, मुख और हृदय को स्पर्श किया। वह भी मेरी ही भाँति हाँफ रहे थे। उन्होंने कहा—"कोटिशः धन्यवाद।"

"इसके बाद थोड़ी देर के लिये हम वहाँ बैठ गये। अपने कपड़े और पालों से पानी को पोंछा। तब हरिकृष्ण ने कुछ देर सोचने के बाद कहा—

"यह वायुवीचि हमारे लिये मार्गप्रदर्शक थी। यदि यह रुक गई तो समझ लेना हमारा भी अन्त है। माधव! अब चलें न?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महागर्त का तल

उस दिन के बाद भी मैं अनेक आपत्तियों में फँसा, किन्तु उस दिन जिस प्रकार का आतंक मेर हृदय पर छाया, वैसा कभी नहीं देखने में आया। आज भी जब कभी स्वप्न में भी वैसा दृश्य सम्मुख आता है तो जागकर भागने की चेष्टा करने लगता हूँ। मेरी नसें थर्राने लगती हैं और शरीर पसीने-पसीने हो जाता है। मुझे वह महागर्त भयंकर स्वप्न-सा प्रतीत होता है।

मैं नीचे को गिर रहा था। मेरे कानों में अब भी विक्रम की चिल्लाहट गूँज रही थी। मेरे पैरों के नीचे अब भी यह टुकड़ा था। एक बार उस भयंकर गर्त और अपने परिणाम का स्मरण आते ही मेरी आँखें अन्धी हो गईं। गात्र शून्य हो गये। मन निश्चेष्ट हो गया। मैं उसी संज्ञाहीन दशा में गिरता जा रहा था। मुझे स्वप्न की क्षीण स्मृति की भाँति मालूम होता है कि कोई घास-सी मेरे हाथ पड़ी थी। मैंने उसे पकड़ लिया। कुछ क्षण के लिये उसने भी मुझे रोक रक्खा। किन्तु अन्त में उसे भी मेरे साथ ही रसातल की ओर जाना पड़ा। इस प्रकार एक, दो, तीन स्थान पर वैसी ही घासें मिलीं। मुझे अब याद आता है कि यह वही घासें थीं जिन्होंने मार्ग में मेरी आत्मा को शरीर से पृथक् न होने दिया। यद्यपि हम सैकड़ों हाथ नीचे गिरे, तथापि एकबारगी नहीं, बीच में तीन-चार बार थम-थमकर। मेरी ही तरह हरिकृष्ण भी रुकते हुए नीचे पहुँचे। प्रकाश का अभाव तो बीच ही से आरम्भ हो गया था, किन्तु हम जितना ही नीचे जाते थे, उतनी ही उसकी गहनता बढ़ती जाती थी। उस अतल जल ने एक बार तो मुझे अपने उदर में छिपा लिया; किन्तु जब ऊपर आया तो देखता हूँ कि बिल्कुल अँधेरा है। हाथ-पाँव मार कर जब मैंने एक ओर से दूसरी ओर अपना मुँह फेरा, तो मुझे एक छेद से प्रकाश दिखाई देने लगा। यह छेद अंडाकार था। उसी समय पीछे से एक आवाज सुनाई दी—

"माधव ! ठीक हो न ?"

आह ! वह आनन्द के आनन्द, मेरे सन्ताप को बहुत कुछ कम कर दिया। मैं उसके उत्तर में चिल्ला उठा और थोड़ी देर में हरिकृष्ण, यद्यपि स्तब्ध, तथापि वास्तव में मुस्तैद, मेरी बगल में थे।

हरि—"चोट तो नहीं लगी ?"
मैं—"न-नहीं" ! "आपको ?"
हरि—"बहुत नहीं—"

अब हमने एक बार स्वतंत्रता से साँस ली। हम लोग थोड़ी देर चुप रहे। किन्तु हरिकृष्ण कुछ सोच रहे थे। मैंने उन पर सोचना छोड़ दिया, क्योंकि मैं समझता था कि वे दोनों के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिये सोच रहे हैं। मुझे उस समय उनकी विचार-शक्ति पर विश्वास हो गया और मुझे आनन्द है कि पिछले अनुभवों ने उसे और दृढ़ बना दिया। यद्यपि अवस्था में हरि 23 वर्ष के अर्थात् मुझसे 6 वर्ष ही अधिक थे, तथापि इतने दिनों में उन्होंने बहुत ऊँचा-नीचा देखा था। तजर्बा उन्हें कितनी ही लाभदायक शिक्षाएँ दे दी थीं, जो अब शुरू हुई थीं।

अन्त में उन्होंने कहा—"हमें किनारे लगना चाहिये। मैं आगे-आगे चलता हूँ, किन्तु तुम पास ही रहना। यह अच्छी बात है जो पानी बहुत ठण्डा नहीं है, किन्तु तो भी यह अधिक देर ठहरने के योग्य नहीं है। इसकी ठण्डक हमारे शरीर को शून्य बना देगी और फिर हमारे हाथ-पैर हमारे काबू में न रहेंगे। माधव! आओ चलें।"

हमारे उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही वे चल पड़े। हम लोग नाविक थे, अतः हमारे लिये तैरना तो कोई बड़ी बात न थी। किन्तु चित्त उस समय फिर चकित और उदास होने लगा जब पचास हाथ मारने पर हमें गर्त का दूसरा छोर न मिला और वह प्रकाश-छिद्र भी आँख से ओझल हो गया। हमें यह आशा न थी कि ऊपर की अपेक्षा वह गड़हा इतना अन्दर से भारी होगा।

यदि हमारे साथ हरिकृष्ण न होते तो मुझे नहीं उम्मीद है कि मैं कुछ कर सकता। किन्तु वे उस अन्धकार में बराबर आगे ही बढ़ते जाते थे। चूँकि मुझे उनके पास रहना था, मैं उस सिहरा देने वाले जल, उस भयानक अन्धकार में बराबर आगे ही चलने का प्रयत्न कर रहा था। आतंक इतना था कि मैंने उस पर न विचार कर अपने मस्तिष्क को रिक्त रखना ही उचित समझा। कितनी देर तक वह अवस्था रही? यद्यपि हरिकृष्ण ने 10 ही मिनट बतलाया, तथापि मेरे लिये तो वह हजारों मिनट की भाँति मालूम हुई। एक बार मेरे देह से कोई चीज छू गई—जो शायद मेरे ही द्वारा उखाड़ी घास होगी—तो मेरा होश जाता रहा। मैं फिर संज्ञाहीन-सा होने लगा। इतने ही में मेरे कानों में आवाज आई—

"पीछे-पीछे चले आओ, माधव! हम लोग ठीक रास्ते पर हैं।" उसी समय मेरे मुख पर शीतल वायु-तरंग का हल्का स्पर्श अनुभव हुआ। यह वही हवा थी, जो उसी छिद्र से उस अन्धतामिस्र जल-तल पर आ रही थी। उसने मुझे बड़ा उत्साह दिया। मुझे विश्वास होने लगा कि जरूर इधर कोई मार्ग है, स्थल, प्रकाश और जीवन का।

हरि—"बराबर सीधे। मेरा हाथ भूमि में लगा।"

एक ही क्षण के बाद मैंने भी भू-स्पर्श किया। थोड़ी ही देर में जल से बाहर ही हम सूखी भूमि पर चले आये। हरिकृष्ण ने मेरे हाथ, मुख और हृदय को स्पर्श किया। वह भी मेरी ही भाँति हाँफ रहे थे। उन्होंने कहा—"कोटिशः धन्यवाद।"

"इसके बाद थोड़ी देर के लिये हम वहाँ बैठ गये। अपने कपड़े और पालों से पानी को पोंछा। तब हरिकृष्ण ने कुछ देर सोचने के बाद कहा—

"यह वायुवीचि हमारे लिये मार्गप्रदर्शक थी। यदि यह रुक गई तो समझ लेना हमारा भी अन्त है। माधव! अब चलें न?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैं—"मैं आपके पीछे हूँ। खड़े-खड़े या रेंगते?"

हरि—"रेंगते ही, अभी देखना है कि मार्ग कैसा सुरक्षित है। मेरे पीछे-पीछे ही चले आना।"

अब हमें कुछ पता लगने लगा कि हम एक प्रकार की गुफा के अन्दर हैं। दाहिने और बायें पथरीली दीवार हैं। ऊपर ऊबड़-खाबड़ छत है। अब इस अन्धकारपूर्ण बन्दीखाने से मुक्त होने के लिये हम वायु का अनुसरण करने लगे। हम लोग बड़ी सावधानी से चल रहे थे, ऐसा न हो कि कहीं दूसरा पाताल-कुण्ड मिल पड़े। लेकिन मिलता भी तो उस समय हम क्या करते; जबकि त्वचा, इन्द्रिय और वायु-स्पर्श के अतिरिक्त हमारा कोई पथ-प्रदर्शक नहीं था। अब आगे भूमि भी कुछ ऊँची आ गई थी, जितना ही हम आगे बढ़ते थे, वायु की गति भी अधिक मालूम होती जाती थी। अवश्य आगे कोई प्रवेश-मार्ग होगा। मार्ग विषम था। मालूम होता है, वर्षा के दिनों में उधर ही किसी रास्ते से गर्त का अधिक जल समुद्र की ओर जाता होगा। अच्छा है, जो वर्षा का मास नहीं, अन्यथा उस एक वायु-छिद्र के भी मुँद जाने से हमारे लिए सर्वथा निराशा होती। कुछ भी हो, हमें जब समुद्र की आकांक्षा थी। हमारे साथी अब भी समुद्र में होंगे। 'इन्द्रायुध' तैयार हो गया होगा। अभी भी शायद हम जल्द किनारे पर तथा 'इन्द्रायुध' पर पहुँच सकते हैं। शायद विक्रम से पूर्व।

हमारी भूमि धीरे-धीरे ऊँची होती जाती थी। अब रोमांचकारी गर्त का वह ठंडा जल भी नहीं था। हम अब, पहिले से कुछ शीघ्रता के साथ, 50 गज आ गये। यहाँ गुफा का कोना था। यह समकोण या सरल कोण नहीं था, किन्तु चापकोण, जहाँ इस गुफा का ऐसी ही दूसरी गुफा से संयोग होता था। इस कोने को पार करते ही हरिकृष्ण ने जिस आनन्दमय दृश्य को देखा, उससे मुझे भी भाग्यशाली बनाने के लिये, उन्होंने मेरे कन्धे पर अपनी बायीं बाँह रख कर उधर दिखाया। आह! वह कैसा स्वर्गीय दृश्य मुझे मालूम होता था। प्रकाश! अहा प्रकाश!! उसके माहात्म्य को, उसके मूल्य को मेरा ही जैसा आदमी जान सकता था, जो वैसे अन्धतामिस्र नर्क से निकल कर आया हो जिसको वहाँ की स्मृति बिल्कुल ताजी लगे।

अब यहाँ से वह छिद्र चौथाई मील की दूरी पर मालूम होता था। रास्ते में बड़े-छोटे रोड़े और चट्टानें थीं, किन्तु अब प्रकाश था, इसलिये यह भाग वैसा कठिन नहीं प्रतीत होता था। हमें मोक्षद्वार सामने दिखाई पड़ता था। यह गुफा एक लम्बी नली की भाँति मालूम होती थी जिसके दूसरे छोर पर वह प्रकाश-छिद्र था। अब थोड़ी देर और सुस्ताने के लिए हम दोनों वहाँ बैठ गये।

ओह! उस प्रकाश-प्राप्ति की आकांक्षा को क्या कहूँ, रास्ता ऊबड़-खाबड़ था, लेकिन मैं बेतहाशा उधर ही आगे बढ़ रहा था। कितनी ही बार पैर के नीचे का पत्थर खिसक गया, कितनी ही बार मैं भूमि पर गिर पड़ा, टेहुनी और घुटने छिल गये, अँगुली और घुट्ठी फूट गई, कपड़े फट गये, उन पैने पत्थरों ने बीसों जगहों मेरे शरीर में से खून निकाल दिया, किन्तु मुझे इन सबकी कुछ भी परवाह न थी। मुझे किसी की सुध-बुध न थी। मुझे तो वही प्रकाश-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छिद्र दिखाई पड़ता था और उसके जल्दी से जल्दी पाने की तीव्र इच्छा। हरिकृष्ण भी अब अगुआ के बदले पिछुआ हो गये। वे बराबर मुझसे लगे ही हुए चल रहे थे। बीच-बीच में कभी-एकाध बात बोलते भी रहते थे।

अन्त पर पहुँचने से पहले ही मैं बिल्कुल थक गया था, किन्तु मेरी हिम्मत कम न हुई थी। यद्यपि कपड़े भीगे थे, वहाँ गर्मी न थी, तथापि बार-बार मुझे सिर से पसीना पोंछने की नौबत आई। मेरे और प्रकाश-छिद्र के मध्य में किसी वस्तु के अवरोधक होने पर मुझे गुस्सा आने लगता था। जितना ही हम आगे बढ़ते जाते थे, वह प्रकाश-मार्ग भी विस्तृत होता जाता था। अन्त में उसके द्वारा हमें पहाड़ी दिखाई देने लगी। वह भी वैसी ही थी, जैसी कि द्वीप के और भागों की। मुझे विस्तृत अटलाण्टिक के देखने की इच्छा थी। मुझे उन रूखी दीवारों से कोई वास्ता नहीं था। आखिर मैंने अपने आपको द्वार पर पाया।

मैंने एक बार अपनी आँखों को मला, देखा तो मालूम हुआ कि हम एक ऊँची पहाड़ी के नीचे खड़े हैं। यहाँ से नीचे की ओर खाड़ी है। रास्ता पुरानी जल-प्रणाली है। पहिली ही नजर में मुझे सामने खाड़ी में खड़ा 'इन्द्रायुध' भी दिखलाई पड़ा। मैंने अविश्वास करते हुए एक बार फिर आँख मली, देखने पर वृद्ध 'इन्द्रायुध' ही मालूम पड़ा। किन्तु था कुछ भेद? खाड़ी कुछ अधिक विस्तृत थी, शायद पहिले से दूनी, और आश्चर्य की बात यह थी कि 'इन्द्रा-युध' का आकार बहुत छोटा तथा सूरत में भारी परिवर्तन।

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। क्या कोई स्वप्न तो नहीं देख रहा हूँ। कहाँ यह मनोरम स्वच्छ संगमरमर सदृश पोत! क्या किसी ने जादू तो नहीं कर दिया; नहीं तो यह कायापलट कब संभव थी। मैंने एक बार फिर आँख मली, अब मुझे दिखाई पड़ा कि यह 'इन्द्रायुध' नहीं हो सकता, न यह वह खाड़ी ही है। मेरे नीचे की ओर थोड़ी दूर हटकर एक घर है। यद्यपि छोटा है तथापि है घर, जिसकी छत टीन की है, दीवार आदि सब लकड़ी की। देखने में बहुत सुन्दर स्वच्छ। दरवाजे, खिड़कियाँ सब बाकायदा।

मुझे इन प्रत्यक्ष वस्तुओं पर आवश्वास होने लगा। खाड़ी, स्टीमर, बँगला सभी स्वप्न से मालूम होने लगे। मुझे इनकी वास्तविकता पर यहाँ तक सन्देह होने लगा कि मैंने पीछे फिर हरिकृष्ण की ओर मुँह फेरा। तब मैंने कहा, यह स्वप्न नहीं है। किन्तु तो भी मेरा आश्चर्य उतना ही रहा। मैंने कहा—

"देखिये। क्या यह सचमुच है।"

हरिकृष्ण भी मेरी ओर हक्का-वक्का हो देखने लगे। मैंने दुबारा जहाज की ओर नजर दौड़ाई। अब मेरा दिमाग सन्न होने लगा। सचमुच यह सम्भव है, या मैं स्वप्न देख रहा हूँ। क्या यह मेरे मन की करामात तो नहीं है जिसने एक अद्भुत खाड़ी, एक मनोहर जहाज, एक सुन्दर बँगले का मुझे मोहने के लिये निर्माण कर दिया है। आः! इस इन्द्रजाल से पार कैसे पाऊँ! कैसे अपने मस्तिष्क को, अपनी बुद्धि को स्वस्थ कर पाऊँ। क्या है? मैं कहाँ हूँ?

इस प्रकार कल्पना करते-करते मैं शून्यता की सीमा में प्रवेश करना ही चाहता था कि उस बँगले का द्वार खुला। उसमें से एक आदमी बाहर आया।

———

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बँगले वाला आदमी

हाँ ! सचमुच आदमी। वह मकान से बाहर आ, द्वार के पास ही खड़ा था। कुछ देर तक हम उसके मुख को न देख सके। वह हमसे परिचित न था। वह खाड़ी और जहाज की ओर देख रहा था। वह एक नाविक मालूम होता था। शायद ऊँचे पद का। उसका कोट एक छोटे नाविक अफसर का था, किन्तु टोपी गोल मामूली माँझियों की-सी थी। उसको देखकर हमारा आश्चर्य अधिक नहीं बढ़ा; क्योंकि जहाज और घर के पास मनुष्य का रहना स्वाभाविक था। किन्तु अभी भी गुत्थी सुलझी न थी। उस पर भी इस आदमी की नीरवता, पुतली की भाँति गतिविधि। मेरी कल्पना-शक्ति फिर शिथिल होने लगी। मैं कुछ न सोच-बोल चुप रहने ही में विश्राम अनुभव करने लगा। इसी समय हरिकृष्ण ने मेरा मनोरथ भंग करते हुए कहा—

"आओ ! बन्दे मातरम् करें।"

मेरे पास उसके लिये कंठ न था, अतः उन्होंने अकेले ही इस काम को किया। घोष भी बहुत धीमा-सा था। उसके कान में पहुँचते ही उस व्यक्ति ने शब्द के आने की दिशा की ओर एक बार आँख उठाकर देखा। किन्तु फिर वही बेपरवाही, वही उपेक्षा, वही इच्छारहित गतिविधि। कोई जल्दी और आश्चर्य का यहाँ लक्षण न था। हम लोगों को देख लेने पर भी वह चुपचाप खड़ा हमारी ओर ताकता रहा। मेरे मन में अब फिर बेचैनी के लक्षण दिखलाई देने लगे। इसी समय एकाएक हरिकृष्ण की आवाज आई—

"चलो नीचे चलें।"

सचमुच मुझे यह ऐसा निरर्थक, सूखा व्यापार मालूम होता था कि मैं हँस पड़ा। तब हम लोग नीचे की ओर दौड़ पड़े और तब तक न रुके जब तक कि शर्करिला एवं बालुकामय भूमि से होकर उसके आगे न पहुँच गए। जब हम समीप आये तो मालूम हुआ कि वह एक वृद्ध आदमी है, साठ से ऊपर का। दाढ़ी-मूँछ सभी श्वेत। बाल सन-जैसे, चेहरे पर क्लान्ति की रेखायें। किन्तु खास बात थी। उसकी दृष्टि हमारे वहाँ अकस्मात् जाने पर भी—हजारों कोस दूर, अनन्त जलराशि के बीच, इस छोटे से किन्तु रहस्यपूर्ण द्वीप के अत्यन्त रहस्यमय कोनम अपने देश के दो आदमियों को इस प्रकार देखकर भी—आश्चर्य या जिज्ञासा का कहीं पता न था। नेत्र देखते थे, पलकें भी समय-समय पर उठती-गिरती थीं, किन्तु मालूम होता था कि उनका सम्बन्ध मस्तिष्क से नहीं था। इस व्यवहार को देखकर हरिकृष्ण भी एक बार चिन्तातुर हो उठे। उन्होंने साहस करके एक बार फिर कहा—

'बाबा।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वृद्ध ने एक बार उन्हें सिर से पैर तक नजर उठाकर देखा। किन्तु मुझे मालूम पड़ा कि उसकी नजर में शंका, सन्देह तथा विरक्ति झलक रही है। उसने जब जबान भी खोली, तो भी उसकी आवाज से वही रहस्यमयता जाहिर हो रही थी जो उसकी प्रत्येक चेष्टा से।

उसने कहा—"कैसे आप-आप आये ?"

हरिकृष्ण ने आगे बढ़कर कहा—"हम पहाड़ी पर से एक गड़हे में गिर गये थे, उसमें नीचे पानी था। उससे तैर कर निकलने पर वर्षाजल के रास्ते से हम यहाँ पहुँचे।"

वृद्ध ने एक बार आँखों को हमारी ओर से हटाकर उस तरफ मोड़ा जिधर से हम आये थे। मालूम होता था, वह इस पर कुछ विचार कर रहा है। तब धीरे से बोला—

"हाँ, मैं जानता हूँ उस पानी को। वह उस सुरंग के अन्त पर है। मैं कई बार वहाँ गया हूँ, किन्तु वहाँ तो कोई मार्ग नहीं मालूम होता था।"

हरि—"हमको तैरकर निकलना पड़ा, करीब दस मिनट।"

वृद्ध—"कुछ भी हो, आप भीगे हैं। कपड़ों के बदलने की आवश्यकता है। मेरे भी बहुत साथी रहे हैं, किन्तु वह कभी उस सुरंग से नहीं आये। मुझे यह बिल्कुल नहीं मालूम कि वहाँ कोई रास्ता है।"

उसकी बातचीत उसकी चेष्टाओं की भाँति ही हमें हैरानी में डाल रही थी। हरिकृष्ण ने लाचार हो उकता कर कहा—

"हमारा जहाज बम्बई का 'इन्द्रायुध' है। वह रेतीली खाड़ी में मरम्मत के लिए खड़ा है। आपके जहाज का नाम क्या है ?"

वृद्ध ने आस्ते और सीधे-सीधे तौर से कहा—"इसे 'पुष्पक' कहते हैं। आपको इसका नाम इसके माँगे पर दिखाई देगा।"

हमने वहाँ से एक बार फिर जहाज की ओर देखा। सारी ही वस्तुएँ रहस्यमय और हैरानी में डालने वाली थीं। इस पर मृत्यु की वह स्तब्धता। बीच में एक बड़ी झील जिसके चारों ओर ऊँची पहाड़ियों की दीवार। सभी जादू-सा मालूम होता था।

हरिकृष्ण ने अन्यमनस्क हो कहा—"अच्छा, आपके साथ यहाँ कोई और नहीं है ? क्या आप हमें कुछ सूखे वस्त्र और खाद्य-पदार्थ उधार दे सकते हैं ?"

मालूम हुआ, वृद्ध को इस समय कुछ अपने कर्तव्य का स्मरण आया, उसने कहा—"वहाँ जहाज पर कपड़ों का ढेर है। आप तो हमारे चीफ-इंजीनियर के कद के हैं और यह महाशय, बिलकुल हमारे द्वितीय इंजीनियर के बराबर। उनका वासा निचले तल पर है, दसवाँ और ग्यारहवाँ कमरा। आप जाइये, वहाँ जो आपके लायक हो, उसे पहिन आइये।"

हरि—"यह तो ठीक है, किन्तु वहाँ लोग देखेंगे तो क्या कहेंगे ? क्या, वहाँ वह लोग नहीं हैं ?"

वृद्ध ने अपना सिर थामकर कहा—"नहीं, वहाँ कोई नहीं है। वे लोग द्वीप की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पड़ताल करने के लिये गये हुए हैं। सभी लोग चले गये हैं, तभी तो आप यहाँ इतना सूनसान देख रहे हैं। यहाँ का भार हमें सौंपा गया है। लेकिन जो कुछ मैंने कहा है, वह वही है जो कि मालिक अगर होते तो कहते। इसलिए कोई चिन्ता नहीं, जाइये।"

अब हमें कुछ भाव खुलता हुआ मालूम होने लगा। किन्तु इतनी देर तक बूढ़े ने उसे क्यों छिपा रखा था ? पहिले ही क्यों नहीं बता दिया। हरिकृष्ण ने मेरी ओर ताका और मैंने भी उनकी ओर देख कर मुस्कुरा दिया। मालूम हो गया। बूढ़ा होने से इसे यहाँ छोड़ दिया गया है और सारे लोग पड़ताल में गये हैं।"

हरि—"आप निश्चित हैं न कि वे कुछ न बोलेंगे ?"

"बिल्कुल" बूढ़े ने सीधे से कहा। तब उसने हमें हाथ से लकड़ी के तख्तों का बँधा एक घाट दिखाया और कहा—"वह छोटी डोंगी है। शायद आप मेरे चलने की आवश्यकता न समझते होंगे ! मैं आज जरा थका भी हूँ और मेरी जरूरत भी नहीं है। आप डोंगी लेकर जायँ। बिल्कुल मजबूत है। आप परवाह न करेंगे। जो चीज आवश्यक हो, निःसंकोच ले लेंगे। मैं उसके लिये उत्तरदायी हूँ।"

अब अधिक कुछ पूछने की आवश्यकता न थी। हम लोग डोंगी पर जा बैठे। तब हरिकृष्ण ने पतवार ले जहाज की ओर खेना शुरू किया जो कि वहाँ से प्रायः 40 हाथ की दूरी पर होगा। हमारे डोंगी पर बैठते ही वृद्ध वहाँ से बँगले की ओर चल पड़ा। उसने एक बार भी पीछे फिर कर हमारी ओर नहीं देखा। उसने दरवाजा खोला और भीतर जा किवाड़ों को बन्द कर लिया। सबसे बढ़कर तो आश्चर्य हमें तब हुआ जब हमने वायुगति-शून्य उस शान्त स्थान में भीतर से ताला बन्द करने की खटक सुनी। हरिकृष्ण इसे सुनकर मुस्कुरा दिये, और बोले —

"निःसन्देह, वह बड़ा अद्भुत आदमी है।" इसके बाद हम बूढ़े को एकदम भूल गये।

जहाज की बगल में तीन हाथ लम्बी, कालीन से खूब सुसज्जित चढ़ने की सीढ़ी थी। यह श्रीगणेश था जिसने जहाज के आन्तरिक स्वरूप का पूरा परिचय करा दिया। वृद्ध पुरुष की अनुमति का ध्यान करके हमने ऊपर जाकर 'पुष्पक' के सभी भागों को देखना आरम्भ किया, यद्यपि हमने बन्द कमरों को न खोला। खुले कमरों में बिना किसी वस्तु को हाथ लगाये ही देखा। सीढ़ी से ही पता लग गया कि 'पुष्पक' भाड़ेवाला जहाज नहीं है। यह बहुत ही सुन्दर और सुदृढ़ करीब दो हजार टन का जहाज है। आराम और आवश्यकता की सभी वस्तुएँ मौजूद हैं। स्नानागार और क्रीड़ागार के अतिरिक्त क्रीड़ा-क्षेत्र, पुस्तकालय आदि सभी का खासा प्रबन्ध है। इसके अंग-अंग से सुन्दरता और सुदृढ़ता टपकती है। नया से नया भी उपयोगी आविष्कार काम में लाये बिना नहीं रखा गया है।

एक बड़े कमरे को, जो किसी सम्पन्न पुरुष का बैठका और पुस्तकालय मालूम होता था, देखकर हरिकृष्ण ने कहा—"यह, और भी कौतुकोत्पादक मालूम होता है। देखो, यहाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हजार से ऊपर पुस्तकें हैं। इन्हें एक बार देखना अच्छा होगा।"

मैंने दो-चार जिल्दें उलटकर देखीं, किन्तु मुझे उनमें कोई मनोरंजक बात न मालूम हुई। सभी पुस्तकों की जिल्दें एक प्रकार की थीं। उन पर लिखा था "भूगर्भशास्त्रीय समिति का कार्यविवरण"। हरिकृष्ण ने कई जिल्दें "प्रश्न और सूचनाओं" की उठाई। फिर कहा—

"बहुत पुरानी हैं। मैं समझता हूँ, इनका स्वामी कोई विज्ञान का प्रेमी है। लेकिन, यहाँ कुछ मासिक-पत्र भी हैं।"

मासिक-पत्रों में से उन्होंने दो-तीन को लेकर देखा। वे तब दो-तीन मिनट तक चुप रहे, किन्तु मैं पुस्तकालय देखने में लगा ही रहा। वे कुछ कहना ही चाहते थे, किन्तु न जाने क्यों रुक गये और पत्र को वहीं रखकर दूसरे कमरे की ओर चल दिए।

यह कप्तान का कमरा मालूम होता था और बहुत सुसज्जित था। हरिकृष्ण ने चारों ओर देखा। फिर एक बड़ी मेज के पास गये जिसके पीछे तीन छोटी-छोटी पुस्तकों की आलमारियाँ थीं। मेज ही से उन्होंने कुछ पुस्तकों के शीर्षक पढ़े। उन्होंने चुपचाप कई एक को लेकर देखा। फिर सबसे निचली तह से चमड़े से आच्छादित काली फुलस्केप साइज की एक पुस्तक उठाई जिसके ऊपर सुनहरे अक्षरों में लॉग (Log) लिखा हुआ था। मुझे ऐसे भी यह सारा व्यवहार मनोरंजक नहीं मालूम होता था, किन्तु हरिकृष्ण का यह व्यवहार तो बिल्कुल नापसन्द था। यद्यपि वर्तमान परिस्थिति में ऐसी जिज्ञासा होनी स्वाभाविक है, तथापि कप्तान की 'लॉग' बुक उसकी प्राइवेट लेख-संचिका है। मैं हैरान था कि आज हरिकृष्ण को क्या हो गया है? उनका ऐसा व्यवहार तो मैंने कभी नहीं देखा था। वह क्यों किसी की प्राइवेट लेख-संचिका देखने जा रहे हैं।

हरिकृष्ण ने कुछ देखकर कहा—

"माधव, यह देखो।"

मैंने देखा। यह लिखे हुए पृष्ठों में अन्तिम था। मैं सबको न देख सकता था, किन्तु जो अंश वह देखने के लिये कह रहे थे, वह यह था—

"पुष्पक" (कलकत्ता) की लॉग बुक।

स्वामी : महाराजा वीरेन्द्रकुमार, जगदीशपुर।

कप्तान : अर्जुनसिंह, रा. नौ.

प्रथम अफसर : महेन्द्रनाथ सिंह।

मात्रा :

आगे की पंक्तियाँ हरिकृष्ण के हाथ के नीचे थीं। तुरन्त उन्होंने इसके बाद पुस्तक को बन्द कर उसके स्थान पर रख दिया और कहा—

"अब हमें कुछ पता लगा। 'पुष्पक' वैज्ञानिक खोज में निकला था। जगदीशपुर महाराज इसके और पुस्तकालय के, जिसको हमने पहिले देखा है, मालिक हैं, बाकी हम उभ वृद्ध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से जानेंगे। माधव ! हम लोग अपने यहाँ आने का प्रयोजन ही भूल गये। अच्छा तो, पहिले निचले तल्ले के दसवें और ग्यारहवें कमरे में चलना चाहिये; फिर उन चीनी के स्थानीय चहबच्चों में एक सांगोपांग स्नान हो। तुम तो महाराज के स्नान-घर में जाओ, और मैं कप्तान के। है न ?"

मैं—"हाँ ! मेरी तबियत भी यही करती रही है।"

हम लोग अब इंजीनियर के कमरे में गये। सब चीज बूढ़े के कहने के अनुसार ही मिलीं. मैं वहाँ से एक ऊनी कमीज और एक जोड़ा ऊनी मोजा, एक सर्ज का कोट और पतलून, एक टोपी और गुलूबन्द लेकर स्नानागार की ओर गया। वहाँ साबुन, कंघी, शीशा, तेल, अस्तुरा, तौलिया सब तैयार पाया। खूब मल-मलकर दिल खोलकर स्नान हुआ। मेरा स्नान हरिकृष्ण से पहले समाप्त हो गया था, अतः बरामदे में आ उनके इन्तजार में बैठ गया। थोड़ी देर में वह भी आ गये। मैंने अपने आप को एक नया आदमी पाया। हरिकृष्ण की मुखाकृति गम्भीर देखकर मैंने पूछा '

क्यों, क्या है ?

हरिकृष्ण ने मुस्कराकर कहा—"कुछ नहीं, अब हमें चलना चाहिये। बहुत बातें दर्याफ्त करनी हैं। यह अपने गीले कपड़े भी लेते चलने चाहिये, वहाँ सुखा लेंगे।"

इस समय पहाड़ियों के ऊपर गर्द या वही कुहरा एकत्र हो चला था। वायुमंडल इतना स्तब्ध और नीरव था, कि धीमा-सा भी शब्द बहुत जोर का मालूम होता था। हम लोग जहाज, सीढ़ी और कमरों की बात करते हुए अपनी नाव पर आ बैठे। बात करते हुए भी मैंने देखा कि हरिकृष्ण का मन किसी गम्भीर विचार में मग्न है जिससे कि वे बात करते समय भी अलग नहीं होते थे। वे बोले—

"यह बड़ी ऊँची पहाड़ी है। वह बीच का धनुषाकर खोला, दो मील दूर से देखने पर बिल्कुल नहीं मालूम हो सकेगा। मालूम होता है, जब महाराज पड़ताल के लिये निकले थे तो उन्हें यही रास्ता दीख पड़ा। और इसी से वह सदल-बल 'पुष्पक' को यहाँ लाये। अब इस समय तो लौटकर "इन्द्रायुध" के पास चलना असम्भव है। रात सिर पर है। लेकिन कल हमें देर न करनी होगी। जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी यहाँ से रवाना हो जाना होगा। मैं समझता हूँ, ऐसा करने पर हम अपने साथियों को ठीक उत्सुकता के समय ही पा लेंगे। हाँ ! अभी बूढ़े से भी बहुत-सी बातें जानने की हैं।"

अब हमारी डोंगी चलने लगी थी। मैंने कहाँ—

"हाँ, मैंने उस दिन आपसे नहीं कहा था कि अब समुद्रों के वह आश्चर्यजनक सफर नहीं हैं। न वह यकबयक तकदीर का खुलना ही है जो सिन्दबाद के वक्त में था। अब तो चारों ओर कड़ी से कड़ी मेहनत की आवश्यकता है। लेकिन तो भी हमारी यह यात्रा तो चिरस्मरणीय रहेगी ही।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरि—"चिरस्मरणीय ही नहीं, अद्‌भुत भी। तुम्हें याद है, माधव वह जिल्द-बँधी पुस्तक, महाराज के पुस्तकालय में ?"

मैं—"हाँ ! वह भूगर्भ शास्त्रीय मासिक-पत्र न ?"

हरि—"हाँ ! वही, मुझे मालूम होता है, महाराजा अच्छे विद्वान् तथा भूगर्भ-शास्त्र के बड़े प्रेमी रहे हैं। लेकिन अमेरिकन जहाज भी तो इस द्वीप में भूगर्भशास्त्रीय अन्वेषण के लिये ही रेतीली खाड़ी में ठहरा हुआ है और वह प्रोफेसर भी एक प्रसिद्ध भूगर्भशास्त्री है।"

मैं—"यह तो ठीक है, लेकिन इससे क्या ?"

हरि—"अभी हमें प्रतीक्षा करनी चाहिए। मैं कुछ भी निश्चित नहीं कह सकता। देखें क्या बात है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगेलू की राम-कहानी

वह छोटा बँगला सारा लकड़ी ही का बना हुआ था। पीछे पता लगा कि जब महाराज ने यहाँ आकर देखा कि यहाँ कई महीने मुकाम करने की आवश्यकता होगी, तो उन्हें मकान बनाने की सामग्री लाने के लिये "मोन्ते-वायदो" (उरुगाय, दक्षिण अमेरिका) की यात्रा करनी पड़ी। वहाँ से सारा ही सामान लाये। उससे उन्होंने वह सुन्दर छोटा-सा लकड़ी का बँगला बनवाया।

हम लोगों ने दरवाजे पर जा थपकी दी। किन्तु भीतर से कोई आवाज न आई। इस पर फिर दूसरी थपकी दी, उसका परिणाम वही रहा। हरिकृष्ण ने कुंडा जोर से खटखटाकर धक्का दिया। अब की द्वार के ताले के खुलने की खटक सुनाई पड़ी।

दरवाजा खुला। वृद्ध की दृष्टि वैसी ही शून्य थी। अब की उसके सिर पर टोपी न थी। सन-के-से बाल सिर पर बिखरे हुए थे। उसके चेहरे पर इस समय बुढ़ापे का निशान अधिकता से दिखाई पड़ा। हरिकृष्ण आरम्भ से ही उसके साथ बड़ी सहानुभूति दिखाते थे। उन्होंने कृतज्ञता प्रदर्शित करते हुए कहा—

"लो, हम लोग लौट आये। हमने आपसे बहुत-सी चीज उधार ली है और आपके जहाज को भी देख लिया है। 'पुष्पक' सचमुच पुष्पक ही है।"

वृद्ध ने हमारे भीतर आने के लिये रास्ता छोड़ दिया। फिर दरवाजे को भेड़ दिया। तब उसी तरह चुपचाप, हमें लेते हुए एक कमरे में गया। कमरा 14 वर्ग फीट का होगा। इसमें एक जँगला था जिससे जहाज और खाड़ी दिखाई देती थी। इसमें एक अच्छा आराम-देह पलँग, एक छोटी-सी मेज, कई कुर्सियाँ और गर्मी के लिये एक सुन्दर कोयले वाला चूल्हा था जिसका धुआँकश बाहर की ओर था। हमारे भीतर आने पर उसने मेज पर लम्प जलाकर रख दिया। लम्प बहुत सुन्दर तथा अच्छा प्रकाश दे रहा था। अब हमें भूख खूब लगी हुई थी, किन्तु हमने देखा कि उसने एक आदमी ही के लायक भोजन तैयार किया है।

हरिकृष्ण ने पूछा—"मैं समझता हूँ, आपको हम लोगों का स्मरण नहीं रहा।"

वृद्ध—"नहीं, ऐसा नहीं। किन्तु मुझे निश्चय नहीं था कि आप वास्तविक थे। मेरे पास न जाने कितने मुलाकाती आते हैं, किन्तु कोई उनमें से वास्तविक नहीं होता। वही बात मैंने आप लोगों के बारे में भी समझी।"

हरि—"कैसे आप समझते हैं कि वे वास्तविक नहीं होते ?"

हरिकृष्ण ने बिना किसी प्रकार का आश्चर्य प्रकट किये हुए पूछा। किन्तु उसके बाद का दृश्य बड़ा ही करुणाजनक था। वृद्ध ने पहिले तो कई मिनट आँख उठाकर हमारे मुखों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की ओर देखा। फिर समीप आकर, अपना हाथ मेरे कन्धे पर रखा, मेरी आँखों की ओर खूब ध्यान से देखा, और मेरे ललाट को उठाकर देखा। अब मैंने उसके दिल में विश्वास आते समझा। उसने हम लोगों से कहा—

"अच्छा, तब तक इसे आप लोग खायें, मैं भी आधे घण्टे में भोजन तय्यार कर देता हूँ।"

इस पर हम लोगों ने कहा, कोई हर्ज नहीं। एक ही साथ खायेंगे। अब वृद्ध रसोईघर में गया जो बँगले के एक कोने में था। हम लोगों ने भी चुपचाप बैठने की अपेक्षा बूढ़े के काम में सहायता देना अच्छा समझा। हमारे वैसा करने पर वृद्ध ने कोई आपत्ति न की। वहाँ मिट्टी के तेल वाले कई चूल्हे तथा 'कूकर' थे। तवा, कढ़ाई, करछी, चम्मच सभी मँजा-मँजाया रक्खा था। वृद्ध ने आलमारी से कई टीन बाहर निकाले। किसी में गोभी, किसी में शल्जम, किसी में बैंगन आदि की शुष्का (झूरी) थी। नमक, मसाला, तेल, सुरक्षित मक्खन—सभी डिब्बों में मौजूद था। उसने एक थैली से चावल निकाले। सभी चीज बर्तनों में नीचे-ऊपर रखकर 'कूकर' में बैठा दी गई। आग बड़ी तेज थी। रसोई तय्यार होने में मैं समझता हूँ, शायद 20 ही मिनट लगे होंगे। अब भगेलू ने तीन थालियों और कई कटोरियों में दाल, भात, तरकारी सभी चीज परोसीं। जमा हुआ दूध का एक टीन खोलकर, थोड़ा गर्मागर्म दूध भी तैयार रख दिया। शीशों में से दो-तीन तरह के अचार भी निकालकर सामने रखे।

वृद्ध ने कहा—"मालकिन ने चलते वक्त घर ही से बहुत-सा अचार, मुरब्बा, अगावट, सूखी तरकारियाँ रख दी थीं। आप सब खूब खायें, कोई हर्ज नहीं। सब चीजों से भंडार भरपूर है।"

तीनों आदमी आसन पर बैठ गये। उस भोजन और उसके आनन्द का क्या पूछना है। जिह्वा में उसके वर्णन और कलम में उसके लिखने की शक्ति नहीं है। हर वस्तु में अमृत का स्वाद आ रहा था। धीरे-धीरे भोजन समाप्त हुआ। अब हम लोग थाली-वाली धो-धा अपने कमरे में आये। हरिकृष्ण वृद्ध की हर एक बात को बड़े ध्यान से देख-सुन रहे थे। उन्होंने बड़ी नर्मी से कहा—

"कैसे मुलाकाती आपके पास आते हैं? ज्ञात होता है। वे प्रायः आया ही करते हैं।"

"वृद्ध—"हाँ। रोज-रोज। पुराने मित्र, जहाज के साथी, जितने भी हमारी सभी यात्राओं से मिले हैं, सभी आते हैं; किन्तु उनमें से कोई सचमुच का नहीं। सब भ्रमात्मक, अवास्तविक। प्रायः नित्य ही मालिक घाट पर आते हैं जहाँ से कि कभी उनकी बगल में कप्तान, इंजीनियर, सभी जहाजी साथी भी रहते हैं। एक दिन तो मुझे वह यहाँ तक वास्तविक मालूम पड़े कि मैं घाट पर दौड़ गया। लेकिन जब से मैं हाथ छूने लगा, तो देखा कि वहाँ कोई नहीं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लैम्प के प्रकाश में मैंने देखा कि उस समय उन शून्य-दृष्टियों में कुछ आश्चर्य और करुणा की झलक थी। उसकी करुणापूर्ण दृष्टि, जो मेरे चेहरे पर उस समय थी, मेरे हृदय को डावाँडोल कर रही थी। उसने अपनी बात जारी रक्खी—

"एक दिन 'माया' भी तैरती हुई ठीक सूर्यास्त के समय, जब थोड़ा-थोड़ा अँधेरा होने लगा था, घाट के सामने आ लगी। आप जानते हैं, पहिले उसी पर मैं और कप्तान महेन्द्रनाथ रहते थे। एक बार हम लोग दक्षिणी अफ्रीका के 'दर्बन' हर में मुसाफिरों को लेकर भारत लौटने के लिये तैयार थे। उसी समय वहाँ नई सोने की खान की खबर उड़ी। थोड़ी ही देर में सारे मुसाफिरी जहाज खाली कर उधर दौड़ गये। हमें 6 महीने खाड़ी में चुपचाप पड़ा रहना पड़ा। 'माया' बिल्कुल 'पुष्पक' के पास ही खड़ी हुई। उसकी छत पर कप्तान महेन्द्र थे; वैसे ही लम्बे-चौड़े और मूँछें भी वैसी ही बड़ी। उन्होंने पुकार कर कहा—"भगेलू ! तुम यहाँ हो ? हम तुम्हें लेने आये हैं। देखो, बड़े तड़के ही तुम चले आना, हम तुम्हें घर ले चलेंगे। मैंने कहा—"नहीं, कप्तान महेन्द्रनाथ ! मैं नहीं आऊँगा। देखते नहीं हो, मालिक मेरे ऊपर सब छोड़कर सैर करने गये हैं। बिना उनके आये मैं यहाँ से कैसे टल सकता हूँ। यह तुम्हारे लिये ठीक नहीं कि तुम मुझे, उन्हें छोड़कर, भाग चलने की सलाह दो।" तब मैंने कप्तान को ठठाकर हँसते सुना। उन्होंने कहा—"अरे ! यह वही बूढ़ा भगेलू है। यह मालिक के पीछे सत्ती होगा। यह कभी नहीं टस से मस होगा।" फिर जब मैंने सबेरे उठकर देखा, तो 'माया' वहाँ नहीं थी। लेकिन, क्या 'माया' सचमुच आई थी। नहीं, वह सिर्फ धोखा था।"

इसके बाद थोड़ी देर तक बिल्कुल सन्नाटा रहा। तब हरिकृष्ण ने कहा—"अच्छा, तो कृपा करके हमसे अपने मालिक की बात कहो। वह कितने दिनों से बाहर गये हुए हैं ?"

भगेलू का, मालूम होता था, ख्याल कहीं दूसरी जगह था। उसने थोड़ी देर में धीरे से कहा—

"एक महीना हुआ होगा, या शायद कुछ दिन अधिक। जानते हैं, मालिक, पहिले प्रथम अफसर, चीफ इंजीनियर और दस आदमियों को लेकर गये। वह एक सप्ताह बाहर ही रहे और जब लौटकर नहीं आये, तो कप्तान अर्जुन आकुल होने लगे। उन्होंने फिर दूसरी टोली भेजी कि देखें क्या हुआ। लेकिन वह भी न लौटी। तब आठ-दस दिन बाद, कप्तान स्वयं दूसरी टोली के साथ गये। वह रामकुमार, रामप्रसाद और मुझको यहाँ छोड़ गये।"

हरि—"और वे दोनों कहाँ हैं ?"

इस पर बूढ़े की शून्य-दृष्टि में एक बार क्रोध की आभा दिखलाई पड़ी। उसने काँपते स्वर से कहा—"जिसके वे योग्य थे, वही हुआ। थोड़े ही दिनों के बाद वे उकताने लगे। वह यहाँ से भाग जाने की सलाह करने लगे। मुझसे भी कहा। मैंने कहा, "भगेलू जब तक मालिक न आयेंगे तब तक क्या यहाँ से टसकेंगे ? मालिक का नून खाकर हराम करना है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्या ? मेरी सात पुश्त मालिक ही की पाली-पोसी है। नहीं मानते हो, तो जाओ, इसकी सिद्धि देखोगे।" इस पर वे दोनों बड़ी डोगियाँ और बहुत-सा खाने-पीने का सामान लेकर, उसी रास्ते से गये जिससे हम लोग यहाँ आये थे। लेकिन दूसरे दिन नाव का एक टुकड़ा, रामप्रसाद को यहाँ लाया और साथ ही ज्वार ने रामकुमार को भी यहीं पहुँचा दिया। मेरे पास इतनी लकड़ी कहाँ थी कि जलाता। कई दिन तक दोनों यहीं तैरते रहे। फिर एक बार भाटा उन्हें यहाँ से घसीट ले गया। मैंने कहा यही दिखाने के लिये आये थे कि भगेलू, देखो जो नमक की शरियत नहीं देता, उसकी क्या दशा होती है ?"

हरि—"तब से, फिर तुम अकेले ही हो ?"

भगेलू—"हाँ। लेकिन जहाज में सब चीज है, आपने देखा है। उस सबकी देखभाल मेरे ही ऊपर है। जहाज और इस बँगला दोनों का भार मेरे ऊपर है। मुझे सब चीजों को ठीक और स्वच्छ रखना है। जानते हैं, जो मालिक आ गये तो गंदा देखकर मुझे क्या कहेंगे। मालिक तो बड़े अच्छे हैं, मुँह से कुछ नहीं बोलेंगे, किन्तु मन में तो उनके होगा न कि भगेलू मुँह पर ही 'हूँ'–'हूँ' करता है। चार दिन भी हमें बाहर गये नहीं हुए कि वह अपना काम ही भूल गया। इसीलिए चुपचाप बैठने के लिये मुझे फुर्सत नहीं है। सबको झाड़-पोंछ कर तैयार रखना होता है।"

हम लोगों ने जहाज देखा था। सभी चीजें कितनी साफ थीं। सचमुच काम एक आदमी के लिये बहुत था। लगा कि बेचारा बूढ़ा मालूम होता है, सबेरे से शाम तक बराबर इन्हीं कामों में लगा रहता है।

हरि—"तुमने कहा कि हम लोग उधर उस पहाड़ की ओर से इस खाड़ी में आये। क्या और भी किसी दूसरे रास्ते का पता मिला है ? किस रास्ते से महाराजा यहाँ से गये ? तुमने उनकी टोली का तब से कुछ पता लगाया है ?"

भगेलू—"हाँ, बाबू ! महाराजा द्वीप पार करना चाहते थे। वे समझते थे कि उत्तर से कोई आगे जाने का मार्ग होगा। यह रास्ता बड़ा कठिन है। बल्कि कोई रास्ता नहीं है। ऐसी ही ऊबड़-खाबड़ चट्टानें हैं। उन पर से जाना बड़ा कठिन है। मैं दो दिन खोज में गया। पिछले ही सप्ताह तो और अन्त में उत्तरी पहाड़ी की जड़ तक पहुँच गया। फिर उसके बाद रास्ता नहीं था। सिर्फ वहाँ पर एक गुफा थी। किन्तु मेरे पास पर्याप्त मोमबत्ती नहीं थी कि उसके भीतर जाकर देखता, इसलिये लौट आया। थोड़ी और प्रतीक्षा करके फिर मेरा जाने का विचार है। लेकिन यह टापू ऐसी गुफाओं और खड्डों से भरा पड़ा है।"

हरि—"हाँ ऐसा ही है।"

भगेलू—"हाँ बाबू ! ठीक कहते हैं। और मुझे खुली जगह, खुली हवा, खुला समुद्र अच्छा लगता है।"

थोड़ी देर लोग चुप रहे। उस समय हमारे मानस-चक्षुओं के सम्मुख था, वह भयानक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महागर्त और भगेलू की वह अँधेरी गुफा। किन्तु अभी हमें और दरियाफ्त करना था। हरिकृष्ण ने पूछा—

"क्यों महाराजा इस ऊजड़ टापू में आये? इतनी बड़ी कठिनाई उठाकर इतनी दूर आने का उनका अभिप्राय क्या था?"

भगेलू—"कंकड़-पत्थर देखने के लिये, इसे न जाने वे क्या कहते हैं बाबू! नाम ही नहीं याद आता।"

हरि—"भूगर्भशास्त्र।"

भगेलू—"हाँ! यही-यही। इसी खिलवाड़ के वास्ते महाराज पृथ्वी पर मारे-मारे फिरते रहे, घर-बार, लड़का-वाला, सब सुख छोड़ इसका तो मालिक को न जाने क्या नशा हो गया था। इसी के लिये हम सब को लेकर देखो न, दक्षिणी अमेरिका, के पास पृथ्वी के छोर पर चले आये। आओ न देखो, यह दूसरे कमरे में।"

भगेलू हाथ में लैम्प लेकर आगे-आगे चल पड़ा। यह कमरा भी उतना ही लम्बा-चौड़ा था। बीच में एक चारपाई, एक मेज और कई कुर्सियाँ उसी भाँति इसमें भी थी। किन्तु विशेषता यह थी कि यहाँ दीवार के पास एक आलमारी-सी खड़ी थी जिसमें बहुत से ड्रार (खाने) लगे हुए थे। भगेलू ने लैम्प मेज पर रख दी और एक ड्रार को खींच कर कहा—"देखिये न, कितने छोडे-छोटे पत्थर यहाँ हमने जमा किये हैं। सैकड़ों तो यहाँ मौजूद हैं और निस्सन्देह अब की मालिक लौटेंगे तो और बहुत-से लायेंगे। मालिक सब चीजों का कायदे से रखा जाना पसन्द करते हैं। यह नहीं कि जहाँ चाहो, वहाँ उनका ढेर कर दो।" पीछे फिरकर चारपाई की ओर संकेत करके बोला—"और यह मेरा बिछौना है। सब नमूनों के पास मालिक ने मुझे सोने को कहा है। वह दूसरी पलंग, उस कमरे वाली, महाराज की है। आप लोग उस पर सोयें। कोई चिन्ता न करें। निश्चित है कि वे बुरा न मानेंगे। मैं जिम्मा लेता हूँ।"

इसके बाद उसने लैम्प उठा लिया और हम लोग साथ-साथ दूसरे कमरे में आये। बूढ़े ने फिर कहा—

"मैं भी जगदीशपुर ही का रहने वाला हूँ। हमारा खानदान बहुत दिनों से, महाराज के पुरुखों के समय से ही, सेवा करता चला आ रहा है। मेरे पिता बड़े सरकार के खास-खवास थे। मैं भी महाराज के साथ बराबर उनकी सेवा में रहा हूँ। एक बार जवानी में मुझे सनक सवार हो गई थी। तब मैं घर से बिना पूछे-पाछे ही भाग गया। मैं कलकत्ता जा जहाज पर नाविक का काम करने लगा। इसके बाद कई वर्षों तक मैंने आस्ट्रेलिया, यूरोप, चीन, जापान, अमेरिका, अफ्रीका के भिन्न-भिन्न भागों की कई बार यात्रा की। पीछे जब मैं एक बार घर गया तो पिता ने महाराज से मेरी चर्चा की। महाराज, हाँ यही हमारे महाराज, तब महाराज हो गये थे। इन्होंने कहा—"भगेलू! तुम हमको छोड़कर बाहर ही बाहर कब तक रहोगे? देखो, तुम्हारे घर के लोगों से हमारा आज का सम्बन्ध नहीं है। अब तक जो हुआ, सो हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब तुम हमारे पास रहो। बल्कि तुमने एक प्रकार से इतने दिनों तक बाहर रहकर अच्छा ही किया। तुम अब एक अच्छे नाविक हो गये। हमें भी बहुत समुद्र-यात्रा करनी है। बस, तभी से मैं बराबर मालिक ही के साथ हूँ। आप समझ सकते हैं कि क्यों मैं रामकुमार और रामप्रसाद के कहने में नहीं आया।''

जिस समय भगेलू यह बात कर रहा था, मैंने हरिकृष्ण के चेहरे की ओर देखा कि उसमें कितनी वृद्ध के अज्ञात शोक-प्रवाह के साथ संवेदना है? वे छोटे-से कमरे और उसके लड़के के असबाव को कितनी हसरत-भरी निगाह से देख रहे थे? वृद्ध ने अन्त में इस प्रकार अपनी कहानी का उपसंहार किया।

''मैं बराबर जरा देर से सोता हूँ। दिन भर तो मैं अपने मालिक के काम में रहता हूँ। रात के समय भोजन के बाद थोड़ी रामायण बाँचता हूँ। मैं समझता हूँ, आप लोगों को सोने में देर होती होगी।''

हरि—''नहीं, अभी कोई जल्दी नहीं। लाओ, हम भी रामायण सुनेंगे।''

तब वृद्ध ने रामायण की पोथी सामने रखकर कहा—''देखिये, यह हमारी मालकिन के हाथ की पोथी है। जब हमने पिछली बार यह यात्रा की, तभी महारानी ने यह पुस्तक मँगवा कर मुझे दी। मैंने कहा—मालकिन, मैं रोज इसका पाठ करूँगा।''

वृद्ध ने बड़े करुणा-भरे स्वर से, भोजपुरी लय में, तीन दोहों का पाठ किया। उस निस्तब्ध स्थान, उस महानिशा की नीरवता में वह मुझे कैसा मालूम होता था, यह मेरा मस्तिष्क अब भी उत्तर देने योग्य नहीं हुआ है। पाठ समाप्त होने पर वृद्ध ने कहा—

''आपके पास लैम्प है, किन्तु इसे व्यर्थ न जलने दीजियेगा। जब काम हो जाय, उसी वक्त इसे बुझा दीजियेगा। यहाँ तेल, मोमबत्ती कम नहीं है। किन्तु उनका व्यर्थ व्यय क्यों किया जाय।''

इसके बाद भगेलू अपने कमरे में चला गया। तब हरिकृष्ण ने धीमे स्वर से मुझसे कहा—''तुमने कुछ समझा माधव?''

मैं—''मैंने तो गाड़ी का गाड़ी समझा है। किन्तु उसको यहाँ कहने की क्या आवश्यकता है? जो कुछ भी हो, बुड्ढा बड़ा भला आदमी है।''

हरि—''इसमें क्या शक है? और इससे भी बढ़कर अच्छी बात यह है कि इसने सभी बातें भुला रक्खी हैं।''

मैं—''क्या? भुला रक्खी हैं।'

हरि—''हाँ। इस वक्त वह हम लोगों को भी भूल गया होगा। उसे सबेरे यह स्मृति भी न रहेगी कि हम लोग वास्तव में रात को यहाँ रहे थे। याद करो रामकुमार और रामप्रसाद की बात। क्या तुम समझते हो कि एक-दो सप्ताह के बाद उकताकर वे यहाँ से भाग खड़े हुए। जैसा कि बूढ़ा कहता है? हर्गिज नहीं। वे कई हफ्ते, कई मास, नहीं, सम्भवतः कई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्ष यहाँ प्रतीक्षा करते रहे। फिर वे सब तरह से निराश हो गये। जब उनकी भी सोचने की शक्ति क्षीण होने लगी, तब उन्होंने इस भूल-भुलैया से बचने का प्रयत्न किया। इसका जो परिणाम हुआ, वह तुमने सुना ही। कभी मत आशा करो कि महाराज के सम्भवतः अत्यन्त विश्वासपात्र नौकर, अकेले दो आदमी, हजारों कोस दूर, समुद्र के अन्दर एक भयानक खाड़ी से, एक डोंगे के सहारे, इतने बड़े साहस के लिये, सिर्फ दो सप्ताह के इस निर्जन-प्रवास से ही तैयार हुए होंगे। भगेलू समझता है, यह सभी बातें हफ्ते-दो-हफ्ते की हैं। उसे अब समय की गति का ज्ञान नहीं है। वह जानता है, दिन आया, अब रात आई, अब फिर··· ·····। किन्तु कितने दिन, कितनी रात, इसका उसके पास कुछ हिसाब नहीं। वह जीता है, क्यों जीता है, इसका भी उसे पता नहीं। वह घटनाओं को जानता है, किन्तु उनके घटने के समय का उसे पता नहीं। उसके लिये सारी घटनाएँ आसन्नभूत,—बल्कि कल ही की मालूम पड़ती हैं। समझे ?"

इसे सुनते ही मेरे बदन में बिजली-सी दौड़ गई। मेरे दिमाग पर मानो यकबयक वज्र गिर पड़ा। मैं अभी आज की इन घटनाओं को तल पर से देखता था। मैंने उनकी गहराई, उनके अन्तर-रहस्य का कुछ भी पता न पाया था। न उनके लिये कोई प्रयत्न ही किया था। हरिकृष्ण के शब्द साफ थे। मैं यह भी जानता था कि वह बड़े परिश्रम के परिणाम हैं। उन्होंने अपने अभिप्राय को और भी व्यक्त करते हुए कहा—

"मैंने जहाज पर यह बात इसलिये नहीं कहीं कि इसका जरा और पता लगा लें। लेकिन अब जो मैंने कहा, उसे तुम शुद्ध सत्य समझो। तुमने देखा नहीं, वे पुस्तक, वे पत्रिकाएँ कितनी पुरानी थीं ? मैंने कप्तान की लॉग बुक की अन्तिम लेख-तिथि तुमको नहीं दिखलाई थी। जानते हो, वह थी 5 कर्क सम्वत् 1861; और, आज यह है 4 कर्क 1981। इसलिए, समझ में आया, भगेलू इस निर्जन, निष्ठुर, द्वीप में, इन रूखी पहाड़ियों की चहारदीवारी के अन्दर इस घर, इस जहाज और अनगिनत भूत-प्रेतों के साथ 20 वर्ष से अधिक समय से रह रहा है।"

———

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेल का भीतरी

हरि—"माधव ! जागे हो ?"

मैं—"हाँ" ।

हरि—"तो हम लोग कुछ बात-चीत करें । बहुत सोचना, मैं समझता हूँ, लाभदायक न होगा, हानिकारक हो सकता है ।"

मैं सूर्योदय से एक घंटा या उससे अभिक ही पहिले जाग गया था । दिमाग मेरा विचार-तरंगों में ऊब-डूब हो रहा था । वही दशा हरिकृष्ण की भी थी, किन्तु मैं उनकी निद्रा-भंग होने के डर से बोलना उचित नहीं समझता था । हम लोग युवक थे । एक बार गहरी नींद आ जाने ही से सारी थकावट दूर हो जाती है न ? हरिकृष्ण ने आस्ते-आस्ते बात करना आरम्भ किया जिसमें कि बूढ़े की निद्रा में विघ्न न हो । उन्होंने कहा—"यह कैसा वीभत्स स्वप्न-सा प्रतीत होता है । मैं जितना ही सोचता हूँ, उतना ही तबियत घबराने और दिल सिहरने लगता है । 20 वर्ष इस प्रकार के स्थानों में ! अवश्य, ऐसी अवस्था में काल-ज्ञान का न होना ही अहोभाग्य है ।"

मैं—"हाँ ! यह वांछनीय है ।"

हरि—"ठीक ऐसा ही । एक ओर यह काल-ज्ञान का अभाव, और दूसरी ओर कर्तव्य, विश्वास और भक्ति । शायद ये काल-ज्ञान के विस्मरण होने से पहिले ही आ गये थे । या, यों कहो, इसी में उसने और सबको भुला दिया । उसने इसी मार्ग पर चलते-चलते मितव्ययिता भी सीख ली । यद्यपि जहाज में सामान भरा है, तथापि एक आदमी इतने ही दिनों में बहुत खा सकता है । 20 वर्ष बहुत होता है ।"

मुझे हरि की बातों की सत्यता बहुत जल्द मालूम होने लगी । कोयला, तेल आदि सभी पदार्थ यद्यपि अब भी जहाज पर थे, तथापि अन्दाज करने पर मालूम हुआ कि सभी कुछ हम तीन आदमियों के लिए तो 6 मास के लिए शायद ही पर्याप्त हो । भगेलू ने सदा तपस्वी का जीवन व्यतीत किया है । यदि वह ही अकेला रहता, तो इसमें शक नहीं कि इस हिसाब से अधिक दिन तक चला ले जाता । आखिर कितना करुणापूर्ण, कितना दिल को हिला देने वाला दृश्य था ! दिन-प्रतिदिन उस परिमित भण्डार का व्यय होते-होते क्षीण होता जाना !

हरि—"किन्तु, इतना ही नहीं । रात सोने के वक्त सोचा था कि हम भरसक जल्दी 'इन्द्रायुध' को पकड़ें । किन्तु अब वह बात मुझे बहुत दूर की मालूम होती है । अब लगता है, हमारे और इन्द्रायुध के बीच का फासिला न जाने कितने वर्षों का है । बात अब सरल नहीं है ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैं—"नहीं है, हाँ।"

हरि—"तो क्या करना चाहिये ? जिस मार्ग से यहाँ हम पहुँचे, उससे तो लौटा जा नहीं जा सकता। अब बाकी एक ही मार्ग है जिससे 'पुष्पक' यहाँ आया है। किन्तु यहाँ एक ही छोटी-सी डोंगी है—सो भी हमारी नहीं है। यह बूढ़े भगेलू की है जिससे वह जहाज और बँगले के बीच आता-जाता है। उसे हम ले जा नहीं सकते। ले जाने पर भी वह प्रयत्न, मैं समझता हूँ मूर्खतापूर्ण ही होगा। जब इससे कहीं बड़ी नाव द्वारा भी रामप्रसाद और रामकुमार नहीं पार जा सके तो इस छोटी डोंगी का क्या बिसात है ? यदि उस तंग दर्रे में तेज तरंग हुई, तो फिर, विद्युत्-संचालित बोट ही जा सकती है।" मेरे दिमाग में इससे हलकी कोई सूरत नहीं समाती थी। मैं बातों की सच्चाई बिल्कुल समझता था। मेरा कुछ भी बोलने का उत्साह नहीं होता था।

हरि—"कप्तान प्रभुनाथ, विक्रम से सुनकर अवश्य हमारी तलाश करेंगे। किन्तु उससे लाभ ? मान लो, थोड़ी देर के लिये कि एक आदमी किसी तरह उस महागर्त के भीतर लटकाया गया तो भी, वहाँ क्या हाथ लगेगा ? अन्धकार और घोर अन्धकार या अगाध अदृश्य जल·········इससे तो उन्हें जल्द निश्चय ही हो जायगा कि हमारा काम तमाम हो गया, अब और खोजने की आवश्यकता नहीं। और यह ख्याल करना कि किसी प्रकार अपनी यहाँ की उपस्थिति की सूचना उन्हें दी जाय, भी असम्भव है। यदि बन्दूक भी छोड़ी जाय तो भी आवाज इन ऊँची पहाड़ियों के घेरे से बाहर जा ही कैसे सकती है ? इसके बाद वे लोग भी तो इस प्रकार के एक घेरे में हैं। यहाँ लाँघकर पार जाना, सो तो शायद बकरियाँ भी नहीं कर सकतीं।"

मैं—"लेकिन क्या करना होगा। देर करने से निराशा होगी। 'इन्द्रायुध' चला जायगा। और जाने के लिए यह अड़चन। तो भी चुपचाप हाथ-पैर मारना छोड़कर अपने को इस क्रूर अवस्था के हाथ में समर्पण कर देना भी तो उचित नहीं प्रतीत होता। क्या, यह अच्छा नहीं होगा कि जरा हम आसपास घूमकर देखें।"

हरि—"मैं भी यही ठीक समझता हूँ। किन्तु हमें बूढ़े के दिल में किसी प्रकार की बेकली न पैदा करनी चाहिये।"

प्रातःकाल के उजाले में, भगेलू को बिना आहट दिये, हम लोग आस्ते से अपने बिछौने से उठकर, घर से बाहर चले आये। हमने अपने आसपास की भूमि की देखभाल शुरू की। अभी सूर्य का प्रकाश हमारे पास तक नहीं पहुँच सका था, किन्तु पहाड़ियों पर मालूम होता था कि चारों ओर वही नीरवता अब भी अविच्छिन्न रूप से व्याप रही है। चारों ओर मृत्यु की छाया है। कहीं भी जीवन का चिह्न नहीं मालूम होता। हरिकृष्ण ने मेरे कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा—

"तैयार हो जाओ हिम्मत के साथ जवान ! हम लोग कोई न कोई रास्ता निकाल ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेंगे। आओ समुद्र के किनारे से घूमें।"

अब हम लोग उसी तरफ से चल रहे थे। सचमुच हमारी समस्या बड़ी कठिन थी। मैंने बहुत से जासूसी उपन्यास और कठिनाइयों से मुक्त हुए वीरों के वृत्तान्त पढ़े हैं, किन्तु मुझे तो ऐसी कठिनाई कहीं भी पढ़ने में नहीं आई। यदि वे लोग इस परिस्थिति में आते तो मुझे तो उम्मीद है, उनकी भी मेरी ही जैसी दशा होती।

यह द्वीप जिस पर हम लोग खड़े थे, वास्तव में एक अत्यन्त प्राचीन, अन्तकालीन ज्वालामुखी का शिखर था। रेतीली खाड़ी, जिसमें 'इन्द्रायुध" खड़ा था, उसी का एक विवर था, जो कालान्तर में निम्न होते-होते, जल और वायु के प्रभाव से, अन्त में वर्तमान रूप में परिणत हो गया था। किन्तु ज्ञात होता है, इस ज्वालामुखी के दो मुख थे। दूसरा यही रहस्यमयी खाड़ी, जिसके किनारे हम लोग खड़े टहल रहे थे। दोनों के बीच 6 मील तक भयंकर चट्टानी पहाड़ियाँ थीं। करीब से करीब जाने पर भी खाड़ी का काला मुख, जो पहाड़ियों के बीच में हमको दिखलाई पड़ता था और बड़ा ही रोमांचकारी था। वहाँ पानी का वेग तीव्र लहरें बड़ी खतरनाक थीं। मेरी समझ में कोई समझदार नाविक इस मार्ग से आने की हिम्मत नहीं कर सकता। एक तो महाराज को उनकी ज्ञान-पिपासा के कारण इधर आने की अत्यन्त आतुरता थी। दूसरे शायद उस समय ज्वार रहा हो, इसलिये धार हल्की हो। इस मार्ग की चौड़ाई के कारण यद्यपि तीन जहाज एकसाथ निकल सकते हैं, तथापि और बातें कदापि संतोषजनक नहीं हैं।

युग बीत गये, जब यह मुख-विवर पिघले हुए लावा, भाप और राख उगला करते थे, जब हजारों तोपों की एकसाथ आवाज-सी आती थी। उसी समय यह पिघले हुए पत्थरों का समुद्र-सा उसके चारों ओर बहने लगा। जब वह आग उगलना थम गया, जब वह लावा की बाढ़ रुक गई, तब धीरे-धीरे सब कुछ ठंडा होने लगा, और उन्होंने इन पहाड़ियों का रूपधारण कर लिया। कितने ही समय के बाद एक और परिवर्तन आया। अब यह खाली मुख-विवर समुद्र के जल से भरने लगे। धीरे-धीरे इन्होंने खाड़ी का रूप धारण किया। अपने पुराने रास्ते के अवरुद्ध हो जाने से जब कभी अग्नि ने फिर बाहर जाने की इच्छा की तो उसने दूसरे रास्ते बनाये, जिनमें शायद वह भी एक है जिसमें हम लोग गिरे थे और जो अब इसी की भाँति जलपूर्ण है। यह गर्त, और यह चट्टानें हैं जिन्होंने इस द्वीप को 'मधुच्छन्न' नाम दिया है।

यह 'गुप्त समुद्र' उत्तर-दक्खिन एक मील लम्बा और चौड़ा पौन मील के करीब होगा। तट पर काली ज्वालामुखी की रेत थी जिसके पिछले भाग में पत्थर और चट्टान और जिसके पीछे वही भीमकाय दीवारें, उनमें जहाँ-तहाँ हल्की रेखाएँ-सी थीं। शायद इन्हीं से महाराजा ने अपने नमूने एकत्र किये थे। यह यात्राएँ बहुत छोटी-छोटी रही होंगी। कोई-कोई तो शायन कुछ घंटों की ही रही होंगी। शायद इन यात्राओं से लौट थैलों भरे पत्थरों को महाराजा पृथक्-पृथक् करके श्रेणीवार अलग-अलग रखते होंगे। अनावश्यक को फिर फेंक देते होंगे। जहाज मुहाने से दूर हटकर था। इतने दिन बिना मरम्मत के हो गये। तब भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहाज ठीकठाक मालूम होता था इसी से पता लगता है कि इसकी बनावट कैसी होगी। यद्यपि वारनिश और रंग कहीं-कही अब उखड़ चला था, उसके रक्षक ने अब भी पूरे प्रयत्न के साथ उसे इसके योग्य रखने की चेष्टा की थी कि मालिक के आते ही वह लौटने के लिये बिल्कुल तैयार हो काए ! भगेलू की दिनचर्या ! उसका जीवन ! यह प्राणिशून्य स्थान, जहाँ न बकरी, न स्यार, न कीड़ा, न मकोड़ा, न चूहा, न चींटी, यहाँ तक कि छोटी-से-छोटी घास तक नहीं। यद्यपि समय-समय पर इस गुप्त समुद्र में ज्वार आता है, उसके साथ मुहाने से कुछ शब्द-सा होता है और इससे पानी दो-तीन हाथ ऊपर भी चढ़ जाता है, किन्तु कैसा आश्चर्य ! भगेलू कहता है कि यहाँ मछली एक भी नहीं आती। यद्यपि मछलियों के आने से शायद जीवन-निर्वाह के लिये आशा बढ़ जाती, तथापि इसमें सन्देह नहीं कि उस समय हमारा बचकर यहाँ तक आना मुश्किल होता। अवश्य उस अँधेरी गुफा के जल में उस समय घड़ियालों और नाकों का बसेरा होता।

हम टहलते हुए तट के पास वहाँ तक चले गये जहाँ से आगे का रास्ता एकदम बन्द था। उसके आगे वही चट्टान, अलंघ्य काली दीवार। यहाँ से मुहाना कुछ और अधिक दिखाई देता था। हमें यही मुक्तिमार्ग जान पड़ता था; बल्कि इसी के दर्शन की लालसा से हम यहाँ तक बढ़ आये थे। किन्तु हमने कुछ भी ऐसा नहीं देखा, जो हमारे लिये आसरा होता। यह सिर्फ एक मेहराबदार ऊँचा द्वार था। यहाँ आशा और अनुकम्पा का पता न था। हरिकृष्ण का वह डर कि रास्ता छोटी डोंगी के लिये बड़ा भयानक होगा, बिल्कुल ठीक मालूम हुआ, क्योंकि वहाँ एक प्रखर धार-सी चलती जान पड़ती थी। जब वहाँ खड़े हम उधर देख रहे थे, तो हरि ने कहा—

"इसकी बनावट विचित्र है, किन्तु अकेला नहीं है। 'फर्नान्दोदि-नन्हीं' (ब्राजील के पूर्व किनारे पर टापू) के उत्तरी भाग में भी ऐसा ही दृश्य है। किन्तु वह सर्वप्रसिद्ध और यह तो सर्वथा अश्रुतपूर्व है। यह स्थान इतना भयानक है कि कोई मल्लाह इस ओर आना ही नहीं चाहता।"

मैं—"तो, आपको आशा नहीं है कि हम इससे बाहर निकल सकेंगे।"

हरि—"हाँ, डोंगी द्वारा तो हर्गिज नहीं। और यहाँ बड़ी नाव है नहीं। जहाज के साथ अनेक नावें रही होंगी। उन्हीं में से एक को ले रामकुमार और रामप्रसाद चले भी थे। लेकिन वह क्या हुई ?"

मैं—"और, अमेरिकन जहाज तो हम लोग भूल ही गये वह कितने दिनों से यहाँ पड़ा है और "इन्द्रायुध" के चले जाने पर भी उसे अभी कितने दिनों तक ठहरना है।"

हरि—"हाँ ! बहुत कुछ आशा है कि उसके आदमी यहाँ आयें, वह इस द्वीप की पड़ताल के लिये आया है। यदि पूणरूपेण उन्होंने खोजना शुरू किया, जैसा कि प्रोफेसर की बातों से मालूम होता था, तो अवश्य वह लोग यहाँ आयेंगे, जैसे कि महाराजा यहाँ आये थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और यह भी हमें आशा रखनी चाहिये, कि चाहे उन्हें हमारे मरने का भी किसी कदर अनुमान हो गया हो, किन्तु कप्तान प्रभुनाथ, प्रोफेसर और कप्तान जेक्सन से हमारे विषय में पूरा वचन लिये बिना नहीं गये होंगे।''

अब सब बातें स्पष्ट मालूम होने लगीं। हम कहाँ किस अवस्था में हैं। हमारे लिये अब क्या रास्ता, क्या तदबीर बाकी रही है--सभी बातों पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता मालूम हुआ।

मैंने कहा—''तब पहिले क्यों न मुझे इस बातों से आपने सूचित किया। इतनी देर तक मुझे अँधेरे में रखने का मतलब ?''

हरिकृष्ण ने मेरे मुँह की ओर स्थिर दृष्टि से देखते हुए कहा—''मेरे दिमाग में भी यह विचार अपरिपक्व दशा ही में था। हमारी परिस्थिति का दुःखमय पहलू ही मुझे अधिक दिखाई देता था। कोई निश्चय नहीं था, इसीलिये, माधव, मैंने नहीं कहा था।''

मेरे हृदय में अब प्रतिक्रिया की तरंगों की बाढ़-सी आ गई। मैं अब कुछ न बोल सका। मेरे मन में आशा देवी की सुनहरी मूर्ति दूर से आती दिखलाई पड़ी। मालूम हुआ, 20 वर्ष से इस कैद में पड़ा हुआ भगेलू, अब शायद बीस ही दिन और यहाँ रह सके। जल्द ही हमारी मुक्ति होगी। आह ! कितना अद्भुत सफर होगा। बीस वर्ष तक का इस गुप्त समुद्र और टापू का प्रवास, यहाँ के सारे रहस्य लोगों को जब ज्ञात होंगे, तो उन्हें कितना आश्चर्य होगा।

अब हम लोग बँगले की ओर लौटने लगे। जब हम उससे सौ गज की दूरी पर थे, तब दरवाजा खुला। भगेलू बाहर आया। उसने हमारी तरफ नहीं देखा। उसकी दृष्टि पहिले जहाज की ओर गई, फिर गुप्त समुद्र के उत्तरी भाग की ओर, जहाँ चट्टानों का अंधकारमय जंगल था। वह वहाँ कितने ही मिनटों तक खड़ा रहा।

हरिकृष्ण ने कहा—''अपने मालिक को देख रहा है। हाय रे ! भगेलू।'' उसके व्यवहार से मालूम होता था कि मानो वह हमें भूल गया है। किन्तु जिस समय हम आगे बढ़े और उसकी नजर हम लोगों के ऊपर पड़ी तो उसे याद आई। उसके चेहरे पर प्रसन्नता के चिह्न दिखलाई पड़े।

हरिकृष्ण ने आगे बढ़ कर वन्दे मातरम् किया। और कहा—

''हम लोग जरा टहलने के लिये चले आये थे। मुहाने को देख रहे थे कि किस प्रकार खुले समुद्र में पहुँच सकते हैं।''

भगेलू ने इन सारे शब्दों में, मालूम होता है, दो शब्द ही पकड़ पाये। उसने कहा—''खुले समुद्र, खुले समुद्र में''।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरि—"हाँ, तुम क्या समझते हो ? हमें किसी प्रकार अपने जहाज पर पहुँच जाना है !"

बूढ़े ने सिर हिलाते हुए कहा—"नहीं बाबू ! इस रास्ते से नहीं। यह रास्ता बड़ा भयंकर है। वह मुहाना चौथाई मील होगा, किन्तु अत्यन्त भयंकर, तीक्ष्ण धार और तेज धार वाली चट्टानें अगल-बगल में हैं। जाने का उत्तम समय वही है, जब ज्वार का पानी खूब भरा हो। किन्तु तब भी एक मजबूत बेड़े की आवश्यकता होगी।"

मेरे दोस्त ने कहा—"तुम्हारे पास एक ही डोंगी है। और नावें क्या हुईं ? एक और को मैं जानता हूँ जिसे रामकुमार और रामप्रसाद ले गये थे, किन्तु यहाँ और नावें भी रही होंगी।"

उस शुष्क चर्म-अस्थि अवशिष्ट चेहरे पर शोक की दौड़ती छाया दीख पड़ीं। उसने कठिनता के साथ कहा—"यही मेरा दुःख है। हमारे पास एक बड़ा सुन्दर अगिनबोट और एक रक्षक-नाव थी। वह बराबर 'पुष्पक' के पास ही रहती थी। ओह ! अपने भाग्य को क्या कहूँ। एक रात को, जब कि ज्वार जोर का आया, मेरी गलती, मैंने उनको मजबूती के साथ नहीं बाँधा था और समझता था कि वह सुरक्षित हैं, किन्तु प्रातःकाल जब मैंने देखा तो वह गायब। मेरी तबियत घबड़ाने लगती है जब मैं इस बात का ख्याल करने लगता हूँ। मालिक पूछेंगे, तो मैं क्या कहूँगा और कप्तान साहब को क्या उत्तर दूंगा ?"

हरि—"इसकी चिन्ता मत करो, वह तुमसे हर्गिज रुष्ट न होंगे। वह अच्छी तरह समझेंगे कि तुम्हारा इसमें कोई कुसूर नहीं है। तो, तुम्हारी समझ में निकलने का कोई रास्ता नहीं है ?"

बूढ़े की दृष्टि ही इसके लिये पूरा उत्तर थी। फिर मेरे मित्र ने मामूली तौर पर कहा—"तो, हमें कोई दूसरा रास्ता सोचना चाहिये, या यहाँ प्रतीक्षा करनी चाहिये ?"

भगेलू—"नहीं बाबू ! जल्दी करने की कोई जरूरत नहीं। मालिक बराबर बाहर ही थोड़े रहेंगे। अब की बार ज्यादा देर लग गई, परन्तु अब दो-चार दिन में आयेंगे ही।"

यह कहते हुए हमें लिये-दिये वह घर में चला गया। जब तृण-वनस्पति का वहाँ पता ही नहीं, तो दातवन की क्या आशा थी। भगेलू ने हमें दन्तमंजन और ब्रुश दिया। जब हम मुँह-हाथ धो, अपनी कुर्सियों पर बैठे तो भगेलू ने गिलासों में गर्म दूध और कटोरियों में मीठी टिकिया नाश्ते के लिये रक्खी। तीनों आदमी बैठकर नाश्ता करने लगे। भगेलू ने टिकियों की ओर इशारा करके कहा—

"मालकिन ने बहुत-सी चीजें बनवा कर हमारी यात्रा के लिये रख दी थीं। मालिक ने तो बहुत कम ही खाया था। अभी तो बहुत-सा खजूर, शकरपारा, पेठा—डिब्बों और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोतलों में बन्द रक्खा पड़ा है। चलें न बाबू ! देखें वहाँ।"

हरि—"तो, तुम रोज जहाज पर जाते हो ?"

भगेलू—"हाँ ! रोज सबेरे। महाराज की सब चीज-बस्त वहाँ हैं न ? उनको झाड़-पोंछ कर रखना होता है। कमरों को झूठ-सच झाड़ू-बुहारू दे ठीक करना पड़ता है। न जाऊँ, तो कैसे बने ?"

हरि—"लेकिन, बाबा, जब तक हम लोग यहाँ हैं, आपके काम में कुछ सहायता देना चाहते हैं। हम समझते हैं कि आप हमारी इच्छा पूरी करेंगे। क्या यह अच्छा नहीं होगा कि आप यहाँ का काम देखें और हम दोनों आदमी जाकर वहाँ का काम कर आते हैं।"

यह सुनकर पहिले बूढ़े ने कुछ आनाकानी की, किन्तु हरिकृष्ण के मृदु व्यवहार ने उसके हृदय को अपना लिया था, इसीलिए भगेलू ने थोड़ी देर के विचार के बाद स्मित-मुख से स्वीकार किया। अपने ऊपर उसने बंगला के झाड़-बुहारू तथा बर्तन माँजने का काम लिया और हम लोगों को वहाँ का काम सौंपा। हमको यह भी बतला दिया कि वहाँ कौन-कौन काम करना होगा। इस प्रकार हम दूसरी बार जहाज की ओर चले। थोड़ी देर में हम उसी सुसज्जित सीढ़ी से होकर 'पुष्पक' के संगमरमर-सदृश पोत-तल पर पहुँच गये। वहाँ पहुँचते ही हरिकृष्ण ने कहा—

'माधव ! अब थोड़ा मैं एक नीच काम करने जा रहा हूँ। तुम तब तक जाकर काम करो, मैं कप्तान के कमरे में उल्टापल्टी करूँगा। मुझे आशा नहीं है कि कप्तान ने यहाँ से जाते समय कोई अपना अन्तिम सन्देश लिखा नहीं होगा। मैं उसी को खोजना चाहता हूँ। मुझे उम्मीद है, उससे बहुत बातों पर प्रकाश पड़ेगा। समझे ?"

कल जो बात मुझे अरुचिकर मालूम होती थी, आज वही अत्यन्त प्रीतिकर प्रतीत हो रही थी। मुझे अब समझ में आ गया था कि पत्रों-पत्रिकाओं की पुरानी प्रतियाँ और भगेलू की बातों से उठे सन्देहों ने ही उन्हें कल वैसा करने को बाध्य किया था।

मैंने कहा—"हाँ ! बेशक आप देखें। मैं काम करने जा रहा हूँ, किन्तु जैसे ही कोई आवश्यक बात मिले, मुझे सूचित कीजियेगा।"

हरि—"हाँ, फौरन करूँगा।"

इस प्रकार हरिकृष्ण तो कप्तान के आफिस की ओर गये और मैं भगेलू के बताये काम को करने लगा। कहीं झाड़ना, कहीं पोंछना, कहीं किसी चीज को रगड़ना और पालिश करना, यही तो काम था। अभी मैंने दस मिनट भी अपना काम नहीं किया था कि हरिकृष्ण ने पुकारा—"माधव हो !"

मैं बिना साँस लिये उधर दौड़ पड़ा। देखा कि हरिकृष्ण कप्तान के आफिस में मेज के पास कुर्सी पर बैठे हुए हैं। उन्होंने उसी लॉग-बुक को खोलकर सामने रक्खा है। किन्तु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब की दृष्टि जहाज-विषयक लेखों पर नहीं हैं। उनका हाथ बहुत-से खुले हुए फुलस्केप कागजों पर है।

हरि—"जैसा मैंने ख्याल किया था, वैसा ही है। देखो इन पन्नों को कप्तान ने अपनी लॉग बुक में लिखकर रखा है जिससे नवागत जिज्ञासु को इन्हें पाने में दिक्कत न हो। कल इन लोगों को जल्दी थी, नहीं तो कल ही इन्हें खोज लिये होता।"

मैंने उनके कन्धे पर झुक कर उधर देखना आरम्भ किया। उसके लिखे जाने की तारीख कर्क 1961 विक्रमी थी। तारीख के नीचे मोटी कलम से सुर्खी के तौर पर लिखा हुआ था—

"यदि मैं न लौटूँ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कप्तान का सन्देश

हमने उसे इस प्रकार पढ़ा—

"मैं इसे एक अनिश्चित और भीषण अवस्था में लिख रहा हूँ। मुझे इसमें बड़ा सन्देह है कि इसे कोई दूसरा पढ़ सकेगा, सिवाय इन तीनों बेचारों के, जिनके ऊपर कि मैं जहाज सौंप कर जा रहा हूँ। किन्तु इस ख्याल से कि शायद कोई हमारी वर्तमान परिस्थिति से अपरिचित दृष्टि इधर पड़े, भरसक जल्दी में विस्तार के साथ लिखने की कोशिश करता हूँ कि क्यों मैंने अपने दिल में यह इरादा किया।"

"चार मास वीते, जब हमने 'रेतीली खाड़ी' में पहले आकर लंगर डाला। महाराजा जगदीशपुर, दक्षिणी अटलांटिक के टापुओं के भूगर्भशास्त्रीय अन्वेषण के विचार से हमारे साथ यात्रा कर रहे थे। हमारे आने के एक ही सप्ताह बाद जब महाराज को घूमते हुए इस खाड़ी का पता लग गया तो उन्होंने 'पुष्पक' को यहाँ लाने की आज्ञा दी। इस खाड़ी को देखकर महाराज बहुत खुश हुए। उन्होंने मुझसे कहा—यह दूसरा 'क्रेटर' भूगर्भशास्त्रीय अध्ययन के लिये अत्यन्त ही उपयोगी होगा। एक सप्ताह यहाँ ठहरने के बाद उन्होंने कहा, यहाँ हमें अधिक दिनों तक मुकाम करना होगा। इसलिये हम लोगों ने यहाँ से 'मौएतेवायदो' की यात्रा की कि वहाँ से लकड़ी तथा अन्य आवश्यक वस्तुएँ एक विश्राम-गृह बनाने के लिये लायें। उनके कहने के मुताबिक ही हम खाद्य-पदार्थ भी इतना लाये कि जो हमारे सबके लिए बारह मास से अधिक के लिये पर्याप्त था। उन्होंने इसका कारण नहीं बताया, किन्तु उनके ढंग से मालूम हुआ कि उन्हें यहाँ अपने काम की इतनी चीजें मिलने की आशा है जिनके लिये उन्हें अधिक ठहरने की जरूरत है। सचमुच, एक बार उन्होंने यहाँ छै मास रहने का इरादा प्रकट किया और कहा कि उसके बाद फिर एक बार यहाँ लौटकर आना होगा, किन्तु यह सब कुछ आगामी कामों पर निर्भर करता है। किनारे-किनारे महाराज ने जो खोज की, उसमें बहुत अच्छे-अच्छे नमूने हस्तगत हुए। जितना ही समय बीतता जाता था, उनकी दिलचस्पी भी उतनी ही बढ़ती जाती थी। वे इस संग्रह के कार्य में इतना व्यस्त हो गये कि उन्होंने और दूसरी बातचीत तथा औरों के साथ मिलने-बैठने की बात भी एक प्रकार से छोड़ दी। यद्यपि वे बातूनी न थे, तथापि वैज्ञानिक विषयों पर वार्तालाप करना उन्हें बहुत पसन्द था। जब बँगला तैयार हो गया, तब तो उनकी प्रवृत्ति में और भी फर्क आ गया। वे कभी-कभी तीन-तीन, चार-चार दिन बँगले ही में सोते थे। जहाज पर एक बार भी न आते थे। उनका कार्य था आसपास से तरह-तरह के पत्थरों के नमूनों का संग्रह करना, उनकी सूची बनाना तथा उन्हें पृथक् करना। उन्होंने बँगले की जिम्मेवारी भगेलू को, जो कि महाराज के ग्राम का तथा उनका अत्यन्त विश्वासपात्र आदमी है, सौंपी। भगेलू ने भी उसी प्रकार अपने और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहाजी-साथियों से मिलना कम कर दिया। मेरे साथ यद्यपि महाराज का व्यवहार पूर्ववत् ही मित्रतापूर्ण था, तथापि मैं समझता था कि वह कार्य की अधिकता ही थी जो उन्हें मेरे साथ भी वार्तालाप के लिये पहिले का-सा अवसर न देती थी। जो कभी कुछ कहते भी थे, तो भूगर्भशास्त्रीय की कोई सामान्य बात लेकर। अपना काम उन्होंने इस द्वीप में क्या किया, इस पर कुछ नहीं कहते थे। यद्यपि मेरा ज्ञान भूगर्भशास्त्र के विषय में अत्यल्प था, तथापि मैं एक अच्छा श्रोता था। किन्तु इस समय महाराज को श्रोता की इच्छा ही नहीं थी।"

"एक महीने के बाद महाराज की राय हुई कि जरा दूर तक का चक्कर लगाना चाहिये। उन्होंने मुझसे कहा—उत्तरी भाग की पड़ताल करते हुए मैं पहाड़ी के उत्तर किनारे तक पहुँचना चाहता हूँ। लेकिन भूमि बहुत ही नीची-ऊँची तथा अनिश्चित थी, इसीलिए उन्होंने कई आदमियों को रसद पहुँचाने के लिये ले जाना पसन्द किया। मैंने अपनी सम्मति भी उनके पक्ष में ही दी और कहा कि आपके साथ आठ या दस आदमी जाने चाहिये। भूमि खाड़ी और ऐसी बीहड़ है कि कई जगह पैर जमाने के लिये भी जगह बनाने की आवश्यकता पड़ेगी। महाराज साथ-साथ हर जगह भूगर्भशास्त्रीय अन्वेषण भी जारी रखना चाहते थे। आपस में वार्तालाप के बाद यह पक्का हुआ कि यह चढ़ाई एक सप्ताह के लिये होनी चाहिये। महाराज ने कहा—"यदि हम एक सप्ताह के बाद न आयें, तो आकर हमारी खोज-खबर लेना। लेकिन अर्जुन ! तुम जानते हो न, मधुच्छत्र कितना बदनाम स्थान है ?"

मैंने कहा—"बदनाम ? सचमुच मुझे तो इसका पता नहीं।"

"इस पर महाराज ने एक छोटी पुस्तक उठाई जो मेज पर रखी थी और कहा—"यह एक पुराना पुर्तगीज-विवरण है। इसमें इस तरफ के समुद्रों की यात्रा का वर्णन है जो सत्रहवीं शताब्दी के पिछले भाग में हुई है। इसमें एक स्थान का विवरण है जो मुझे विश्वास है कि इसी द्वीप का है, यद्यपि वहाँ नाम दूसरा दिया है।"

"उन्होंने उसके कई पन्ने उलट कर ऐसा पृष्ठ खोला जिस पर लाल पेन्सिल का निशान बना हुआ था। मैं 'पुर्तगीज' भाषा समझने में असमर्थ था, अतः महाराज ने उसका अनुवाद करके मुझे सुनाया। मैं उसे यहाँ याद करके लिखता हूँ, जो मुझे आशा है, बिल्कुल वैसा ही होगा।"

"उन्तीसवाँ दिन—आज हमने एक प्राणिशून्य पथरीला द्वीप देखा जिसे मल्लाह लोग गड़हों का द्वीप कहते हैं, क्योंकि इसमें असंख्य गड़हे या गर्त हैं। इसकी भीषणता के कारण कोई भी यहाँ मुकाम करना नहीं चाहता, यद्यपि यहाँ एक अच्छा बंदरगाह और पास ही पीने का पानी है। लोग कहते हैं कि यहाँ एक गुफा है जिसमें शैतान ने डेरा डाला है। अगर कोई अनभिज्ञ पुरुष उसके निवास-स्थान के पास चला जाता है तो वह अपने भयंकर नेत्र खोलता है, और वह वहीं गिरकर मर जाता है। इसलिये हम यहाँ से वायव्य कोण की ओर अग्रसर हुए।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराज ने कहा—"मुझको इसमें बिल्कुल सन्देह नहीं कि यही वह गड़हों का द्वीप है। अब तुमको मालूम हुआ, कितना बदनाम यह द्वीप पहिले से ही है ?"

मैंने अस्वीकार करते हुए कहा—'यह एक बेहूदा मिथ्या विश्वास था।' इस पर महाराज के ओठों पर एक अद्भुत हँसी की रेखा दिखाई पड़ी, मानो वह इससे अधिक इस विषय में जानते हों, किन्तु कहना न चाहते हों।

उन्होंने कहा—"निस्सन्देह यह एक कहावत, एक मिथ्या विश्वास है, किन्तु शायद इसका युक्तियुक्त कोई अर्थ हो। शायद मुझे ऐसी कोई गुफा मिले। आपको मेरी पड़ताल की प्रतीक्षा करनी चाहिये। हाँ, तो अर्जुन ! यदि एक सप्ताह बीतने पर भी मैं न लौटूँ तो तुम मेरे खोजने के लिये, घण्टों, पुस्तक और मोमबत्ती के साथ आना। शैतान सचमुच बड़ा निष्ठुर जेलर होगा।"

मैंने उनके साथ वार्तालाप का एक संक्षिप्त नोट 'लॉगबुक' में कर लिया।

"दो दिन बाद महाराज निकल पड़े। उनके साथ दस आदमी थे जिनमें प्रथम अफसर श्रीहरिहर सिंह और चीफ इंजीनियर श्री गिरीशदत्त त्रिपाठी थे। हम उन्हें नाव पर बैठाकर खाड़ी के उत्तरी तट तक पहुँचाने के लिये गये। पीछे उसी शाम को आदमियों में से दो, रामकुमार और रामप्रसाद, लौट आये ! हमने देखा कि वे वहीं पानी के तट से हाथ के इशारे से बुला रहे हैं। पीछे मालूम हुआ कि रामकुमार ने एक मील चलते-चलते कहीं अपनी घुट्टा तोड़ ली है, इसीलिये रामप्रसाद को उसके साथ करके लौटा दिया गया है। इन आदमियों ने बताया कि यात्रा बहुत कठिन है, अतः बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ना हो रहा है। वे सीधे उत्तर की ओर बढ़ रहे हैं, किन्तु बाधाएँ असंख्य हैं।"

"यह अन्तिम समाचार था, जिसे हमने महाराज जगदीशपुर के बारे में पाया। सप्ताह बीत गया, किन्तु वे लौटकर न आये।"

"मेरी घबराहट और भी बढ़ गई, क्योंकि महाराज अपने प्रोग्राम और बात के बड़े पक्के थे। यद्यपि उस वक्त मुझे यह भी ख्याल आया कि शायद उनको कुछ दिन और ठहर जाने की आवश्यकता प्रतीत हुई हो। किन्तु मेरे लिये इसके सिवाय कोई चारा न था कि पता लगाने के लिये एक दूसरी टोली भेजूं। यह टोली पहिली से बड़ी होनी चाहिये, क्योंकि इसे अपनों के अतिरिक्त उनके लिये भी रसद ले चलना है। मैंने अपने बचे-खुचे आदमियों से ग्यारह मजबूत जवानों को इसके लिये तय किया। अब तक मेरे चित्त में कोई भारी सन्देह नहीं हुआ था।"

"कई कारणों से इस टोली का अगुवा मैंने स्वयं न होना चाहा। मैंने अपने द्वितीय अफसर श्री रामबहादुर लाल, एक बहादुर और चतुर नवयुवक को इसका नेता बना करके भेजा। मैंने इसे भलीभांति समझा दिया कि उन्हें कितनी सावधानी और दृढ़ता से काम लेना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाहिये। टोली ने बड़े उत्साह के साथ कूच किया......और उसके बाद कुछ भी समाचार उन लोगों का न मिला।

मैंने इसके बाद दो सप्ताह तक प्रतीक्षा की। कहीं से भी किसी प्रकार की आशा अब न रही। हम लोग अब दस मजबूत आदमी ही बाकी रह गये। इतने आदमियों से जहाज को घर लौटाकर देश ले जाना भी असम्भव था। मैंने इस ख्याल को अपने सामने आने ही नहीं दिया। मेरे दिल में इन दुष्ट चट्टानों और भीतरी वस्तुओं के प्रति अपार घृणा उत्पन्न हो गई। अब मुझे धीरे-धीरे विश्वास हो चला कि अवश्य उन पर कोई आफत आ पड़ी है। किस बुरी साइत में हमने यह यात्रा की! मेरी तवियत इस विषय में कुछ भी जानने के लिये अधीर थी, किन्तु यहाँ कुछ न था। उत्तरी तट और उसकी काली दीवार वैसी ही नीरव थी।''

''किन्तु यह मेरे लिये असम्भव था कि मैं यहाँ चुपचाप बैठा बाट जोहता रहता। मुझे अब इस परिस्थिति का मुकावला करना होगा। मैंने अपने मित्र श्री कामेश्वरप्रसाद जो स्वयं भी मेरे साथ आग-पानी में कूदने के लिये तैयार थे, के साथ विचार करने पर, सब नाविकों को एक साथ अपने आफिस में बुलवाया। मैंने सारी परिस्थिति को विना चूँचिरा, विना कुछ घटी-बढ़ी के सबके सामने खोलकर रख दिया—''जहाज के मालिक को गये एक मास हो गया। वह और उसके साथियों का तब से कुछ पता नहीं। दूसरी टोली के लोगों को भी गये आज दो सप्ताह हो रहे हैं। उनकी भी वही दशा है। इससे पता लगता है कि उनके ऊपर भी कोई आफत आई है, नहीं तो वे लौटे विना अथवा अपना समाचार दिये विना न रहते। यदि ऐसा हुआ तो उनके पास रसद थोड़ी थी, उसके समाप्त होते ही उनके ऊपर यह दूसरी विपत्ति पड़ेगी। इस द्वीप में सिर्फ पत्थर ही पत्थर हैं। अतः यह आशा नहीं कि उन्हें किसी मानव-शक्ति ने रोक रखा होगा।'' मैंने उनके साथ में एक सहायक टोली भेजने का प्रस्ताव किया जो कि उनके मार्ग का अनुसरण करती हुई आगे बढ़ी। उसने क्या राय दी ?''

''वही जो एक भारत माता के पुत्र के योग्य थी। किसी ने भय और कायरता की गंध तक अपने हृदय में न आने दी। सबने एक स्वर से बड़े उत्साह से कहा—'हम अपने कप्तान के आदेश पर जलते तवे पर सिर-आँखों के बल चलने के लिये तैय्यार हैं।' उनके उत्साह को बढ़ाते हुए श्रीराम बहादुर ने कहा—'देखो, महाराज, कितने पवित्र काम के लिये, कितने महत्त्वपूर्ण काम के लिये, अपने घर-बार, अपने सुख-स्वर्ग सभी का परित्याग कर हजारों कोस दूर इन सूनसान खड्डों में आये। उनके श्रेणी के राजाओं और नवावों में से आज कितने हैं जो विद्यानुराग में, देश की यशोवृद्धि में इस प्रकार का त्याग दिखायें। उनके लिये तो अपने शरीर का सुख—अपनी इन्द्रियों का सुख—यही सब कुछ है। भला कौन-सा ऐसा आदमी होगा जो ऐसे महापुरुष की सहायता के लिये उसके विपद्-ग्रस्त साथियों के उद्धार के लिये अपना कदम आगे बढ़ाने से रुकेगा। कप्तान साहब! आप चलिये; हमें जाने के लिये आदेश दीजिये। हम महाराज का समाचार बिना लिये, विना उनको लिवाये नहीं लौटेंगे।''

''इसके बाद मैंने कहा कि तीन आदमियों को यहाँ देखभाल को छोड़ जाना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामकुमार, रामप्रसाद जहाज पर और भगेलू तो महाराज की चीजों के साथ बँगले पर है ही। इसके बाद यात्रा के लिये सब सामग्री बाँधी जाने लगी और दूसरे दिन सवेरे चलने की ठहरी।''

''इस अन्तिम घड़ी में मुझे विश्वास नहीं कि मैं ठीक कर रहा हूँ। एक तो यह कि शायद मैं इन्हें मौत के मुँह में लिये जा रहा हूँ। और दूसरे यदि वे लोग जीवित और सुरक्षित हैं तो तब तक वह यहाँ पहुँच जायेंगे। किन्तु दीप की भयानक मूर्ति, उसकी काली गुफायें और काली दीवारें सभी यह बता रही हैं कि उन्हें कोई भारी विपत्ति का सामना करना पड़ा। कुशल नहीं है।''

''वर्तमान अवस्था में यद्यपि शीघ्र से शीघ्र यहाँ से रवाना हो जाना ही अच्छा है। किन्तु मेरे हृदय में इस समय कई प्रकार के सन्देह हैं। मुझे आशा नहीं है कि मैं लौट कर भारतमाता के पवित्र चरणों को इन आँखों से फिर देख सकूँगा। मुझे यह भी उम्मीद नहीं कि मैं महाराज से मिल सकूँगा। मेरी समझ में महाराज के ऊपर जो पड़ना था सो अब तक पड़ ही गया होगा। मुझे आशा नहीं, मैं महाराज के परिवार को देख पाऊँगा या उनके किये यहाँ के कामों को अपने देशवासियों के कानों तक पहुँचा सकूँगा।''

''जब तक यह पंक्तियाँ किसी अपरिचित बन्धु द्वारा पढ़ी जायेंगी, मुझे आशा है कि तब तक हमारा काम तमाम हो चुकेगा। मैं उनसे प्रार्थना करूँगा कि वे हमारी सहायता के लिए अपनी शक्ति और समय का किंचनमात्र भी व्यय न करेंगे, क्योंकि निश्चय वह अपने ऊपर व्यर्थ की आफत बुलानी होगी जिससे हम लोगों को कुछ भी लाभ न पहुँच सकेगा। उनसे हम यही आशा रखते हैं कि यदि यहाँ छोड़े गये व्यक्ति जीवित मिलें, तो उन्हें उनके घर पहुँचा देना तथा 'पुष्पक' की इस घटना को समाचारपत्रों में शीघ्र से शीघ्र प्रकाशित कर देना जिससे इसके लिये उत्सुक व्यक्तियों को सूचना मिल जाय।''

''मेरी वसीयत मेरे प्राइवेट कागज-पत्रों में है जो कि डेस्क में है। वसीयत मैंने आज ही लिखा है।''

—''अर्जुन सिंह, कप्तान, राष्ट्रीय नौसेना''।

हमने सन्देश को पंक्तिशः एक-एक शब्द करके पढ़ा। जब यह समाप्त हो गया तो हरिकृष्ण ने कुछ नहीं कहा। उन्होंने एक बार मेरी ओर ताक कर भी नहीं देखा। उन्होंने चुपके से उन कागजों को मोड़कर उस किताब में जहाँ का तहाँ रख दिया। अब भी मैं उस महान् स्तब्धता में भगेलू की गतिविधि देख रहा था। अन्ततः मैंने कहा—

''तब ?''

हरि—''उनमें से एक भी मुड़कर नहीं आया और कुछ दिनों के बाद रामकुमार, रामप्रसाद और भगेलू ने इस कागज को देखा। उनमें से दोनों ने, किसी प्रकार यहाँ से जान बचाकर निकलना चाहा, किन्तु भगेलू इसके लिये तैयार न था। उसको अब भी आशा है—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

या, शायद उसे भय मालूम हुआ—या, शायद उसने वैसा करके अच्छा ही किया, क्योंकि इससे दूसरा काम बड़ा भयंकर निकला। इस प्रकार वह ठहर गया। पीछे कुछ दिनों के बाद उसके दिमाग ने जवाब दे दिया। अब वह कल की भाँति जीता है। उसको मालूम नहीं कि इसे कितने दिन यहाँ रहते हो गये। यदि उसे यह मालूम होता, तो निश्चय है कि वह अब तक जीता न रहता।"

मैं—"तो फिर इन लोगों का क्या हुआ ?"

हरि—"हम केवल अनुमान कर सकते हैं। हम लोग स्वयं जैसे एक गर्त में गिरे, वैसे ही शायद किसी गर्त में यह लोग भी गिर पड़े। किसी प्रकार की बला इनके ऊपर आई, यह निश्चय है। पुरानी पुर्तगीजों की कहावत, यद्यपि उसका रंग देकर वर्णन किया गया है, अवश्य किसी सच्चे आधार पर है। उन भोले-भाले नाविकों के लिये शैतान एक सच्ची वस्तु था, इसीलिये सभी विपत्तियों के साथ उसका सम्बन्ध जोड़ देना उनके लिये अनिवार्य था।···किन्तु सचमुच माधव ! तुमको दुःख है कि हम लोगों को क्यों यह पत्र मिला ?"

मैं—"दुःख ! नहीं, यद्यपि यह हृदय-विदारक है। यह नहीं कि इसने बहुत-सी बातों को खोल दिया, प्रत्युत इसने सबसे भारी रहस्यमय मार्ग का पर्दा चाक कर दिया।"

हरि—"हाँ ! भाई, और इन सबको पढ़कर समाप्त करने के बाद अब हम ठीक उसी रहस्यमयता के सामने खड़े हैं।"

इसके बाद वहाँ से उठकर हम लोगों ने अपना काम पूरा किया। इस रहस्य का आतंक हमारे हृदय पर ऐसा छाया था कि हम अपने कामों को पुतली की भाँति कर रहे थे। अब 'पुष्पक' की किसी भी वस्तु को वैसी बारीकी से नहीं देखते थे, क्योंकि अब हमारी दृष्टि में उसका कुछ भी वास्तविक मूल्य न था। सचमुच हम लोग खुश थे कि हमारा काम हो गया। हम किनारे जाने के लिए तैयार हुए।

बूढ़ा भगेलू हमारे लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था। हमारे किनारे पहुँचते ही वह हमारे पास आया। मैंने भगेलू के मुख को देखा, किन्तु वहाँ भी मुझे केवल रहस्य ही रहस्य दिखाई पड़ा। पीछे मुड़कर 'पुष्पक' की ओर दृष्टि डाली। उसकी सूरत से अपार करुणा की वृष्टि हो रही थी। दोनों ही जगहें असंख्य प्रश्नों का उद्गम-स्थान थीं। किन्तु था वहाँ प्रश्न ही प्रश्न—उत्तर का पता नहीं।

अब मैंने देखा कि इसका परिणाम क्या होगा ? आखिर इसी जगह मुझे सबका उत्तर भी झलक गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भयंकर बुलबुला

पिछले दिनों इन विचारों के अतिरिक्त हमारे दिमाग में दूसरे विचारों को भी स्थान मिलता, तो वह महान् रहस्य हमारे सामने से ओझल हो जाता, अथवा भूल जाता। उस समय इस कथा का रूप कुछ दूसरा ही होता, अथवा वह संसार की अज्ञेय वस्तुओं ही में रहता। किन्तु सूर्योदय से सूर्यास्त तक हमारे सामने उस रहस्य के अतिरिक्त दूसरा था ही क्या ? हमारे सम्मुख वस्तु थीं, किन्तु हमें उनका आकार स्वप्न-सा, विस्मृत-सा, अव्यक्त-सा जान पड़ता था। किन्तु वह रहस्य ? बिलकुल स्पष्ट, सर्वथा मूर्तिमान्। निराशापूर्ण, जनशून्य 'पुष्पक' क्या था ? उत्तर ओर की दीवारों और चट्टानों की कालिमा क्या थी। पुष्पकारोहियों का नामलेवा कौन था ? जिधर भी हमने नजर डाली, वही प्रश्न-परम्परा, उत्तर-रहित अथवा वही एक उत्तर। रात्रि का अन्धकार हमारे लिये मंगल वस्तु थी, वह उस सर्वव्यापक वस्तु को आच्छादित करके हमारा हित करती थी। उससे भी वढ़कर निद्रा थी जो माता की भाँति हमें अपनो प्यारी गोद में लेकर सब कुछ भुलवा देती थी। हम उसी मनुष्य की पलंग पर सोते थे जो फिर लौटकर न आया। उसी कमरे में, जिसे मानो उसने हमारे ही लिये बनवाया था। उस रात्रि की नीरवता में उस चिर एकान्तवासी की नियमित श्वास की आवाज हमारे कानों तक पहुँचती थी। वह फिर हमारे अन्तःकरण को विकल करना आरम्भ कर देती थी। ओह ! यह कैसा भोला है ! इसका विश्वास कैसा पक्का है ? अब भी आशा सँजोये है कि मालिक आयेंगे, आज नहीं तो कल आयेंगे। धन्य आशे ! तू भी बड़ी दयावती है। इसके अपार दुःख का, इसके अवसान-रहित कारावास का, कुछ भी इसे पता न दे, तू चुपचाप इसे एक ही बार सबसे मुक्त करा देना चाहती है।

कभी-कभी हमें इस पर आश्चर्य होता था कि क्यों बूढ़े भगेलू ने हमको अपने मालिक का घर और बिस्तरा सोने-बैठने के लिये दिया ? हम लोग रोज नियमपूर्वक जहाज पर जाते थे, किन्तु कभी वहाँ न सोये। यद्यपि बँगला भी वैसा ही एकान्त और हृदयवेधक था, तथापि उस रहस्यमय समुद्र के उस सूने जहाज में तो मालूम होता था कि जाने कितने हजार भूत आकर बसेरा डाले हुए हैं।

इस प्रतीक्षा के स्वप्न और इच्छारहित बातचीत और कामों में एक पक्ष बीत गया। अमेरिकन अब भी न आये। बूढ़े की भाँति हम भी उत्तर दिशा की ओर रोज शाम-सबेरे देखते थे। ज्वार आया और उस पथरीले मुहाने से घर्घर करता हुआ निकल भी गया, किन्तु वहाँ किसी भी नाव या मनुष्य के शब्द का पता न था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरि—"हाँ, वह दूसरे भाग में द्वीप की पड़ताल कर रहे होंगे; किन्तु वह अवश्य अन्त में यहाँ आयेंगे।"

पन्द्रहवाँ ही दिन था कि मुझ पर भगेलू की बीमारी आनी शुरू हुई। मैं बोल उठा—

"वे क्यों यहाँ आने लगे ? ऐसी आशा में सार ? हो सकता है कि वह लोग आयें ही नहीं ! अब सच्चाई को छिपाकर इस आत्म-वंचना से लाभ ?"

हरि—"इसमें सच्चाई को छिपाने का प्रयत्न नहीं। हम वही कह रहे हैं जो कुछ कि समझ में आ रहा है।"

मैं—"हाँ, ठीक है। किन्तु मेरा कहना है कि उनके आने, न आने दोनों की ही सम्भावना बराबर है। शायद इस वक्त तक वे चले गये हों।"

मैंने बिना जाने हुए यह सब कहा था, किन्तु हरिकृष्ण को यह सब बातें पहिले ही सूझी थीं। मैंने और भी असन्तोष प्रकट करते हुए कुछ कड़े स्वर में कहा—"आह ! तुम क्यों मुझे सदा बच्चा बनाना चाहते हो ? क्या हम दोनों एक ही नाव में नहीं हैं ? क्या हम लोग सीधे-सीधे साफ शब्दों में बिना लगाव-लपटाव के बातचीत नहीं कर सकते ? ऐसा कहना हमारे लिए लाभदायक न होगा। यन खेल नहीं है, तुम इसे भली-भाँति जानते हो।"

हरिकृष्ण ने इसे सावधान हो सुना। थोड़ी देर के लिये उनके मुख पर गम्भीरता छा गई। अन्त में वे हँस दिये। यह उनका स्वभाव था। वे रत्ती मात्र सत्य भी छोड़ना पसन्द नहीं करते थे, चाहे गाड़ी भर निर्बल तर्कों पर ही वह अवलम्बित हो।

हरि—"समाहित हो माधव ! हमें झगड़ना न चाहिये। सचमुच बहुत अच्छा होगा कि हम अपने पेट की सभी बातें खोलकर कहें। मैं अपनी भूल को स्वीकार करता हूँ। भविष्य में इसे भूल जाऊँगा कि मैं तुमसे पाँच वर्ष बड़ा हूँ। मैं अपनी आशा और भय दोनों को उसी समय तुम पर प्रकट कर दूँगा जिस समय कि उनका मेरे हृदय में उदय होगा।"

मैं—"तो आप समझते हैं कि शायद अमेरिकन हमें न मिलें।"

हरि—"नहीं, मुझे विश्वास है कि वे जरूर आयेंगे, किन्तु यहाँ आशा सौ हिस्से में एक हिस्सा नहीं आने के पक्ष में भी है। यही कारण है कि मैं बराबर कोई और तदबीर ढूँढ़ने की फिकर में हूँ।"

मैं—"छोटी नाव।"

हरि—"छोटी नाव ? तीन हम, उस पर रसद ! और फिर महान् अटलांटिक से युद्ध ! और, जबकि समीपतर भूमि सैकड़ों कोस दूर ! सोचो माधव, तुम्हें मालूम हो जायगा।"

मैं—"तो 'पुष्पक' ? बूढ़े भगेलू को उस पर डालकर ताला बन्द कर दो। भाप तैयार कर लो, लंगर उठा लो और इस मायाजाल से बाहर।"

हरि (मुस्कुराकर)—"प्रत्येक नौसैनिक अफसर को कुछ इंजीनियरिंग जानना लाजिमी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है; किन्तु सौदागरी-नाविक-अफसर के बारे में यह बात नहीं है। हम तीनों में से किसी को भी इसका जरा भी ज्ञान नहीं है। फिर पुष्पक को इस भयानक गुफा के मुँह में डाल देना कितना साहस है ?''

यह हरिकृष्ण की प्रकृति थी। आप उनसे बात कीजिये, उनके उत्तर में सदा सारे ही पहलुओं पर विचार करने का निष्कर्ष पाइयेगा। उन्होंने शान्त-भाव से कहा—

''यद्यपि यह भयंकर साहस की बात है, तथापि इसका भी समय आयेगा। लेकिन अभी नहीं माधव, मेरे भाई, उस समय हम पंख जमा कर उड़ेंगे। बीस वर्ष यहाँ बन्द होने के लिये नहीं रहेंगे। किन्तु अभी वह समय नहीं। मेरी समझ में अमेरिकनों को एक मास देना चाहिये। इसी बीच में ऋतु भी कुछ अनुकूल आ जाती है।''

आह ! उन्हें इतना दृढ़, इतना परिस्थिति पर काबू वाला, इतना गम्भीर विचारक, इतना स्थिरसंकल्प देखकर मुझे कितना आनन्द हुआ। इस सत्यता ने मुझे बड़ी शान्ति, मानसिक सन्तोष प्रदान किया। मानो वह सर्वव्यापक हृदयद्रावक रहस्य एक बार मेरे सामने से मैदान छोड़ भागा। उन्होंने मेरी आँखों में परिवर्तन के चिह्न देखे, तब फिर कहा—

''यहाँ एक और भी प्रश्न है। क्या चुपचाप बैठे यहाँ प्रतीक्षा करने के बदले, हम लोग कुछ और कर सकते हैं ? देखो, यह रहस्य हमारे साथ है, चौबीसों घंटे साथ है। यह दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। मालूम होता है, यह एकदम हमारे ऊपर गिरकर हमको चूर-चूर कर देना चाहता है। आधी रात को मैं जागता हूँ। उस समय, मैं समझता हूँ, यदि तुम पास न होते, तो शायद चिल्ला उठता। यही चित्त की विलीनता का आरम्भ है। इसी ने बेचारे भगेलू की वह दशा की है।''

मुझे अब मालूम हुआ कि हरिकृष्ण की भी आन्तरिक दशा मेरे सदृश ही थी, किन्तु उन्होंने इतनी गम्भीरतापूर्वक ग्रहण किया था कि बाहर कुछ पता नहीं लग सकता था। मैंने तो समझा था कि वह बिल्कुल अनभिज्ञ और बेपर्वाह हैं।

उन्होंने फिर कहा—''इसी वजह से तो मैं समझता हूँ कि यदि एक पक्ष और हम लोग इसी प्रकार रहे, तो वह जादू हम पर असर किये बिना नहीं रहेगा।''

मैं—''क्या ? आपका अभिप्राय यह है कि आप-हम चलकर किसी कुंजी का पता लगायें।''

हरि—''हाँ, यही। क्यों न ऐसा किया जाय ?''

यही बात मेरे दिमाग में भी चक्कर लगा रही थी। इसीलिये मैं हरिकृष्ण के चुपचाप बैठकर प्रतीक्षा करने पर अत्यन्त असन्तुष्ट हो गया था। मुझे यह आशा न थी कि वह मुझसे सहमत होंगे। मैं अब उनके मुँह की ओर बड़ी उत्सुकता-भरी दृष्टि से देखने लगा।

हरि—''इस यात्रा के लिये एक सप्ताह काफी है। यदि इस बीच में अमेरिकन यहाँ आ गये तो तब तक अपना खोज का भी काम करेंगे और हम देख-भाल कर लौट भी आयेंगे।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैं हृदय से इस प्रस्ताव के पक्ष में था। मेरे दिल में उस समय तक एक अभिमान की हल्की लहर-सी भी उठी। मैंने कहा—क्या हम भारत-सन्तान होकर चुपचाप बैठे रहें, और जो हमारे करने का काम है, उसे अमेरिकन कर लें।

"किन्तु खतरा, इसमें सन्देह नहीं, उतना ही हमारी राह में भी था, जैसा अगलों की में।"

हरि—"हाँ, ठीक है, भाई! किन्तु उसमें इतनी शक्ति नहीं है कि तुमको या मुझे आगे बढ़ने से रोक रक्खें। मैं पुर्तगीजों की शैतान वाली कहावत पर विश्वास नहीं करता। मेरा विचार है कि यहाँ कोई और भी बड़ा भारी गर्त है जिसमें धोखे से सारे ही पुष्पकारोही जा पड़े। किन्तु हम भुक्तभोगी हैं। हमें हर वात का पद-पद पर ख्याल रखना होगा। यदि इतने पर भी विपत्ति आती है, तो आने दो। इस कायरतापूर्ण आतम-समर्पण से वह मृत्यु भी अच्छी होगी।"

"हाँ! सचमुच हमें वैसी गलती नहीं करनी होगी।" अब चूँकि खुले दिल से बात करने की प्रतिज्ञा कर ली थी, इसलिये कुछ देर और निस्संकोच भाव से महाप्रस्थान के प्रत्येक अंग पर वार्तालाप किया और तब जाकर हमने अपना इरादा भगेलू से कहा।

हम लोग जभी उसकी नजर से वाहर जाते थे, मालूम होता है, वह हमें भूल जाया-सा करता था। किन्तु यह अच्छा था कि हमारे सम्मुख आते ही वह फिर वही प्रेममय व्यवहार करने लगता था। उसने अपनी राम-कहानी के अनेक अंश दुहरा-दुहरा कर कई बार कहे। उसे यह मालूम ही न होता था कि उसने उन्हें पहिले कहा है। किन्तु उसके अतिरिक्त और कुछ जानने के लिये किये गये हमारे सारे ही प्रश्न निष्फल हुए। उसने महाराज, जहाज के साथियों और पुराने दिनों के विषय में बहुत-सा कहा, किन्तु पिछले बीस वरसों के मामले में उसकी स्मृति कोरी थी। जादू ने उसके ऊपर वह सब बहुत पहले ही कर दिया था जो कि वह हमारे ऊपर अब करने जा रहा था।

हरिकृष्ण ने उससे कहा—"महाराज से मिलने के लिये हम जाना चाहते हैं, तुम्हारी क्या राय है? आज दोपहर के बाद हम इसी पर विचार कर रहे थे।"

भगेलू ने इस पर बड़ी शान्तिपूर्वक विचार किया। फिर थोड़ी देर के बाद उसके चेहरे पर आनन्द की आभा-सी प्रकाशित होती दीख पड़ी।

उसने कहा—"यह बहुत ही स्तुत्य विचार है बाबू, मुझे निश्चय है कि महाराज इससे बड़े प्रसन्न होंगे। आप शायद महाराज के बहुत-से नमूनों को ले आने में मदद कर सकेंगे। मुझे डर है, अब तक उनके पास उनका एक बड़ा ढेर जमा हो गया होगा।"

हरि—"हाँ, ठीक! किन्तु रास्ता बड़ा बीहड़ है, सम्भव है हम किसी दूसरी ओर निकल जायें और महाराज को न पा सकें। उनके ढूँढ़ने में बहुत दिन लगें। इसके लिये हमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रसद साथ ले जानी होगी। कम से कम एक सप्ताह के लिये हमें तैयार होकर जाना चाहिये। क्या आप हमें इतने दिनों का पाथेय साथ ले जाने की आज्ञा देते हैं?''

थोड़ी देर तक मितव्ययिता ने उसको मानो रोक देने की कोशिश की। किन्तु अन्त में उसने कहा—

''आपको बहुत ज्यादा नहीं ले जाना चाहिये, किन्तु आवश्यक सामग्री ले जाने में तो कोई हर्ज नहीं। वह तो यहाँ रहने पर भी खर्च करनी पड़ती। आप बाबू, जितना चाहें उतना ले जायें, मुझे पूरा भरोसा है कि महाराज भी ऐसा ही चाहेंगे।''

हरि—''तो ठीक। अब हम जहाज पर जायें; वहाँ से यात्रा की आवश्यक वस्तुएँ एकत्र करें।''

इसके बाद हमारा दो घंटा चीजों को एकत्र करने में बीता। बूढ़े भगेलू को अनेक धन्यवाद है कि उसने 'पुष्पक' पर सभी सामग्रियाँ उसी क्रम से रहने दी थीं। सबकी सूची और स्थान को खोज पाने में हमको देरी न हुई। हम लोग इसके लिये बड़े सावधान थे कि उस चीज को न लें जिसके बिना भी हमारा काम हो सकता है और उसे छोड़ न जायें जिसके बिना काम में बाधा पड़े। इसके लिये बल्कि दो दिमागों की उपस्थिति बहुत अच्छी हुई। कितनी ही बार हम हँस पड़ते थे जब उन चीजों को हाथ में लेते थे जिनके लेबिल पर पटना, वाराणसी और आगरा की किसी दूकान का नाम पाते थे। हमारी ही भाँति वह भी सुदूर उस सुनहरी भूमि से आये थे, उनके भाग में भी यही बदा था कि इस प्रकार बीस वर्ष पुष्पक पर बिता कर, फिर हम लोगों के सहायक हों। सचमुच ''दाना छितराना तहाँ जाना जरूर है।''

खाने-पीने की चीजों के अतिरिक्त हमने वहाँ से दो तमंचे और कई दर्जन कारतूस भी जरूरत के वक्त के लिये। सब चीजों को आसानी से ले चलने के लिये उन्हें स्वयंसेवकी झोलों में खूब ठीक तरह से रख दिया। इन दो गठरियों के अतिरिक्त एक गठरी कम्बलों की भी बनाई, क्योंकि रात को सोने के लिये इनकी आवश्यकता होगी। यद्यपि शीत ऋतु बीत गई थी, तथापि खुली जगह में सोने के लिये रात अब भी ठण्डी थी। यह सब बोझ इतना ही था कि जिसे लेकर हम आगे बढ़ सकते थे। यद्यपि कहीं-कहीं चढ़ाई में शायद कुछ अधिक तकलीफ होगी, तथापि इस ख्याल से कि दिन पर दिन तो यह कम ही होता जायगा, हमने उसे और कम करने की आवश्यकता न समझी। हरिकृष्ण ने यह भी कहा—''यह आवश्यक नहीं कि सभी बोझ बराबर लादे ही फिरना होगा। मौका देखकर प्रत्येक दिन के विश्राम पर कुछ चीजें छोड़ते जायेंगे जिन्हें लौटते वक्त हम उपयोग में लायेंगे।''

हम लोगों ने अपनी गठरियों को किनारे लाकर भगेलू के सामने परवानगी के लिये रखा। यह भी तय पाया कि सबेरे नाव पर तीनों आदमी समुद्र के उत्तरी तट तक चलेंगे। वहाँ से हम दोनों तो आगे बढ़ेंगे, किन्तु भगेलू डोंगी लौटा ले आयेंगे। अब हम लोग बिल्कुल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक विचित्र दशा में अपने बिस्तरे पर सोने के लिये गये। मेरे दिल में बड़ा जोश और बड़ा ही आनन्द लहरें ले रहा था।

दूसरे दिन सबेरे जब मैं जगा तो उस समय इतना सबेरा था कि अभी और सब सोये ही हुए थे। मैंने किसी को जगाया नहीं। चुपके से बैठकर धोती और तौलिया उठाया और समुद्र में जाकर स्नान कर आने का इरादा किया। समुद्र पर अब भी वही नहुसत छाई थी। आज इतने दिनों के बाद मुझे पहाड़ियों के शिखरों के पिछले भाग में हल्की-सी पीली सूर्य-प्रभा दिखलाई पड़ी। यह दृश्य मेरे लिये कितना आनन्दप्रद था। इसने मेरे हृदय में एक प्रकार की गर्मी पैदा कर दी। मैं आनन्द में बेसुध की तरह किनारे गया, इस स्नान में यद्यपि कोई आनन्द न था। पानी मानो जमा हुआ था। उसमें हल्की-सी भी कोई लहर न थी। हवा बिल्कुल बन्द थी। मैं कपड़ों को किनारे पर रख, अन्दर घुसा। छाती भर पानी के भीतर जाकर खड़ा हुआ। मैं ख्याल कर रहा था कि पानी ठण्डा होगा, किन्तु मेरे आश्चर्य की सीमा न रही, जब मैंने देखा कि वह खासा गर्म है।

इसमें कोई सन्देह नहीं। यह बात आश्चर्यकर और आनन्दकर दोनों ही मेरे लिये हुई। नहाते समय मुझे राजगृह के गर्म कुंड याद आने लगे। मुझे यह ख्याल कर और भी आश्चर्य होने लगा कि मैंने इसे इतना गर्म कभी नहीं पाया था।

कुछ देर तक पानी की उष्णता बड़ी भली मालूम होती थी। किन्तु थोड़ी ही देर में मुझे उसमें भी ज्वार दिखलाई देने लगा। मैं इसके कारण पर नाना भाँति से विचार करने लगा। मैंने सोचा शायद यहाँ के पानी का यह स्वभाव ही हो। जब ज्वार की लहरें आकर इसे भर देती हैं, उस समय यह गर्मी मालूम होती। किन्तु उनके हटते ही पानी फिर अपने रूप में आ जाता है। लेकिन इस कल्पना को धीरे-धीरे मैंने भयावना रूप धारण करते देखा। इसलिये बेशी इस पर विचारना ही छोड़ दिया।

जिस समय मैं अपने बदन को मल रहा था, उसी समय मैंने एक और अद्भुत बात देखी। मुझसे कोई चालीस हाथ पर पानी में मुझे हलचल जान पड़ी। फिर क्रमशः छोटे-छोटे बहुत-से बुलबुले पैदा और विलीन होने लगे। पहिले मेरे दिल में ख्याल हुआ कि शायद कोई मछली हो, किन्तु थोड़ी देर में एक बहुत ही भारी बुलबुला जल-तल पर दिखलाई पड़ा। यह पहिले-पहिले आदमी के सिर के बराबर था, किन्तु जैसे ही वह मेरी ओर आता था, उसका आकार बढ़ता जाता था। मैं अपनी जगह से हटकर अब घुटने भर पानी में आ गया था। मैंने उसे बढ़ते-बढ़ते अपने पहिले आकार से दस गुना हो जाते देखा। इसके बाद वह एक-ब-एक फूट गया। मैंने देखा कि उसके भीतर कुछ न था। पीछे मुझे उसमें से एक प्रकार की गन्ध जान पड़ी, जो कि बड़ी अरुचिकर थी। गंध को तो मैंने जाना, किन्तु मुझे यह न मालूम हो सका कि वह किसकी थी। अभी मैं इस पर कुछ ख्याल दौड़ा ही रहा था कि मैंने पीछे से आवाज आती सुनी। देखा कि हरिकृष्ण बँगला से निकल आये हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैंने कहा—"पानी खासा गर्म है। क्या यह आश्चर्यंकर नहीं है?" उन्होंने कुछ भी आश्चर्य न प्रकट करते हुए कहा—"वाह! इसमें क्या है! हम लोग चारों ओर से इस प्रकार बन्द हैं। और शायद यहाँ गर्म-सोता होगा।"

"मैं—दक्षिणी ध्रुव से शायद?"

हरि—"इसके लिये मत, माधव, बाल की खाल निकालो। ठंडा होने से इसका गर्म होना ही अच्छा है। कितने ही आदमी इसे बहुत पसन्द करते हैं।"

इन बातों और आगे के कामों के कारण मैं उस भयंकर बुलबुले की बात ही कहना भूल गया। इसके बाद हम लोग नाश्ते और रास्ते की तैयारी में लग गये। एक घंटे के बाद हम यात्रा के लिये बिल्कुल तैयार हो गए। उस समय हमारा हृदय इतना हल्का था कि मानो किसी आमोद-विहार के लिये जा रहे हों। हम तीनों आदमी अब सामान लेकर डोंगी पर बैठे और उस रहस्यपूर्ण उत्तरी तट की ओर चले।

बूढ़ा भगेलू पूर्ववत् ही चुप और शान्त था। जैसे ही हम लोग विदा होंगे, जरूर वह हमें भूल जायगा और हमारे लौट जाने पर ही स्मरण कर सकेगा। हमारे जाते ही उसकी फिर वही बीस वर्ष वाली जिन्दगी शुरू हो जायेगी। जब हम लोग किनारे पर उतर गये और जब वह नाव लौटाने को हुआ, उसी समय उसने कहा—

"बाबू! कृपा करके एक बात मेरी ओर से कहना न भूलियेगा। जब आप लोग महाराज से मिलें, तो मुझे आशा है, आप अवश्य उन्हें समझा देंगे कि वह जो बोट बह गये, उसमें बूढ़े भगेलू का कोई कसूर नहीं था। वह रात को चले गये जब कि मैं मालिक की चीजों के पास सोया था। अगर दिन में या मेरे सामने जाते, तो मैं कदापि न जाने देता। याद रहेगा न?"

हरिकृष्ण ने उसे विश्वास दिलाते हुए कहा—"जरूर, हम अवश्य महाराज से यह बात कहेंगे, जैसे ही उनसे मुलाकात हुई। हम कभी नहीं भूलेंगे। मैं तुमको यकीन दिलाता हूँ कि महाराज इसके लिये तुम्हें कुछ भी नहीं कहेंगे। अच्छा वन्देमातरम्, भगेलू बाबा।"

भगेलू ने भी "वन्देमातरम्" कहा और अब वह नाव को फेर कर, उसी एकांत बँगले की ओर चला। हम उसको लौटते देख रहे थे कि उसी समय हरि ने कहा—"माधव! तुम समझते हो कि वह हमारी जुदाई से दुःखी हुआ होगा?"

मैं—"नहीं।"

हरि—"तो, खुश हुआ होगा?"

मैं—"नहीं, यह भी नहीं, तथापि—"

हरि—"हाँ, तथापि उसकी दृष्टि से मालूम होता था, मानो उसके सिर से कोई बड़ा बोझा उतर गया है। बेचारा भगेलू! हम लोगों ने आकर उसके कार्यक्रम में गड़बड़ी डाल दी थी। अब वह फिर उसी समस्त दिनचर्या का आश्रय ग्रहण करेगा।"

हमारा मुँह अब अपने रास्ते की ओर था। सारा ध्यान उसकी नीचाई-ऊँचाई और उससे गुजरे हुए यात्रियों के विषय में विचारने में लग गया। स्वयंसेवकी झोला एक कन्धे पर और दूसरे पर कम्बल। सामने वह मृत्यु का काला खोह था। उस समय समझदार जगत् का कोई आदमी हमें देखता तो क्या कहता?

———

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महापथ

जब हम गुप्त समुद्र और द्वीप के उत्तरी तट के बीच के चट्टानों पर कोई सौ गज वढ़े तो उसकी भयंकरता को देखकर हमने उसे 'महापथ' कहना आरम्भ किया। शायद यह दूरी पाँच मील भी न रही होगी, किन्तु यहाँ यात्रा की कठिनाई दूरी पर नहीं, बल्कि मार्ग की अवस्था पर अवलम्बित थी। उस महापथ के बारे में हरिकृष्ण ने कहा था—यहाँ भूमि है ही नहीं। भूमि न होने पर भी उन पाँच मीलों ने दस घण्टे का कठिन परिश्रम लिया।

शायद हमारी चाल असन्तोषजनक मालूम हो। किन्तु स्मरण करिये, आप अपनी किसी पहाड़ी यात्रा को—जैसे नैपाल जाते समय चन्द्रागढ़ी की चढ़ाई। यदि पहाड़ी मामूली हुई तो आप जरा देर में सौ गज चढ़ जायेंगे, किन्तु जो कहीं बीच-बीच में वड़ी-वड़ी चट्टानें हों, जिन पर कूद कर चढ़ न सकते हों; और आपको उनकी परिक्रमा करते हुए चढ़ना पड़ता हो तो पैर के नीचे के ढोंके भी मिट्टी से ढँके न हों, और हिलते हों तो आपके झोले में वीस, पचीस सेर का बोझ तथा कन्धे पर मोटा कम्वल हो तो यात्रा में अवश्य आपकी आँखें निकल आयेंगी। उस समय फिर आप हमारी कठिनाइयों का अनुभव कर सकेंगे। हमने अपने जीवन भर में कभी ऐसी भयानक और कठिन यात्रा न की थी।

पहिले घंटे या उससे थोड़ी देर बाद तक तो मालूम हुआ, श्वासरहित ढकेले जाते हुए, हमारी नसें पिसने और पिंडुलियाँ फटने लगीं। हमने सोचा कि यही हालत बराबर न रहेगी, कुछ ही देर में हम इन-चट्टानों को पारकर किसी अच्छी जगह पर आयेंगे। किन्तु थोड़ी देर की भिड़न्त से मालूम हो गया कि यहाँ परिवर्तन की आशा नहीं। तब हमने अपनी पागलों की-सी चेष्टा को वदल दिया। अब बकरी के वच्चों का-सा चढ़ना हमने अहितकर समझा। अब हम एक बार अपने रास्ते का दृश्य अन्त तक देखकर, जितनी भी आसानी और सावधानी से वढ़ सकते थे, वैसे ही बढ़ते थे। ऐसा करने से यद्यपि पहिले की तरह जल्दी नहीं बढ़ सकते थे, तथापि बढ़ने लगे आसानी से। इससे हम लोगों को जरा ढाढ़स भी बँधा। दोपहर तक हमने अनुमान किया, सात मील चले आये होंगे। सात मील की चढ़ाई और दो मील और चलना, पूरे नौ मील की यात्रा, इस पर हमारा थका-भूखा होना कोई बुरा न था। हम लोग वहीं बैठ गये, खजूर, टिकिया, नमकीन, सेब और शर्वत का अच्छा आनन्ददायक भोजन हुआ। सौभाग्य से इस महापथ पर जगह-जगह गड्ढों में हमें पानी मिलता जाता था, यद्यपि हमने भी अपनी छोटी कानविस की मशक पानी से भर ली थी।

मैं—"मुझे ताज्जुब नहीं होता कि क्यों विचारे रामकुमार ने अपनी घुट्टी तोड़ डाली।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरि—"और फिर उसने फिर कर इस रास्ते पर पैर नहीं रक्खा। वही बात रामप्रसाद ने भी की, याद है न ? सचमुच वे बड़े होशियार आदमी थे।"

मैं—"मैंने सोचा था कि यहाँ दूसरे मुसाफिरों का कुछ पता-निशान मिलेगा, किन्तु वह कहाँ से हो सकता है। बीस वर्ष का लम्बा अर्सा, तिस पर भी इस अक्षांश की कड़ी वृष्टि, भला इनके हाथ से कैसे कोई चिह्न बाकी बच सकता था।"

हरि—"कैसी वीरान, कैसी हृदय-विदारक यह जगह है ? पम्पासर के पास की पहाड़ियों के विषय में तो कहते हैं, सुग्रीव और वालि ने चट्टान फेंक कर लड़ाई की थी और उसकी पहाड़ी बन गई। किन्तु यहाँ ?"

मैं—"यहाँ मैं समझता हूँ, वह भयंकर खिलाड़ी ज्वालामुखी रहा है।"

हरि—"निस्सन्देह, यह टापू एक ज्वालामुखी का शिखर है। 'रेतीली खाड़ी' और 'गुप्त समुद्र' उसके दोनों क्रेटर (मुख-विवर) थे। इसकी फुफकार से निकले—यह गले पत्थर यहाँ इर्द-गिर्द जमे हुए हैं; अथवा यह किसी ऐसी पुरानी चोटी के टुकड़े हैं जो ज्वालामुखी से भी पूर्व यहाँ रही होगी और जिसके अन्दर खड़ी सुरंग बना ज्वालामुखी ने अपने अस्तित्व की दुन्दुभी बजाई होगी। सहस्रों वर्षों के तूफान, वर्षा और धूप ने इन्हें बहुत ही जीर्ण-शीर्ण कर दिया है, तो भी यहाँ अभी उनका बहुत अंश बाकी है। कुछ सहस्राब्दियों के और बीत जाने पर, यह घुल कर एक प्रकार की मिट्टी के रूप में परिणत हो जायेंगे, जो वनस्पति के लिये बड़ी उपकारक होगी।"

मैं—"हाँ ? ठीक, अब ज्वालामुखी भी सुप्त ही नहीं मृत है।"

हरि—"मैं भी वही कहूँगा, क्योंकि इसके सबसे अन्तिम प्रकोप को हुए दस हजार वर्ष बीत गये होंगे। जानते हो, अटलांटिक में ऐसे ज्वालामुखीय द्वीपों की एक माला है जो यथार्थ में किसी समय पर्वतों के शिखर थे। उसमें नीचे की ओर के सारे सुप्त हैं, किन्तु ऊपर उष्ण क़टिबन्ध वालों में से कितने ही अब भी जीवित-उग्र हैं।"

"गुप्त समुद्र का पानी आज सुबह गर्म था"—मैंने कहना आरम्भ किया, किन्तु हरिकृष्ण ने मुस्करा कर कहा—

"यह कोई असाधारण बात नहीं है, 'त्रिस्ता-दो-अकुन्' में एक झील है जिसका पानी कभी नहीं जमता, यद्यपि वह बहुत ऊँची हिमरेखा पर है। जब से इन टापुओं का पता लगा, बल्कि उसमें भी हजारों वर्ष पूर्व से इधर कोई भी जाग्रत ज्वालामुखी नहीं दिखाई पड़ा।"

बहुत समय नहीं बीता कि मुझे इसके लिये पर्याप्त प्रमाण मिल गया कि हरिकृष्ण यहाँ गलती पर थे—इतना पीछे तक कि 1963 विक्रमी में इधर एक पनडुब्बे ज्वालामुखी के जाग्रत होने का वर्णन प्रामाणिकता के साथ आप 'अटलांटिक नाविक' में पायेंगे। उससे अनभिज्ञ होने के कारण मैंने केवल तर्क के लिये कहा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"इन्द्रायुध के एक आदमी ने जो एक दिन कहा था कि उसने आकाश में एक लौ देखी, उन लोगों के इस द्वीप में पहुँचने से थोड़ा ही पहले ?"

हरि—"अरे वह भाँगे की लहर थी, मैंने कहा नहीं ? जाने दो।"

इसी समय मेरे दिल में उस भीमकाय बुलबुले की बात भी आई, किन्तु मैं अब भी उसे न कह सका और बाद उसकी जानकारी भी व्यर्थ थी।

उसी तरह चलते-चलते, सायंकाल को हम उस बड़ी पहाड़ी दीवार की जड़ में आ गये जो कि टापू की उत्तरी सीमा थी। इसी भीमकाय चहार-दीवारी के उस पार समुद्र था। जब हमने दाहिने और बायें से उस पर गौर करके देखा तो वहाँ कोई भी उपाय फाँदने का न था। वहुत-सी जगहों पर तो वह सीधी खड़ी थी और जहाँ कुछ तिर्छाई भी लिये हुए थी, वहाँ भी दस ही पाँच कदम का रास्ता था, उनके बाद फिर वही अलंघ्यता। उस समय मेरी दशा बड़ी निराशाजनक थी। मैं एक बार दिल से उस ख्याल को हटाकर दीवार के चारों ओर देखने लगा।

हरि—"आज अब हमें इसके सामने ही सो जाना होगा। सम्भव है प्रातःकाल की किरणें किसी नयी वात पर प्रकाश डालें। मेरी समझ में हमें जरा और पच्छिम की ओर खिसक जाना चाहिए, वहाँ अधिक टूट-फूट दिखाई देती है। रात्रि-विश्राम के लिये कोई सायादार आड़ की जगह हो तो अच्छा है।"

इसके अनुसार ही, हम लोग पश्चिम की ओर बढ़ चले, यद्यपि हम दिन भर के थके थे, तथापि हमें अपनी मंजिल सामने दिखाई पड़ती थी। इसलिये इस अन्तिम घड़ी में हमें वैसी कठिनाई नहीं मालूम हुई, जैसी की सुवह से जान पड़ी थी, बल्कि इधर का रास्ता भी बहुत कुछ अच्छा था।

मैंने ही पहिले-पहिल विश्राम-स्थान को ढूँढ़ निकाला। किन्तु मुझे उसके आगे की कुछ खबर न थी। वहाँ हमें कुछ ऊपर की ओर चालीस फीट चढ़कर एक टीले पर से जाना पड़ा। वहाँ एक चबूतरा-सा मालूम हुआ। हमारा रास्ता एक पानी का रास्ता था और चबूतरा पहाड़ी से गिरी चट्टानें थीं जो समय और ऋतु के प्रभाव से चबूतरे की तरह बन गई थीं। जिस वक्त मैं आगे-आगे चबूतरे की ओर चल रहा था, मैंने मालूम किया कि वहाँ पर चबूतरे की दीवार कुछ भीतर की ओर घुस गई है। मैंने समझा—हमारे विश्राम के लिये यह अच्छी छायादार जगह होगी, किन्तु मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ जब कि ऊपर चढ़कर मैंने देखा कि दीवार मेरे अनुमान से कहीं ज्यादा पीछे की ओर घुस गई है। मैं आखीर पर पहुँच कर चिल्ला उठा—

"गुफा, गुफा।"

निस्सन्देह यह एक गुफा थी, किन्तु यह एक ऐसी गुफा थी कि जिसका मुँह बहुत कुछ उन चट्टानों से ढक गया था, जो हजारों वर्षों से पहाड़ी से गिर रही थीं। चबूतरे से गुफा का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तल थोड़ा नीचे था। थोड़ी देर में हरिकृष्ण मेरी बगल में आ खड़े हुए। हम दोनों ने अँधेरे में झाँका। अन्त में उन्होंने कहा—

"अच्छा यह विश्राम के लिये बहुत सुन्दर जगह है—पानी, छाया और प्रातःकाल कुछ करने-देखने के लिये भी। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है, माधव, कि समुद्र तक पहुँचने के लिये यही एकमात्र रास्ता है।

मैंने कान लगाकर कहा—"मैं तो इधर से कुछ नहीं सुनता हूँ।"

हरि—"सो कैसे सम्भव है ? शायद वह एक मील दूर हो। लेकिन मुझे ताज्जुब है।"

मैं—"बहुत ठीक ?"

हरि—"शायद यह वही गुफा है जिसका जिक्र कप्तान ने किया है और पुर्तगीजों की कहावतों में भी है।"

मैं—"शैतान की गुफा ! ओह् ! आओ भी।"

हरि—"हाँ, क्यों नहीं। किन्तु कुछ भी हो, शैतान महाराज को हम सबेरे तक कोई तकलीफ न देंगे जिसमें कि वह हमारे ऊपर आँख गड़ायें। अब यहाँ एक रात विश्राम करो, फिर कल देखा जायगा।"

आग तैयार कर रखने का वह हमारे पास कोई सामान न था और उसकी आवश्यकता भी न थी। रात को हवा का नाम न था। मैंने तीन मोमबत्तियाँ निकालकर जलाईं और उन्हें गुफा के द्वार पर पत्थर के किनारे पर चिपकाकर रख दिया। हवा में गति न होने से टेम सीधी को जा रही थी, लेकिन हरिकृष्ण ने तुन्रत ही दो को मुँह से फूँककर बुझा दिया—

"तुम बेवकूफ लड़के हो, माधव ! हमें गुफा में जाने और लौटने के लिये इनकी बड़ी आवश्यकता होगी। तुम्हें पता है, वहाँ कितनी बत्तियाँ लगेंगी ? इस सन्नाटे में एक ही तीन के बराबर जलेगी। जब तक यह बुझेगी तब तक हम प्रगाढ़ निद्रा में पहुँच गये रहेंगे। अच्छा अब खाने का डौल करो।"

हमने दीवार की जड़ में थोड़ी जगह कम्बल से झाड़-झूड़कर साफ कर ली और फिर वहीं कम्बल बिछा दिये। डटकर आनन्दपूर्वक भोजन हुआ। इतने ही में अँधेरा-घुप हो गया। हम लोग वहीं कम्बल पर पैर फैलाकर लेट रहे। दिन भर की चढ़ाई-उतराई में हमारी एक-एक नस में मानो हजार-हजार फोड़े हो गये थे,अथवा किसी ने मुँगरी लेकर सारे बदन को खूब कूँच दिया था। यदि हम इतने थके न होते जिसके कारण ही नींद हमारे पहुँचने से पहिले ही वहाँ आकर मौका ताक रही थी, तो मैं समझता हूँ, उस भयानक अज्ञात गुफा और उसके निवासी का ख्याल आये बिना न रहता। हरिकृष्ण ने सोते समय कहा—"माधव ! भगेलू को देखा न !"

मैं—"हाँ, तो ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरि—"ख्याल किया, कितनी खबरदारी वह अपने सोने के कमरे का, जिसमें कि महाराज के नमूने रक्खे हैं, रखता था ? उसने सिर्फ एक बार हम लोगों को वहाँ ले जाकर दिखाया था।"

मैं—हाँ, वह बूढ़ा बड़ा ही विचित्र आदमी है।"

हरिकृष्ण ने इस पर कुछ बुदबुदाया, फिर तुरन्त ही मैंने देखा कि वह खर्राटा लेने लगा। इसके वाद मैंने उन्हीं का अनुकरण करना विचारा। इस बीच में एक वार मेरा ख्याल घर को दौड़ गया और अपने विद्यार्थी जीवन की घटनाएँ मेरे सामने आने लगीं। इसके बाद बीच ही में मैं निद्रामग्न हो गया, किन्तु वह ख्याल अब स्वप्न के रूप में परिणत हो गये। भिन-सहरे के समय स्वप्न में देख रहा हूँ कि मैं सबेरे छात्रावास से उठकर नालन्दा के विद्यालय के क्रीड़ा-क्षेत्र में बैठा हूँ। सूर्य की लाली पूर्व दिशा में छिटक रही थी ! गर्मी की ऋतु में हवा के ठण्डे-ठण्डे झोंके बहुत भले मालूम होते थे। मैं इन्तजार कर रहा था, मोहन के आने का। उसे देर करते देखकर मैं मन ही मन उसको कुछ कड़वी-मीठी कह रहा था। उसी समय मेरे कान में उसके स्नेहपूर्ण शब्द आये—

"माधव, हो !"

मैं नहीं कह सकता, स्वप्न में मैंने इसे कितनी बार सुना। किन्तु उसी समय मेरी निद्रा खुल गई। इसके लिये मुझे खेद हुआ। देखता हूँ, अब दिन का उजाला हो गया है, मोमबत्ती खतम हो गई है। मुझे उस वक्त कुछ भी ठण्डक नहीं मालूम होती थी। मैंने एक बार अपनी आँखों को मला और अँगड़ाई ली—

"माधव ! हो !"

फिर वही शब्द मेरे कान में आये। मैं हैरानी में पड़ गया कि क्या अब भी स्वप्न ही देख रहा हूँ ? मेरा जबड़ा नीचे को गिर गया। मेरे कानों में अब भी वही शब्द गूँज रहे थे। एक मिनट हो गया, दो-तीन मिनट हो गये—अबकी फिर एक बार वही शब्द स्पष्ट कानों में सुनाई दिया। अब मेरी तबियत घबराने लगी। सारे बदन पर रोमांच हो गये, मानो एक ठण्डी हवा का झोंका-सा मेरे शरीर में लग गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुर्दों की गुफा

"क्या है माधव ?"

हरिकृष्ण ने पूछा। वह मेरी चेष्टा को कितनी ही देर से देख रहे थे। मैंने सावधानी से अपने पैरों के बल बैठने की कोशिश की और काँपते स्वर में कहा—

मैं—"मैंने इसे सुना।"

हरि—"क्या सुना ?"

इस शान्त प्रश्न ने एक बार मेरे विकीर्ण विचारों को एकत्र करने में सहायता की। मैंने एक बार सिर उठाकर चारों ओर नजर डाली। क्या मैं सचमुच स्वप्न देख रहा था ?

मैं—"मैंने सुना जैसे कोई मुझे पुकार रहा है।"

हरिकृष्ण खड़े हो गये और बोले—"वह यही गुफा है, निस्सन्देह यह प्रति शब्दों से भरी है। हवा, समुद्र, गिरते हुए पत्थर, सभी की प्रतिध्वनियाँ इसमें भरी हैं। मैंने भी रात में कई बार उन्हें सुनते हुए अनुभव किया।"

मैं ठकुआ गया। मेरे होश एकदम उड़ गये। मेरे कानों में अब भी वह शब्द ज्यों का त्यों भरा था।

मैं—"वह सर्वथा वास्तविक था। जब मैं बिल्कुल जागकर उठ बैठा था, तब मैंने उसे सुना। वह मेरे एक बालमित्र की थी।"

हरि—"ठीक, किन्तु स्वप्न भी बाज वक्त बड़े विचित्र रूप में आते हैं, नहीं मालूम ? अच्छा अब चलो चलें उस गड्ढे पर, वहाँ शौच से निवृत्त हो 'स्टोव' जलाकर थोड़ा गर्म दूध और नाश्ता तैयार करें, फिर बात करेंगे।"

कम्बलों को चौपर्त कर अब हम पानी के किनारे गये। वहाँ से हमें कल के रास्ते का कुछ भाग दिखाई दिया। हम लोगों ने एक बार नजर फैलाकर उधर देखा। कल के परिश्रम पर हमें कुछ सन्तोष और हिम्मत हुई। मुझे ख्याल हुआ कि मैंने सचमुच मोहन की आवाज नहीं सुनी। रात को सोते समय जो ख्याल किया था, ज्ञात होता है, उसे ही मैं स्वप्न में देखने लगा। इसी बीच कोई अस्पष्ट शब्द गुफा से मेरे कानों में आया होगा जो मुझे मोहन की आवाज मालूम हुई। बहुत दिनों से प्यारे मोहन को मैंने नहीं देखा। मेरी तबियत उससे बहुत मिलने को कर रही है सही, किन्तु यहाँ कहाँ उसकी सम्भावना ? सचमुच, कैसा अच्छा होता, जो इस समय मोहन हमारे साथ होता ! उसे इस यात्रा से बड़ा आनन्द आता !

जब खाने बैठे, तो मैंने सब बात कही। कैसे हम स्कूल में रहते थे ? कैसे जब हम दोनों छोटे-छोटे थे तो अपने गाँव के तालाब के किनारे खेलने चले जाते थे। कभी-कभी आँख...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खेलते-खेलते हमें बड़ी देर हो जाती थी, तो किस प्रकार कमला मेरी बहन और सोहन के पिता हमें पकड़ कर ले जाते थे। मोहन के पिता कहते थे—जो फिर इस तरह देखा, तो बच्चू कान उखाड़ लेंगे। किस तरह जब हम पढ़ रहे थे, तभी हमें काम की ओर आने की आवश्यकता हुई। किस प्रकार हम दोनों कलकत्ता में जहाज के काम में भरती हुए। जहाँ से हमारा 'इन्द्रायुध' तो ब्राजील और अर्जेन्टाइन की ओर आया और उसका जहाज आस्ट्रेलिया को। आह ! कितना मैं दुःखी हुआ था, जब हम दोनों एक-दूसरे से अलग हुए।

हरि—"हाँ, मालूम हुआ, कैसे तुम दोनों बैठ-बैठकर खेला करते और तरह-तरह के स्वप्न देखा करते थे। अन्त में जीवन की बाढ़ आई। उसने तुम दोनों को बहाकर समुद्र में पटक दिया। कभी वह भी दिन आयेगा जब फिर वही बाढ़ तुमको यहाँ से निकालकर किनारे पहुँचा देगी। अभी क्या होगा, कौन जानता है ?"

मैं हरिकृष्ण के मुँह की ओर देखने लगा। उन्होंने हँसकर कहा—"क्या है ? मेरे ख्याल भी उसी प्रकार दूर-दूर का सफर कर रहे थे, जैसे तुम्हारे। मैं तुमसे छिपाना नहीं चाहता माधव ! मेरे दोस्त, हृदय में बराबर एक व्यक्ति बस रहा है, किन्तु यह पुराने दिनों का कोई बालमित्र नहीं है ! हाँ—वह एक लड़की है जिसे मैंने एक बार और सिर्फ एक बार अपनी जिन्दगी में देखा है। यहाँ तक कि उसका नाम तक भी मुझे मालूम नहीं।"

मैं—"क्या ? एक लड़की ?"

हरि—"हाँ, प्यारे माधव ! एक लड़की। सुनो मैं उसके बारे में कहने जा रहा हूँ। तुम्हें मालुम है न, मैं मुम्बासा 'इन्द्रायुध' में सवार हुआ। पहिले मैं कलकत्ता के 'तिलक' में काम करता था। मुझे कलकत्ता छोड़े छै मास हो गये। उसी समय एक दिन अपने जहाज के मालिक की कोठी पर धर्मतला गया। किन्तु वहाँ मालुम हुआ कि सेठ इस समय अपने घर पर तुलापट्टी में आने को कह गये हैं। मैं जब उनके घर पर पहुँचा तो अभी सेठजी भोजन कर रहे थे, इसलिये मुझे थोड़ी देर बैठ जाना पड़ा। मुझे ख्याल है, वहाँ एक लड़की थी। उसने मुझे बड़े आदर से एक कुर्सी बैठने के लिये ला दी तथा समय अच्छी तरह बिताने के लिये 'भारत मित्र' की एक प्रति भी ला दी। उसने यह कार्य इतने खूबी से किया तथा वह इतनी स्वच्छ, सुन्दर और मधुर थी कि जिस समय वह वहाँ से हटकर दूसरे कमरे में चली गई जहाँ कि वह सेठजी की बालिका को पढ़ा रही थी, तो मेरा चित्त समाचार-पत्र की ओर न जाकर उसी की ओर जाने लगा। उस दिन के बाद, जब कभी भी मैं अपने काम से छुट्टी पाता हूँ, तो एकान्त में अवश्य मुझे उस युवती का ध्यान आता है। अब भी जबकि मैं सो गया था, मेरे सामने उसकी वही मनोहारिणी मूर्ति आविर्भूत हुई। उसके वही मधुर बर्ताव अब भी थे। मैं इसी आनन्द में मग्न था, किन्तु इसी बीच मेरी निद्रा खुल गई।"

मैं—"हाँ ! यह एक बड़ी मनोहर कथा है। क्या आप फिर भी उससे मिल सकेंगे ? अच्छा, उस कोठी का नाम क्या था ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरि—"कोठी लक्ष्मीशंकर माधवदास। हाँ, मुझे आशा है कि मैं फिर उसे देख सकूँगा। किन्तु उसके वहाँ बराबर रहने में सन्देह है। अगर उसे कोई उससे भी अच्छी जगह मिल गई, तो वह वहाँ चली जायेगी।"

मैं—"उसकी सूरत कैसी थी?"

हरि—"पतली, मेरे कन्धे के बराबर होगी। बड़ी-बड़ी आँखें और काले लम्बे बाल। उसके नेत्र, ललाट और नाक बिल्कुल तुम्हारे ही सदृश थे। यही कारण है कि बहुधा तुम्हें देखते हुए मेरा चित्त उसकी ओर चला जाता है। उसका स्वर कोमल और साफ था। उसकी मुस्कुराहट मधुर और अकृत्रिम थी। वह आपादचूड़ एक देवी थी।"

मैं—"उँह, यह सभी लक्षण अस्पष्ट हैं। क्या वह अच्छे कपड़े पहिने थी? उसकी शरीर पर आभूषण थे?"

हरि—"यद्यपि उसके कपड़े बहुत स्वच्छ थे, तथापि उनमें कोई तड़क-भड़क न थी। हाँ, मैं भूल गया, उसके गले में चार अशर्फियों की एक हमेल थी। मुझे खूब ख्याल है, वह अशर्फियाँ अकबरशाही थीं।"

मैं—"बस-बस मालूम हो गया। वह चारों अशर्फियाँ मेरी प्यारी माता ने मेरी बहिन को दी थीं। कमला मेरी बहिन उसको प्राण के समान रखती है। जब मैंने एक दिन उसे उसके कंठे जुड़वाकर पहिने हुए देखा, तो मैंने कहा भी—बहिन, अब यह तेरी खास पहिचान होगी। मेरी बहिन कितने ही दिनों से सेठ लक्ष्मीनारायण की कन्याओं को पढ़ाती है। मेरी ही शिक्षा-दीक्षा के लिये उसने यह नौकरी कर ली थी। सेठ जी मेरे पिता के तभी से बड़े मित्र थे जबकि वह कलकत्ता में एक समाचार-पत्र के सम्पादक थे। वह कमला को अपनी कन्याओं के समान मानते हैं। सचमुच हरि! वह ऐसी रूप-गुण-सम्पन्ना है। मैं और वह दोनों अपनी माँ को पड़े हैं।"

हरि ने बड़े ही आश्चर्य के साथ कहा—"सच? ऐसा माधव।"

मैं—"यदि फिर भी हम 'इन्द्रायुध' पर जा सके, तो मैं तुम्हें उसके पत्र दिखाऊँगा।"

हरि—"धन्य सुयोग! तुम्हारी कोठी का नाम पूछते ही मुझे सन्देह होने लगा था कि शायद तुम्हें कुछ पता है।"

हमारी बात यही समाप्त हुई। अब हम लोग नाश्ता करके तैयार हो गये थे। मैंने देखा कि हरि कितनी ही बार मेरी ओर आश्चर्य-भरी निगाह से देखता था। अब हमारे सम्मुख गुफा में प्रवेश करने का सवाल था। हमारे दोनों में से किसी के भी दिमाग में यह साफ नहीं था कि क्या हम उसके अन्दर जाने का इरादा करते हैं। शायद हमारे दिमागों ने यह चकमा खाया था कि उस पर समुद्र में हमारी प्रतीक्षा में कोई जहाज खड़ा है। हमने यद्यपि अपने इस भाव को एक-दूसरे पर प्रकट नहीं किया, तथापि बिना कहे हुए ही हमने दिल में यह पक्का कर लिया कि गुफा को पार करना होगा बड़ी सावधानी और दृढ़ता से। शैतान वाली पुर्तगीजों की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरानी किम्वदन्ती अब भी हमारे दिमाग में गूँज रही थी। हम लोग चबूतरे पर चढ़ गये, फिर वहाँ से शनैः-शनैः गुफा के भीतर उतरे।

यह एक रास्ता था जो दिन की गर्मी और प्रकाश से अनन्त रात्रि के अन्धकार और जादू की ओर ले जाता था। कोई तीस-चालीस गज तक दिन के उजाले ने अपने छोटे से छोटे रूप में हमारा अनुसरण किया। इससे विमुक्त होते ही हमारे दिल ने न जाने कैसा महसूस किया। चलने में फर्श ऊबड़-खाबड़ और खुर-खुरा जान पड़ा। हरि ने खड़े होकर कहा—"अब हमें रोशनी की जरूरत है, नहीं तो आगे बढ़ने में खतरा है। अगर मशाल होते तो इस समय अच्छा होता। देखो न अँधेरा कितना गाढ़ा है? मोमबत्ती यहाँ के लिये बहुत दुर्बल है। अच्छा, दो बत्ती एकसाथ जलाओ। इन्हें एक हाथ में उठाये ले चलो। जब तुम्हारा हाथ थकने लगे तो कहना, फिर मेरी बारी आयेगी।"

तब हम लोग धीरे-धीरे आगे बढ़े। रोशनी सचमुच धीमी थी। किन्तु हम लोग बहुत ही पास-पास चल रहे थे। थोड़ी ही दूर आगे चलने के बाद मुझे अपने इस प्रयत्न पर आश्चर्य होने लगा। मैं कौन-सी मूर्खता में पड़ गया हूँ? मैं क्यों इस प्रकार अपने समय और शक्ति को बर्बाद कर रहा हूँ? हमको अन्त में अपने किये पर पछताना होगा।

गुफा का दृश्य—एक आश्चर्यकर जादू-भरा दृश्य है। मेरे दिल में इस प्रकार के भाव उठने शुरू हुए, किन्तु पहिले ही दस मिनटों के बाद वह सभी विलीन हो गये। अब हमें उस अर्द्ध-अन्धकार में कभी खिसकना, कभी आगे-पीछे चलना, कभी एक पंक्ति में कदम बढ़ाना पड़ता था। कभी हमारी बगल में गुफा की दीवार होती थी और कभी पानी का रास्ता, जो अब सूखा था। कभी हम छोटे-छोटे पत्थरों पर चलते थे और कभी घुट्टी डूबने भर बालू पर जो कि शायद समुद्र के किनारे की-सी थी। बीच-बीच में हरिकृष्ण किसी-किसी पत्थर की ओर झुक कर देखने लगते थे, किन्तु मैं बराबर अपने ध्यान को मोमबत्ती और अपने पैरों ही पर रखता था। सन्नाटे का आधिक्य इतना था, चारों ओर के अन्धकार का ख्याल इतना डरावना था कि आखिरकार मैं डरने लगा। हाँ, सचमुच मैं डरने लगा। मैं इसके लिए लज्जित नहीं हूँ।

यही कारण था कि मैंने बातचीत करना आरम्भ किया जिसमें कि मेरे ऊपर से भय का प्रभाव कम हो जाय। यद्यपि हरिकृष्ण मेरे साथ छाया में चल रहे थे, तथापि उन्हें बात करने की इच्छा नहीं थी। मैंने पूछा—

"आपको उम्मीद है कि कोई और भी कभी इस गुफा से आया होगा? कोई चिह्न आपको इसका मिला?"

मैं अपने शब्दों की प्रतिध्वनि सुनकर भौंचक्का-सा हो गया। मालूम होता था, उसने मीलों तक तार बाँध दिया है।

हरिकृष्ण ने सिर थामकर कहा—"ऐसा सम्भव नहीं प्रतीत होता।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह मनुष्य के हाथ की रचना नहीं है। निस्सन्देह, किसी ज्वालामुखी की हलचल ने इसका निर्माण किया है। यह सुप्त ज्वालामुखी की एक नाड़ी है। हम लोग एक महान् आग्नेय पहाड़ी की खोखड़ में घूम रहे हैं।

हम लोग थोड़ा और आगे बढ़े। अब भी हम वैसे ही अन्दर की ओर जा रहे थे। गुफा की बनावट में भी हमें कोई परिवर्तन नहीं जान पड़ा। यहाँ चौड़ाई बहुत ज्यादा थी। अब हम बीच में चल रहे थे। नजर डालने पर हमें अगल-बगल की दीवारें दिखाई पड़ती थीं और छत इतने ऊँचे पर थी कि अन्धकार से हम उसे पृथक् नहीं कर सकते थे। किन्तु एक बात सन्तोष-जनक थी, हवा यहाँ पर्याप्त थी। यद्यपि कहीं-कहीं इसमें कुछ भारीपन था, तथापि साधारण-तया वायुमंडल शुद्ध था। वायु दोनों ही छोरों से आती मालूम होती थी जिसमें समुद्र की ओर से इसकी गति स्पष्टतर थी।

हम इस घने अन्धकार में बीस मिनट तक चलते रहे। अभी तक कुछ भी न दिखाई पड़ा। हरिकृष्ण ने अनेक बार पत्थरों और पैर के नीचे से बालुओं को लेकर परीक्षा की, तो भी वहाँ विचारणीय कोई बात न थी। एकाएक हमारे हृदय को धक्का-सा लगा। हममें से एक ने किसी चीज को ठुकराया जिसकी आवाज किसी धातु की पत्थर से टकराने-सी मालूम हुई। मेरे दिल में इसके लिये बहुत ख्याल न था, किन्तु हरि ने कहा—

मैं एकदम खड़ा हो गया। हरि ने कहा—

"हटना मत, मालूम होता है, तुमने कुछ गिरा दिया।"

मैं—"नहीं तो, शायद किसी चीज को ठुकराया है।"

तब वह फर्श पर ढूँढ़ने लगे। मैं खड़ा हो प्रकाश दिखलाने लगा। वहाँ कुछ चमकीला, अथवा फौलाद की तरह नीला दिखलाई दिया। किन्तु ठीक उसी समय हरि ने कोई चीज उठा ली।

हम दोनों आदमी उस पर झुककर देखने लगे। पहिली दृष्टि में हमें पहिचान मिली कि वह क्या चीज है। यह भूरे रंग की पतली स्वास्तिक के आकार की कोई चीज थी। किन्तु जब हमने गौर करके देखा तो हमें वास्तविकता का पता लगे बिना न रहा। यह एक प्राचीन छूरा था जिसकी मूँठ पर तलवार की भाँति कब्जा लगा हुआ था। इसके फल का बहुत भाग मुर्चा लगकर गल गया था, इसलिये इसके पहिचानने में और भी दिक्कत थी।

मैंने हरिकृष्ण के हाथ को, जिस पर वह चीज थी देखा, कि हिल रहा है। यहाँ एक सच्चा साक्षी मिला। हमको पता लगा कि हम ही अकेले इस गुफा के पता लगाने वाले नहीं हैं, किसी और ने भी हमसे बहुत पहिले इसमें कदम रक्खा था। हम अब एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

मैं—"मालूम होता है किसी नाविक का छूरा है।"

हरि—"हाँ, या पुराने समय के किसी सैनिक की तलवार है। इन दोनों में से कोई एक चीज अवश्य है, और यहाँ शताब्दियों से पड़ी है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैं—"हैं, शताब्दियों से ?"

हरि—"क्यों। नही देखो इसकी अवस्था को। यह जगह सर्वथा शुष्क है, यहाँ सीड़ नहीं है। ओह ! यह अवश्य शताब्दियों से पड़ी-पड़ी, माधव, यहाँ हमारी बाट जोह रही है।"

मैं इस पर हँस पड़ा। थोड़ीं देर तक और हम उसको देखते रहे। किन्तु वहाँ और किसी बात का पता न था। उन्होंने कहा—

"हम लोग, साफ करके, इसकी परीक्षा करेंगे किसी वक्त। उसे हरि ने अपने पाकेट के हवाले किया और यात्रा फिर शुरू हुई।"

यद्यपि चाकू हमसे कुछ न बोला, तथापि इसने हमारे ऊपर एक खास प्रभाव डाला। अगर हमने इसे न पाया होता, तो शायद हम बहुत आगे न बढ़ सके होते। किन्तु जब हमने कोई चीज पाई तो हमें आशा होने लगी कि आगे शायद और भी कुछ मिले। अब एक नई उत्सुकता और नई उमंग से आगे बढ़ने लगे। मैंने देखा कि मेरी मानसिक कठिनाइयाँ और सन्देह सब न जाने कहाँ चले गये। अब पीछे के ख्याल की जगह हमारे चित्त में आगे का ख्याल आने लगा। अब दूसरी बार हमें क्या मिलेगा ?

इसी अवस्था में जब हम आगे बढ़ रहे थे तो हमारी यात्रा का एक विशेष स्थान हमारे सामने आया।

हमारी अगल-बगल अभी कोई जानने योग्य परिवर्तन नहीं आया था। अब भी घनीभूत अन्धकार हर चीज को ढाँके हुए था। अब भी वही गहरा प्रतिध्वनिक, गुम्बद, वही रोमाञ्चकारी वायुमंडल, वही विस्तृत पथरीला घर था जिसमें सूर्य का प्रकाश कभी नहीं गया। रास्ता अब सीधा जाना मालूम होता था। यदि यह किसी बहुत बड़ी वक्र आकृति का खंड हो तो नहीं कह सकता। मैं हैरान था कि कब तक हम इसी तरह चलते रहेंगे ? कितनी देर में समुद्र तक पहुँचेंगे ? शायद हरिकृष्ण भूल तो नहीं गये, वे कहते थे कि यह रास्ता टापू के किनारे समुद्र को जा रहा है। उस समय मैंने प्रश्न न किया। उस समय बात करने को मेरी इच्छा भी न होती थी।

अब गुफा, जो पहिले धीरे-धीरे ऊँचे की ओर जा रही थी, नीचे की ओर जाती मालूम हुई। नीचे की ओर उसका झुकना तीन मर्तबा में हुआ था। सबसे पिछले फर्श की बनावट समथर-सी मालूम हुई। यह फर्श प्रायः बीस गज तक रहा होगा। इसके बाद धीरे-धीरे अब फिर चढ़ाई शुरू हुई। हमारी रोशनी बहुत दूर तक न जाती थी, इसलिये थोड़ी-थोड़ी दूर पर ठहर जाना पड़ता था। वहाँ से आगे नजर डाल कर फिर आगे बढ़ते थे। जिस वक्त एक पत्थर पर खड़ा होकर मैं आगे देख रहा था और चाहता था कि अपना पैर आगे बढ़ाऊँ, उसी समय मेरी ऊँची की हुई मोमबत्ती से एक गड़हा-सा दिखलायी पड़ा। उधर देखते ही अकस्मात् मेरी दृष्टि एक ऐसी चीज पर पड़ी, जिसे देखकर मैं एकदम चिल्ला उठा।

हरिकृष्ण दौड़कर मेरे पास आ गये, उन्होंने पूछा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"क्या है ?"

मैंने बड़ी धीमी आवाज में कहा—"वहाँ उस जगह मैंने कुछ देखा है—प्रकाश।"

हरि—"प्रकाश !"

किन्तु 'वहाँ' ही सबसे अधिक अँधेरी जगह थी। वह बिल्कुल गुफा के दीवार के पास थी। उस अन्धकार और छाया की ढेर में यद्यपि हमारी निर्बल मोमबत्ती का प्रकाश अशक्त था, तथापि मैंने कहा—

"हाँ, एक प्रकार की झलक ?"

हम दोनों ने खड़े होकर अँधेरे की ओर देखा। मेरा हृदय दहलने लगा।

हरि—"अच्छा, लेकिन मैं कुछ नहीं देखता हूँ। वत्ती को थोड़ा ऊँचा उठाओ तो।"

मैंने दोनों मोमबत्तियों को अपने सिर से और ऊपर उठाया। अब की फिर मैंने प्रकाश—अद्भुत प्रकाश देखा, जो अन्धकार के बिल्कुल मध्य से आ रहा था। वह झलक, ऐसी आश्चर्यकर प्रकाश वाली, सूक्ष्म तथा तेज थी कि मैं कठिनाई से ही उसको देख पाया। चाहे वह कुछ भी रही हो, किन्तु यह तो निस्सन्देह था कि वह जंगली जानवर की टिम-टिमाती आँख न थी।

मैं—"वहाँ ! आपने देखा ?"

हरि—"मैं कुछ नहीं देख पाया।"

मैं—"वहाँ क्यों ? वही तो अबकी फिर थी। मालूम होता है कि कोई चमकीली चीज थी जिसे मोमबत्ती के प्रकाश ने पकड़ लिया। शायद कोई काँच का टुकड़ा था।"

हरि—"ओह ! कोई चमकीली धातु का टुकड़ा या शायद स्फटिक खंड रहा होगा। अब मैंने समझा। चलो, नजदीक चलें।"

अब ज्ञात हुआ कि वहाँ कोई भय करने की चीज नहीं है। मेरी भी हिम्मत अब कुछ बढ़ चली। इसलिये हम तीसरी पैंड़ी पर बढ़े। उसके बाद एक पंक्ति में फिर गड़हे के फर्श पर। एक बार फिर जब मैं घूमा तो फिर मुझे वही चमक दिखाई पड़ी। थोड़ी देर में हम गुफा की दूसरी दीवार के पास आधी दूर तक चले गये।

हरिकृष्ण मुझसे आधा कदम आगे रहे होंगे। वे सावधानी से किन्तु निर्भयता के साथ आगे बढ़ रहे थे। एक-ब-एक वे अपनी जगह पर खड़े हो गये। उनका ठिठकना क्या था, मानो किसी ने मेरे हृदय पर हजारों मन का कोई पत्थर दे मारा। मेरी अकल हैरान और दिमाग परेशान हो गया। उन्होंने सामने वाले अँधेरे की ओर एक बार ख्याल करके देखा और मालूम होता था कि देखने के साथ ही मारे भय के अचेत होने लगे। उनके चेहरे का भयानक विकार उसी समय मालूम हो गया जिस समय उन्होंने अपनी गर्दन को मोड़ा। दूसरे क्षण वे पीछे की ओर हटे और झट मोमबत्ती मेरे हाथ से ले ली। जिस समय उन्होंने ऐसा किया,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसी समय मैंने नीचे की ओर देखा कि वह एक मृत शरीर के ऊपर खड़े थे। मैंने श्वास खींची और अपने पैर पीछे खींच लिये। किन्तु मैंने देखा कि वे भी मेरे साथ पीछे हट आये हैं।

हरि—"ठहरो, मुझे देखने दो।"

मैं आगे न बढ़ा और इसकी जरूरत भी न थी। अब हम उस अँधेरे के अभ्यासी हो गये थे। अब हमें उसमें की चीजें दिखलाई पड़ने लगी थीं। हमारे पैरों के करीब ही एक मृत मनुष्य का शव था जिसके शरीर पर नौसैनिक अफसर की वर्दी थी। वास्तव में यह शव नहीं था, जैसा कि मैंने पहिली दृष्टि में मालूम किया, यह एक मानव-कंकाल था—एक भयानक पैशाचिक हड्डियों का ढाँचा, जिसके ऊपर से मांस का एक-एक अणु न जाने कब का लुप्त हो चुका था। वह धरती पर पड़ा हुआ था। मुँह उसका ऊपर की ओर था। सिर की ओर बाँहों के सीधे फैले होने से उसकी लम्बाई और अधिक होकर भयानक प्रतीत होती थी। हरिकृष्ण जब सीधे आगे को बढ़ रहे थे, तो एक-ब-एक उनके पैरों के नीचे वही वस्तु आ गई थी जिसे वे देख न पाये थे। यदि वे पीछे से लौटते तो दूसरे ही क्षण उस पर गिर पड़ते।

कंकाल तो हर वक्त ही देखने में भयानक मालूम होता है, किन्तु खासकर उस अनादि अन्धकार की उस नीरवता में और उस परिस्थिति में? मैंने अपनी बत्ती ऊँची की। उस भयंकर दृश्य के सम्मुख मैंने अपनी बुद्धि और तर्क-शक्ति को शांत रखने का पूरा प्रयत्न किया। फैले हुए हाथों में से चमक आते देख, मैंने अनुमान किया—शायद यहाँ अँगूठी होगी। मैंने देखा कि वहाँ बगल में हथियार—रिवाल्वर, चाकू आदि पड़े हुए हैं।

हरि—"इधर देखो, यहाँ और भी कितने हैं।"

और भी! हाँ! वहाँ सचमुच और भी थे। जिस समय मैं उनकी अँगुली की ओर देखने लगा, मेरा सिर घूमने लगा। दूसरे भी? ओफ्! सारी जगह उनसे भरी हुई थी! उस टिमटिमाती रोशनी में दिखाई पड़ा कि वहाँ कंकालों का ढेर लगा है। उनकी आकृति से उनकी मृत्यु के समय की अवस्था ज्ञात हो रही थी। उनमें से किसी-किसी के ऊपर कपड़ा था और कोई-कोई सर्वदा नग्न। एक जमात तो दीवार के पास थी। यह मुंडरहित कवन्ध थे। उनके सिर उनके घुटनों के पास थे। न जाने कितने वर्षों से वे वहाँ पड़े हुए हैं। समय पाकर उनके स्नायु-बन्धन टूट गये और अब वह अंग-भंग दिखलाई देते हैं। दूसरे कितने, जिनमें कुछ झुककर एक पत्थर के सहारे घुटने टेके, मानो प्रार्थना कर रहे हैं। कोई-कोई स्वच्छ श्वेत ढाँचे-से हैं जिन पर किसी प्रकार के विकार या मृत्यु का चिह्न नहीं है। उनको देखने से यह समझना मुश्किल हो जाता है कि वे मृत मनुष्य हैं। वे बहुत समय से वहाँ पर हैं, किन्तु दूसरे पीछे के हैं। मैंने पूछने की कोई आवश्यकता न समझी, जबकि मुझे एक जगह, एक आदमी की टोपी पर जहाज का नाम-सा दिखाई पड़ा। जितने अक्षर मैं पढ़ सका, वह थे 'पुष्प...'

हाँ! यही महाराज जगदीशपुर और उनकी टोली के लोप होने का भेद था। इस विषय में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। किन्तु वहाँ और भी रहस्य थे। थोड़ी देर तक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम शून्य-मस्तिष्क हो उधर ही देख रहे थे कि हमारी दृष्टि एक आकृति पर पड़ी जिसकी पोशाक और लेटना विशेष प्रकार का था।

मैं—"ओह् ! उस पर नजर डालिये।"

यह आदमी उन दोनों के ऊपर गिरा हुआ था। जान पड़ता है, इसकी मृत्यु उनके ऊपर खड़े होते समय हुई। जब मैंने फिर उस पर नजर डाली तो देखा कि वह साधारण रीति के कपड़ों से आच्छादित न था। हमें जो कुछ दिखाई पड़ता था, वह था—लाल मुर्चा जो पैरों के कवच, शरीर के कवच और छाती के आवरक पर लगा हुआ था। उसी प्रकार की लाल वस्तु उसकी टोपी पर थी जिसके नीचे सिर ढँका हुआ था और अन्ततः खिंची हुई तलवार—जो एक मांसहीन हाथ में थी—का फल भी उसी लाल वस्तु से ढँका था।

मैं थोड़ा और आगे बढ़ा कि भली प्रकार देखूँ। जिज्ञासा ने इस समय भय को भगा दिया था। किन्तु जिस समय मैंने उन सबको इतना देख लिया और कुछ-कुछ तात्पर्य भी समझ लिया, उस समय भय फिर लौट आता-सा जान पड़ा। मैं पीछे लौटना ही चाहता था कि हरि ने जल्दी से कहा—

"जरा देर ठहरो। मैं देखूँ तो।"

वे आगे की ओर बढ़े। मैंने समझा था कि शायद वे उस कवचधारी पुरुष की परीक्षा करेंगे, किन्तु वे दूर वाले पैशाचिक मुंड की ओर बढ़ गये। वहाँ एक आदमी खूब लम्बा पड़ा हुआ था। एक विशेष उत्सुकता के साथ उसके दोनों हाथ, एक अच्छे लम्बे-चौड़े पत्थर के टुकड़े पर पड़े हुए थे। मुझे आश्चर्य होने लगा, जब मैंने देखा कि हरिकृष्ण ने उस कवचधारी की ओर कुछ भी न ध्यान दे, उस पत्थर की ओर झुक कर उसे छूना-सा चाहा। मैं बड़ी उत्सुकता-भरी दृष्टि से उनकी ओर देख रहा था।

एकाएक वे सीधे खड़े हो गये और उन्होंने अपने हाथ को सिर की ओर उठाया। इसके बाद वह लड़खड़ाने लगे, जैसे अपने बोझ को सँभाल न सकते थे। मैं मुँह खोले अचरज से देख रहा था। उसी समय वे गिर गये। वह उन मृत्यु के भयानक चिह्नों पर से होते हुए नीचे की ओर जा पड़े। जिस समय वह कंकालों पर से गिरे, उस समय एक प्रकार की तड़तड़ाहट हुई जिसने मेरे रक्त तक को सुखा दिया।

———

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोहनस्वरूप का भूत

हरिकृष्ण मृत थे ?

पहिले-पहिल मेरे ऊपर एक बड़ा आतंक छा गया। अवश्य कोई सर्वनाशक चीज यहाँ है जिसने उन्हें मार दिया, जैसे कि उसने दूसरों को पहिले मारा था। जैसे ही वे आगे की ओर लड़खड़ाये, मैं बड़े ही भय की दशा में पीछे हटने लगा। उस समय मेरे नीचे का पत्थर खिसक गया। मैंने अपने को गिरने से बचाने का जिस वक्त प्रयत्न किया, उसी समय मेरे हाथ की मोमबत्ती नीचे गिरकर बुझ गई। मैं नीचे और बड़े गाढ़ अन्धकार में अकेला था।

आह ! कैसी भयंकर स्थिति ! हमने एक ही बार ऐसी बात देखी थी जबकि उस महागर्त में अपने आप को गिराया था। इस अवस्था ने मेरे चारों ओर एक भयानक आतंक फैला दिया। हरिकृष्ण मृत, और कोई पैशाचिक खतरा, उस छाया में मुझे भी अपना शिकार बनाने की प्रतीक्षा में अपनी भयंकर आँख डाल रहा है ! उस गुफा के मृत्युजाल में मैं एकाकी—बिल्कुल एकाकी था। इसीलिये भयभीत हो गया। मैं गिर पड़ा।

यह गिरना ही था जिसने हमारी प्राण-रक्षा की। मेरी चिल्लाहट की प्रतिध्वनि अभी शान्त भी न होने पाई थी कि फिर मैं अपने पैरों पर था। यद्यपि भय अब भी था, तथापि यह वैसा न था। एक क्षण में ही मेरा दिमाग शान्त और सोचने लायक हो गया। जिस समय मैं खड़ा हुआ, मेरी तबियत खराब और सुस्त थी। मैं दीवार के सहारे लग कर थोड़ी देर बैठ गया। उस समय मेरी नाकों में किसी प्रकार की बड़े जोर की गन्ध घुस रही थी। मेरे तालू पर एक अजब अरुचिकर स्वाद मालूम हो रहा था। किन्तु मेरे शान्त मस्तिष्क ने इसे झट सोच निकालने में देर न की। मुझे ख्याल होने लगा कि मैंने ऐसी गन्ध कभी और भी सूँघी है। इसका स्मरण होते ही मेरा सारा भय काफूर हो गया। मुझे गुफा के रहस्य का पता लग गया।

उसके बाद क्या हुआ ? मुझे पूरा स्मरण नहीं है। यह उस समय भी अन्धकार का स्वप्न, जल्दी, आशा और भय था और अब तक है। उस समय जो कुछ मैंने किया, उसमें तर्क का हाथ कम और चटक का ही हाथ अधिक था। मालूम हुआ कि मैंने तुरन्त एक नहीं छै मोमबत्तियाँ एकसाथ जलाकर पाँती से पथरीली दीवार पर रख दीं। तब मैंने दो रूमालों को पानी में भिगो अपने मुँह और नाक के ऊपर बाँध दिया और फिर उसी भयानक स्थान में कूद पड़ा जहाँ से भागा था। यह सब करने में एक मिनट से कम ही लगा होगा।

इसके बाद स्वप्न कुछ साफ-सा होना आरम्भ हुआ। मैं उन अभागे नंगे कंकालों को लाँघ कर अपने मित्र के पास गया। वह भयानक आँख एक बार फिर मेरी ओर चमकी, किन्तु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैंने उसकी ओर ध्यान न दिया। बड़ी सावधानी से मैंने हरिकृष्ण की गर्दन और बाँह को पकड़, बड़े भयंकर जोर के साथ पहिले उन कंकालों से उन्हें बाहर किया। फिर मैंने उस गड़हे से निकल कर ऊपर की चट्टान पर रखने का भीष्म परिश्रम किया।

यद्यपि यह काम मेरी शक्ति से बाहर का था, हरिकृष्ण मुझसे अधिक लम्बे और मृत दशा में पड़े थे। मुर्दे का बोझ सचमुच आवश्यकता से अधिक भारी हो जाता है, तथापि उस समय मेरे साहस, मेरे आन्तरिक भावों ने मुझे एक अद्भुत शक्ति दे दी थी। मैं जैसे ही उन्हें उस स्थान में ला सका, वैसे ही वहीं उनकी बगल में गिर पड़ा। एक क्षण में फिर मैं खड़ा हो गया। मैं इस समय भय और निस्सहाय होने से काँपता और पसीने-पसीने था। एक बार मेरे दिल में आया, मैं यह नहीं कर सकूँगा—मैं नहीं कर सकूँगा, जाने दो उन्हें मरने दो।

इसके बाद फिर स्वप्न की सनक—सबसे बड़ी सनक सवार हुई। मैंने समझा, मैं कुछ आहट सुन रहा हूँ—पैर की। मैंने चारों ओर निगाह डाली और बिल्कुल ही आश्चर्यान्वित न हुआ जब कि मैंने देखा कि एक मृतक खड़ा होकर मेरी ओर आ रहा है। किसी प्रकार वह अपनी हड्डियों को एकत्र कर मेरी मदद के लिये आ रहा है। मैंने उसकी चमकती अँगुलियों और हाथों को, उसके वीभत्स मुख को देखा। मैंने परिस्थिति के अनुसार अपने आप पर काबू करने का प्रयत्न किया, भय को पास न फटकने दिया। वह उस छिछले गड़हे से ऊपर आया और अस्पष्ट, भूतों-जैसे, किन्तु परिचत स्वर में बोला—

"मदद चाहते हो, क्यों दोस्त ? आह ! ठीक, क्या फिर तुम्हारा दाँत का दर्द शुरू हो गया ?"

नहीं, मैंने बिल्कुल आश्चर्य नहीं किया। आश्चर्य क्यों होगा जब कि कोई बात स्वप्न में हो रही है। भय की सम्भावना न थी, क्योंकि भय की अन्तिम किस्त तक मेरे पास आ चुकी थी, अब उससे अधिक की सम्भावना ही न थी। मैंने अपने मुँह पर की पट्टी तोड़ ली और कहा—

"बहुत देर नहीं की, ठीक समय पर तुम आ गये। हाथ लगाओ जल्दी इसे खींच कर ऊपर ले चलें। इस गढ़े में, और इसके आसपास बहुत-सी जहरीली हवा भरी है। मैं इससे बाहर जाना चाहता हूँ।"

भूत—"बिल्कुल ठीक कहते हो, अच्छा एक-दो-तीन !"

साथ ही भूतने भी जोर लगाया। तीन बार के जोर में हम लोग ऊपर आ गये। यद्यपि शक्ति अब समाप्त हो गई थी, तथापि प्रसन्नता थी कि काम पूरा हो गया। हमने उस निस्सहाय सूरत को जमीन से चार फीट ऊँचा कर पाया। भूत ने कितना आश्चर्यजनक परिवर्तन प्रदर्शित किया। जब हमने यह कर लिया, तो मैंने मजाक से कहा—

"तुझे कभी यह ख्याल न था कि तुम भी उनके पास तशरीफ रख रहे हो ? सचमुच, मैं तुम्हारी हड्डियों को न पहचान पाया। कंकाल, जानते हो न, संसार में सबके एक से ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होते हैं। लेकिन हाँ, जब मेरे ऊपर गाढ़ पड़ा, तो तुमको ही ख्याल हुआ। मैं कभी तुम्हारे इस उपकार का बदला चुकाये बिना न रहूँगा।"

"भूत मेरी ओर ताक कर मुस्कुराने लगा।"

मैं—"मुस्कुराओ मत। अभी इसकी बिल्कुल आवश्यकता नहीं है। देखो, यहाँ बोतल है। इसमें शर्बत है, थोड़ा लेकर इसके मुँह में डालो। क्यों ? तुम्हें इसकी नाड़ी का भी पता मालूम हो सकेगा। देखो तो, चलती-वलती है कि नहीं। देखो, सब कुछ जल्दी करो, मुझ में अब कुछ भी करने की ताकत नहीं है।"

भूत ने मेरी आज्ञा का अनुसरण किया। क्यों न करे, वह पहिले भी करता था ! हाँ, करता था, चाहे मेरी आज्ञा सरासर अनुचित ही क्यों न रही हो।

उसने प्रसन्नता के साथ कहा—"अच्छा ऐसा आदमी मिलना मुश्किल है। जरा होश होने दो, मैं उनसे तुम्हें परिचित कराऊँगा।"

भूत—"मैं बड़ा प्रसन्न हूँ। किन्तु यह तो बताओ यह कौन है ?"

मैं—"अरे, यह हमारे तृतीय अफसर हैं, हरिकृष्ण ठाकुर। लेकिन मोहन, कब तक वह तुम्हें यहाँ रहने देंगे ? क्या बारह बजने तक ?"

भूत—"नहीं, उससे कुछ पहिले ही तक।"

मुझे भूत की पूरी बातचीत का शब्द-शब्द अच्छी तरह याद है। मुझे याद है कि अंत में भूत ने मेरी ओर देखा और मुस्कुरा दिया। उसने अपने आप से जैसे कहा—'पागल, मैं समझता हूँ। अच्छा, किन्तु मैंने ख्याल न किया था कि यह ऐसे होगा।'

इस पिछली बात का कहना, मोहनस्वरूप का तकिया-कलाम था। यह ठीक उसी तरह उसके भूत के मुँह से भी निकला। यह शब्द सीधे मेरे हृदय में पहुँच गये। उस समय मेरी आँखें डबडबा आईं।

मेरा कंठ रुद्ध हो गया। हरि के पास चट्टान के सहारे मैं वहीं बैठ गया। मैंने देखा, भूत सभी काम कर रहा है। यह उसे इतना अच्छी तरह कर रहा है कि मेरी सहायता की आवश्यकता ही नहीं। मैंने ख्याल किया, मैं यहाँ दम ले रहा हूँ। ओः ! भूत अभी फिर मुर्दों में, हड्डियों में चला जायगा। हाय, मोहन तुम मर गये ! किन्तु तब भी तुम मेरे लिये इतना करते हो। यह तुम्हारे लिये ही शोभा देता है। ओः ! इसी समय मेरी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली।

भूत (अनुकम्पा के साथ)—"क्यों ? क्या हुआ ? क्यों तुम रो रहे हो ? यह मरा नहीं है ?"

मैं—"हाँ, यह नहीं मरा है ? किन्तु तुम तो मर गये हो न ? इसलिए मैं रो रहा हूँ। आः ! मैं कैसे विना रोये रह सकता हूँ जब अपने सर्वोत्तम मित्र, अपने बाल-संघाती को भूत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के रूप में देख रहा हूँ। कहाँ तुम्हारे प्राण हैं, मोहन ?"

"एक दरख्त के ऊपर मैं समझता हूँ।"—भूत ने कहा—फिर एक उत्सुकता-भरी दृष्टि से देखा। इसके बाद हरिकृष्ण के सिर पर फिर पान भिगा-गिगा कर रखने लगा।

मुझमें इतनी भी शक्ति न थी कि मैं अपने आँसुओं को भी पोंछ सकता। मैं चुपचाप हसरत-भरी निगाहों से उसकी ओर देखने लगा। मेरा दिल बराबर आशंकित रहने लगा कि कब तक यह हमारे साथ रहने पायेगा। सचमुच यह घड़ी के बारह बजने के करीब ही चला जायगा। अब मैंने एक बार उस अँधेरी जगह की ओर निगाह डाली जिधर भूत के और साथी अब भी गाढ़ निद्रा में सो रहे थे। अबकी मुझे आँख न दिखाई पड़ी। क्या हुआ ? क्या वह सर्वथा लुप्त हो गई ? तब मैंने अपनी छहों मोमबत्तियों को पत्थर पर चिपके तथा खूब तेज जलते हुए देखा। आः ! कितना भारी अपव्यय ! कैसी मूर्खता ? हरिकृष्ण क्या कहेंगे ?

इसके बाद मालूम हुआ कि जैसे सभी मोमबत्तियाँ एकसाथ ही बुझ गईं, मैं बेहोश हो गया और मेरा सिर हरिकृष्ण के कन्धे पर गिर गया।

बहुत देर के बाद मैं जागा, अर्थात् मैं होश में आया। बीच-बीच में मुझे मालूम होता था कि होश कुछ-कुछ आ जाता है। जिस समय आधा जागृत और आधा सुप्त होता था, उस समय मेरे आसपास होती सारी ही बातें अस्फुट-सी दिमाग में घुसती थीं। वार्तालाप का कोई-कोई टुकड़ा सुनने में बहुत दूर से आता ज्ञात होता था। फिर जान पड़ा, दो आदमियों ने मेरे एक-एक हाथ को अपने कन्धे पर रख और अपने हाथों को मेरी छाती के चारों ओर लपेट कर मुझे खड़ा किया। वह मुझे पथरीले रास्ते से ले चल रहे थे। बीच-बीच में मेरा पैर भूमि से छू जाता था और ज्ञात होता था जैसे कि मैं चल रहा हूँ। जब मैं ऊपर की ओर जल्दी कर रहा था, जान पड़ता था कि कोई पीला प्रकाश मेरे ऊपर चमकने-नाचने लगता था। उस समय मेरे दोनों साथियों के हाँफने की और मेरे कराहने की आवाज आती थी। उसके बाद फिर पैरों के आगे-पीछे पड़ने के साथ ऊपर की ओर फिर वही नाचती हुई पीली रोशनी और उसका ऊर्ध्वमुखीन मार्ग को प्रकाशित करने का व्यर्थ प्रयत्न। यह यात्रा, जान पड़ी हजार वर्ष में समाप्त हुई।

इसके बाद हिलना-डोलना बन्द हो गया। जान पड़ा, मैं एक चट्टान के सहारे पीठ लगाकर बैठा हूँ। मेरे मुँह में शर्बत की मिठास थी। मेरे मुँह पर हवा शीतल, स्वच्छ, समुद्री और काफी लग रही थी। फिर मुझे समुद्र की आवाज, गर्जन और हुंकारयुक्त होते हुए भी, चेतोहर और आनन्दप्रद लगी। फिर जान पड़ा कि सूर्य का प्रकाश मुझ पर पड़ रहा है और इन किरणों के साथ जीवन और मेरी चेतनाशक्ति भी लौट रही है।

बहुत दूर, किन्तु धीरे-धीरे समीपतर आता हुआ हरिकृष्ण का शब्द सुन पड़ा। "हाँ, यह गैस (गन्दी हवा) का असर है। कार्बोनिक एसिड मेरी समझ में—अथवा उससे भी भयंकर कोई वस्तु। यह उस जगह भी निकल आती है जहाँ ज्वालामुखी की गड़बड़ मची हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह गैस इतनी वजनी होती है कि भूमि के तल ही पर रहती है। लेकिन एक घंटे के भीतर यह होश में आ जायेंगे।''

''उसे दूसरा धक्का लगेगा, जैसे वह मुझें देखेगा।'' भूत ने कहा। जिस पर मेरी इच्छा हुई कि लड़कों की-सी हँसी हँसूं। किन्तु उसके बाद जो सन्नाटा छाया, मैंने उसमें अपनी सुनी बातों से कोई निष्कर्ष निकालना चाहा। यह जागृत और निद्रावस्था की सन्धि थी। इसी सिड़ी भूत ने वचन दिया था कि वह मेरे जगने तक मेरे पास रहेगा। उस अस्पष्ट होश में भी यद्यपि यह स्पष्ट जान पड़ता था कि भूत की प्रतिज्ञा का कोई मूल्य नहीं, तथापि एक छाया-सदृश अतात्विक वस्तु, स्वयं भूत ही की भाँति, मेरे सन्मुख झलकती जान पड़ी—स्वप्न की प्रतिज्ञा को दिन के प्रकाश में यद्यपि कोई भी पूर्ण होने की आशा न करे। स्वप्न उलटा हो जाता है। ऐसे ही, जब मैं जागूँगा तो भूत न रहेगा।

कुछ क्षण के बाद सभी स्वप्न समाप्त हो गये। एक सच्ची हवा मेरे मुँह पर लग रही थी। एक वास्तविक समुद्र था जिसका गम्भीर नाद मैं सुन रहा था जिसे कि वह नीचे की चट्टानों से भिड़कर कर रहा था। मैं एक बड़ी भारी गुफा के मुँह पर बैठा था जो एक खड़ी पहाड़ी की जड़ से सौ या अधिक फीट ऊँचे पर होगी। मेरे सामने समुद्र की अनन्त नील जल-राशि के अतिरिक्त और कुछ भी दिखाई न पड़ता था। चारों ओर क्षितिजों से मिली वह नीलिमा जगह-जगह सफेद फेनों से रंजित थी। ऊपर चमकीले नीले आकाश में सूर्य चढ़ा हुआ था। चारों ओर प्रकाश, उष्णता और गति थी। आह ! उस अन्धकार और मृत्यु के स्वप्न के बाद यह बड़ा मंगलमय जागरण था।

हरि—''वन्देमातरम्, माधव !''

वह मेरे पास खड़े थे। उनके स्वर और मुस्कुराहट में मधुरता और स्निग्धता झलक रही थी। वह घुटनों के बल मेरे पास बैठ गये और मेरे हाथ को अपने हाथ में लेकर बोले—

''क्यों, अच्छे तो हो ?''

मैं—''बहुत अच्छा हूँ। आशा करता हूँ कि मैंने आपको बहुत तकलीफ दी।''

हरि—''मुझे तकलीफ दी ? मेरे प्यारे माधव ! तुमने मेरे प्राण बचाये।'' मैंने चिल्लाकर कहा—''क्या ? गुफा में ? क्या सचमुच वह सब वास्तविक था ?''

हरि (धीरे से)—''मुझे नहीं जान पड़ता, तुम क्या स्मरण कर रहे हो। किन्तु यह निस्सन्देह है कि हमने गुफा द्वारा यात्रा की है। मेरे ऊपर एक जहरीली गैस ने असर जमा लिया था और तुमने मुझें उसके पंजे से बचाया। तुम्हें याद नहीं है ?''

''हाँ''। इसके बाद मुझे बहुत-सी बातें याद पड़ने लगीं। मोहनस्वरूप के भूत के देखने की पिनक ? वह क्या हुआ ? किन्तु मैंने इसके बारे में न पूछा। मुझे अभी बात करने की बहुत इच्छा न थी।

हरि—''कल रात अथवा नहीं, आज प्रातः की बात का जरा ख्याल करो। तुम्हें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरण है, तुमने एक विचित्र स्वप्न देखा था। तुम्हें मालूम हुआ कि एक पुकार, तुम्हारे मित्र की आवाज सुनने में आई।''

उनका क्या अभिप्राय था, मैं न पूछा सका।

हरि—''एक बार मैंने एक किस्सा—बड़ा ही करुणाजनक किस्सा बढ़ा था। वह भी इसी तरह का, दक्षिण-अटलांटिक का ही किस्सा था, किन्तु वह यहाँ से और दक्खिन का था जहाँ आँधी और अनवरत समुद्री प्रकोप बना रहता है। दो जहाज एक ही समय और एक ही तूफान से टूट गये, किन्तु उनके टूटने की जगह एक न थी। नंगी सुनसान फैली हुई चट्टानों के एक तो उत्तर और दूसरा दूसरी ओर टूटा था। टूटे हुए जहाजों के आरोहियों की दो टोलियाँ किसी प्रकार किनारे पहुँचीं जिनमें से एक के पास रसद अत्यधिक और जगह बहुत सुरक्षित सायादार थी और दूसरे के पास न रसद और न ऋतु-प्रकोप से शरण लेने के लिये कोई सुरक्षित जगह ही। दोनों टोलियों के बीच में एक पतले से टापू का अन्तर था, किन्तु उन्हें एक-दूसरे से मिलने का संयोग न था। आखिर एक टोली के सारे ही आदमी भूख और जाड़े से मर गये। सिर्फ एक जीवित बचा, यद्यपि सौ ही गज के फासले पर भोजन, छाया, मित्रता सब कुछ मौजूद थी? तुमने सुना दक्षिणी अटलांटिक के एक टापू में कैसा बीता?''

मैं—''हाँ, किन्तु-किन्तु-किन्तु—''

हरि—''वहुत कुछ वैसा ही यहाँ भी हुआ है। जिस समय हम लोग द्वीप के दक्षिण ओर सुरक्षित पहुँच गये थे, उसी समय टापू की उत्तर तरफ पाँच मील दूर एक जहाज तूफान में पढ़कर चट्टानों से टकरा गया। सारे ही आदमी डूब गये। सिर्फ एक जीवित बचा और वह भी कितने दिनों तक एक पहाड़ी की जड़ में एक पतली-सी चट्टान पर कैद रहा। शायद वह वहीं भूख से मर गया होता, किन्तु अन्तिम आशा ने उसे पहाड़ी के ऊपर चढ़ने की अनुमति दी। वह चढ़कर एक गुफा में पहुँचा। यद्यपि वहाँ भी आशा के लिये कुछ न था, तथापि उसने अँधरे में भीतर घुस कर खोजना आरम्भ किया और उसका सौभाग्य था कि उसने प्रकाश देखा और शब्द सुने। इससे भी बढ़कर उसे आश्चर्य तब हुआ जब कि उस गुफा में, उस अन्धकार में उसने अपने मित्र का मुख पहचाना।''

मैंने एक गहरी साँस ली। मैंने हरि के मुँह की ओर ताकने का साहस न किया। वह उठा और चला गया। किन्तु ठीक इसी समय कोई एक दूसरा व्यक्ति आया और मेरी बगल में बैठ गया—ठीक उसी जगह जहाँ हरि घुटने के वल बैठा था।

मैंने इस आगत व्यक्ति के मुँह की ओर न देखा, किन्तु मैंने उसके नंगे पैर और पिंडली देखी जो छिले, फटे और भद्दे से मालूम होते थे और जिन पर फटे हुए कपड़ों के चींथड़े लटक रहे थे। मैंने उसके हाथों की अँगुलियों को भी वैसा ही फूटा-छिला और पिसा देखा। सचमुच, मुझे याद आ गया कि मैं उन हाथों को जानता हूँ। दर्द के मारे मेरा दिल फिर टूटने लगा। उसने घबड़ाकर—जान पड़ता था, अब भी उसको डर था कि कहीं मेरे दिल को एकबारगी इस सूचना से धक्का न लगे, कहा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ओ: ! प्यारे माधव ! किन्तु मैंने ख्याल न किया था कि यह ऐसा होगा ?"

यहाँ भ्रम की कोई बात न थी। अन्त में मैंने घूम कर उस चेहरे की ओर देखा जिससे मैं पूर्व-परिचित था। आकृति बदल गई थी, भूख से मुँह पीला और रूखा पड़ गया था। ऊपर से समुद्री नमक ने उसे और विकृत बना दिया था। किन्तु ऊपर को उठी हुई नाक, काले कुंचित केश, पतले ओठ और गोल मुख, अब भी उसी अपरिवर्तित दशा में थे। दिल भी, जो उन चमकती हुई काली पुतलियों के द्वारा मेरी ओर झुक रहा था, वह भी वहाँ था। अब मैं कुछ बोल न सका। वास्तव में वहाँ कहने को ही क्या था ? कौन से शब्द थे जो उस समय भाव प्रकट करने में असमर्थ होते ? थोड़ी देर के लिये इन्हीं विचारों में मैं शून्य हो गया। उसी समय एकाएक मेरे हाथों ने उसके शरीर को वेष्ठित कर लिया। मैं उससे लिपट गया और मेरे मुँह से अकस्मात् निकल पड़ा—"आ: ! मेरे मोहन !"

इसके बाद कितनी देर तक हम नीरव और चेष्टाहीन रहे। बाहर की ओर से यद्यपि हम अन्धकार में थे, तथापि अन्तस्तल आनन्द के प्रकाश से भरपूर था।

पीछे उसने बताया कि यह सब कैसे हुआ ? उसने हरिकृष्ण के कहे हुए किस्से को ही दूसरे शब्दों में दुहराया। पुराने दिनों में घर पर हमने कुछ समुद्री कहानियाँ मिल कर पढ़ी थीं, किन्तु उनमें से कोई भी ऐसी अद्भुत और मनोमुग्धकर रीति से न लिखी गई थी, जैसा कि यह हमारे सामने मौजूद थी। उसी तूफान ने, जिसने कि 'इन्द्रायुध' को भगा कर मधुच्छत्र में पहुँचाया, 'शोभ' को भी अपने रास्ते से बे-रास्ते कर दिया था। एक दिन प्रातः पोतारोहियों ने देखा कि उनका जहाज एक पथरीले टापू से दो मील वायव्य कोण पर है, उसे एक बलवती तरंगमाला उधर को ले जा रही है और तरंग एक पहाड़ी दीवार पर धक्का खाकर रूई के गोले की तरह उछल रही है। घंटों उन्होंने जहाज को रोक कर उसे दूर रखने का प्रयत्न किया। शायद वे इसमें सफल हो जाते, किन्तु अन्त में उनके शत्रुओं का एक भयंकर आँधी ने साथ दे दिया। अब अवस्था निराशामय हो गई और तीसरे पहर दिन को जहाज चट्टान से टकरा कर चूर-चूर हो गया। समय बहुत थोड़ा था, तो भी कुछ आरोहियों ने एक नाव पानी पर उतारी, किन्तु उसे भी लहरों की क्रोधपूर्ण आँखें न सह सकीं।

मोहन—"मुझे ठीक पता नहीं कि क्या हुआ। केवल मैं और एक मेरा साथी बढ़ई पोततल पर थे। वह कड़ुआ आदमी था। उस समय भी सिरका ही पिये-सा मालूम होता था। हम दोनों के पास एक-एक रक्षक-पेटी थी। हम दोनों जहाज के बीच में पोततल पर के एक घर में शरण लिये हुए थे। जिस वक्त जहाज टकराया, उसी वक्त सारे मस्तूल समाप्त हो गये और जान पड़ता है, मुझे उसी धक्के ने बाहर फेंक दिया। मैंने देखा, वहाँ जल नहीं है। वहाँ तो फेन और गमज से भरे जल में जगह-जगह लकड़ी के तख्तों के परस्पर टकराने की आवाज है। यह मेरी चतुराई नहीं थी जो तैर कर बाहर निकल आया। मैं कभी न जान सकूँगा कि यह कैसे हुआ ? जिस समय एक-ब-एक मैं बदहवास होना चाहता था, उसी समय मेरा पैर जमीन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में जा लगा। वहाँ से धीरे-धीरे मैं पहाड़ों के नीचे एक ऊँची चट्टान पर आ गया। मैं रात भर उसी पर पड़ा रहा।"

"सवेरे भी समुद्र की वही दशा थी। कभी-कभी पानी का छींटा मेरे ऊपर तक आने लगा। मैंने कहा—अब क्या आशा है। एक ही बड़ी लहर और मैं पत्थर पर से साफ। जहाज से मेरे अतिरिक्त एक ही चीज बच सकी थी और वह आस्ट्रेलिया से अमेरिका को भेजे गये सेवों में से एक सेब का बक्स था। यह बक्स भी टुकड़े-टुकड़े हो गया था और सेब पानी पर तैर रहे थे। मैंने उनमें से दो सौ सेब चुन लिये। मेरे पास खाने के लिये कुछ न था। मैंने बड़ी सावधानी से उन्हीं पर नौ दिन व्यतीत किये। पानी पीने के लिये तो चट्टानों से मिल जाता था। आखिर भूखे रह कर मरने का दिन आया। एक बार तो दिल में आया, समुद्र में डूब कर इस आफत से छुटकारा पा लूँ। किन्तु फिर मैंने पहाड़ी की ओर देखा। मैं उसे बीस फीट से ऊपर न देख सकता था। मेरे दिल में आया, इस पर चढ़ कर देखना चाहिये। यह चढ़ाई दरख्त की चढ़ाई-सी थी, किन्तु तुम्हें मालूम है माधव ! लड़कपन से मेरा चढ़ने का अभ्यास है। उसके बाद मुझे पानी के गिरने का रास्ता मिल गया; जिसके सहारे चढ़ते-चढ़ते मैं इस गुफा के मुँह पर आ गया। इसी जगह मैंने अन्तिम दोनों सेबों को खाया, एक को रात सोने से पहले, और दूसरे को आज सवेरे गुफा में घुसने के पूर्व।"

मैं—"और फिर तुमने हमें पाया ?"

मोहन—"हाँ, फिर मैंने दो सौ गज के करीब चलने के बाद तुमको पाया। किन्तु जिस समय मैंने बत्ती और तुम्हारे मुख को देखा, मुझे स्वप्न-सा मालूम हुआ। यह वास्तविक बिल्कुल ही नहीं मालूम होता था और तुम भी अपने को स्वप्न में ही समझते थे।"

मैं—"हाँ सचमुच।"

मोहन मुस्कुराया—"यहाँ बड़ा लम्बा-चौड़ा स्वप्न मालूम हुआ। आज रात के भिनसरहे को मैंने भी तुम्हारा स्वप्न देखा था। मानो मैं नालन्दा-विद्यालय के मैदान में हूँ। तुम्हारी प्रतीक्षा करते-करते जब देर हो गई, तो मैंने पुकारना शुरू किया—माधव हो !"

मैं—"ओः ! इसे तो मैंने सुना था।"

मोहन (आश्चर्य के साथ)—"तुमने सुना था ?"

मैंने बतलाया कि मैंने कैसे इसे सुना था, कैसे मैंने इसे हरिकृष्ण को बतलाया। लेकिन हरि ने कहा……

इसी समय मैंने अपने चारों ओर देखा। मैंने समझा था, वे पास ही में कहीं विश्राम कर रहे हैं, किन्तु वहाँ मेरे पीछे गुफा के अतिरिक्त कुछ न था।

मैंने जोर से कहा—"क्यों ? वे कहाँ गये ?"

———

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आँख

मोहन ने शान्तिपूर्वक कहा—"पीछे गये हैं।"

मैंने—"क्या पीछे चले गये? कहाँ पीछे?"

मोहन—"गुफा के दूसरे छोर पर। उन्होंने निश्चय किया है, आज रात्रि में यहीं विश्राम किया जाय, क्योंकि तुम्हारा शरीर अभी चलने-फिरने लायक नहीं हुआ है। इसीलिये वह सब रसद-पानी वहाँ से लाने गये हैं। घबराओ मत। अब खतरे का भेद खुल गया है, कोई डर नहीं है। मैं भी जा रहा हूँ, रास्ते में चीजों के लाने में सहायता करूँगा।"

मैं—"किन्तु काम बड़े खतरे का है।"

मोहन—"हाँ, एक तरह से; किन्तु अब हमें उन पर विश्वास करना चाहिये। मैं ठीक नहीं कह सकता कि तुम्हारा साथी माधव किस तरह का आदमी है, क्योंकि अभी तुमने उसके बारे में कुछ नहीं कहा। किन्तु जो कुछ भी मैंने इस थोड़ी देर के अनुभव से जाना है, वह अनुगमन करने योग्य अच्छा नेता है।"

तब मैंने सारी कथा कह सुनाई जिसके छोटे-छोटे अंशों के समझाने में आधे घण्टा व्यतीत हो गया। अन्त में मोहन ने कहा—

"आः! यह तो हमारे नालन्दा के सभी पुराने स्वप्नों के कान काटती हैं! और हम अभी दोनों उसके बीच में ही हैं। मुझे तुम्हारे 'गुप्त समुद्र', 'पुष्पक' और भगेलू को देखने की बड़ी इच्छा है। मुझे आशा है, यह आशा जल्द पूरी होगी। लेकिन अब जरा पहाड़ी की वारी पर आओ, तो मैं उस जगह को दिखाता हूँ जहाँ 'शोभा' टकराकर चूर हुई।"

उसने मेरी काँख में हाथ लगाकर धीरे-धीरे किनारे पर खड़ा किया। मैंने वहाँ से उसके पहाड़ी पर चढ़ने का रास्ता भी देखा। बीच में कहीं-कहीं मुश्किल से पैर रखने की जगह थी, सो भी पानी के बहने से चिकनी थी। पहाड़ी एक प्रकार से खड़ी थी। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि मोहन ने छिपकली के भी कान काट लिये। मुझे अब मालुम हुआ कि क्यों उसके हाथ-पैर और अँगुलियाँ छिल गईं? क्यों उसके कपड़े जगह-जगह फट गये थे। यह एक चीज थी जिसे नालन्दा के दिनों में हम ख्याल में भी न ला सके थे। साठ हाथ नीचे पहाड़ी जरा-सी तिर्छी हुई थी, किन्तु मैंने वहाँ कोई ऐसा स्थान न देखा जिस पर कि उसने तूफान में शरण ली थी। जड़ के पास देखने से दो जगह चट्टान जरा-जरा निकली हुई थी। सिलसिला तीस हाथ तक चला गया था। इसमें यह दाहिनी ओर का भाग था जिस पर आकर जहाज टकराया और उसका सर्वनाश हुआ। यहाँ पानी बहुत गहरा है, अतः तूफानी लहरों का प्रबल होना अनिवार्य ही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोहन—"मेरा विश्वास है कि ऐसी भयानक रीति से कोई भी जहाज न टूटा होगा··· किन्तु चलो फिर अपनी पहिली जगह पर, नीचे की ओर का देखना कुछ लोमहर्षक-सा हो रहा है। और अब यदि तुम्हारी आज्ञा हो, तो मैं तुम्हारे साथी के पास जाऊँ।"

मैंने उत्सुकता के साथ कहा—"लेकिन, गैस से खबरदार रहना। क्या मैं भी साथ नहीं चल सकता?"

मोहन—"महाशय हरिकृष्ण ने इसे बड़े जोर से मना किया है। अगर तुम्हारी हिम्मत हो तो उनकी आज्ञा का उल्लघन करो। अच्छा, जाता हूँ। रोशनी आते देखना तो समझ जाना कि हम लोग आ रहे हैं।"

इस प्रकार मोहन गुफा में अन्तर्धान हो गया। मैंने थोड़ी दूर तक उसका अनुसरण किया, किन्तु इतने में हाथ की बत्ती मार्ग की वक्रता में छिप गई। अब फिर उस गुफा की भयानकता और अन्धकार से मेरा दिल सिहरने लगा और मैं जल्दी से वहाँ से उठकर द्वार पर सूर्य के प्रकाश में आ गया। रात्रि के दुःस्वप्न ने मेरे चित्त पर भयानक प्रभाव डाला था। अब मुझे खुली हवा और प्रकाश दो चीजें बहुत अच्छी मालूम होती थीं।

मैं बड़ी देर तक वहाँ बैठा रहा। अब सूर्य धीरे-धीरें समुद्र की ओर झुकने लगा था। दिन का वह अवशिष्ट भाग हमारे लिये बहुत ही आनन्ददायक होगा। मैंने वहाँ एक स्थान भोजन के लिये और दूसरा सोने के लिये साफ कर लिया। चट्टान के एक छेद से पानी पीने के लिये जमा कर लिया। किन्तु मुझे आवा-जाही में गैस का भय लगने लगता था। मान लो यदि वे न लौटे और जाकर उन कंकालों में सो गये तो? यह ख्याल आते ही मेरी देह से पसीना छूटने लगा।

तब गुफा से एक गूँजती हुई आवाज सुनाई दी। दूर देखने में एक धीमी नाचती-सी रोशनी दिखाई पड़ी। मैं उनकी सहायता के लिये दौड़ा, बेचारे मोहन का मुझे बहुत ख्याल था। बत्ती हरिकृष्ण के हाथ में थी।

हरि ने प्रसन्नता के साथ कहा—"बहुत ठीक। तुम्हारा बाल मित्र माधव ठीक उसी जगह मिला जिस जगह है। मैं चाहता था—अर्थात् उन्हीं तीनों पैशाचिक पौड़ियों पर। उसी जगह से इस बड़े गट्ठर को वह ला रहा है, जैसा कि तुम देख रहे हो। उसकी सहायता मेरे लिये बड़ी आनन्दप्रद हुई।"

हरिकृष्ण आगे-आगे चले। मैंने मोहन का छोटा गट्ठर ले लिया। मोहन ने धीरे से कहा—

"तुम्हारी कसम! माधव! तुम्हारे हरिकृष्ण काम करने में बड़े बहादुर हैं। इन सभी चीजों से लदे हुए वह कंकाल-गर्त तक आ गये थे। साथ ही एक हाथ में उनके मोमबत्ती भी थी। वहीं यह सुस्ता रहे थे कि मैं पहुँच गया। कैसा मजबूत दिल है? है न?"

मैं—"जरूर। किन्तु क्यों वे वहाँ सुस्ताने लगे!"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोहन—"अब आगे विना सहायता के बढ़ना असम्भव मालूम होता था, और क्या ? मुझको ऊँची जगह पर मोमवत्ती लेकर खड़े रहने को कह दिया और फिर स्वयं अपने मुँह-नाक पर मजबूत पट्टी बाँधकर नीचे गढ़हे की ओर गये। नीचे उन कंकालों को अच्छी प्रकार देखने-भालने लगे मानो उनकी जन्म-कुण्डली खोजने अथवा उनके यहाँ आने के समय का पता लगाने लगे थे। किन्तु वहाँ न जेब थी, न कोई कागज-पत्र। यहाँ तक कि वह कवचधारी भी खुला ही था।"

मैं—"हाँ, तब फिर ?"

मोहन—"फिर चट्टानों को ढूंढ़ने लगे। जूते से कोई-कोई टुकड़ा उठाते थे और उसकी परीक्षा करने लगते थे। बीच-बीच में पीछे हट कर साँस ले लेते थे। अन्त में उन्होंने उन पत्थरों में डूबकर एक बड़ा-सा पत्थर ढूंढ़ निकाला और उसे मेरे पास ले आये। फिर उस पर खूब अच्छी तरह कम्बल लपेटा और उसी को वह ले चल रहे हैं।"

मैं—"कैसा पत्थर ?"

मोहन—"हाँ, एक बड़ा सुन्दर नमूना है। उसका वजन पन्द्रह सेर पक्का होगा। प्रातराश से पहिले तक न जाने कितने और ऐसे-ऐसे वह अभी और एकत्र करेंगे। लेकिन कौन इन्हें ढोकर घर ले चलेगा ?"

यह प्रश्न फिर सामने न आया। हम लोग गुफा के द्वार पर पहुँच गये। हरि ने अपने नमूने को एक कोने में डाल दिया और थोड़ी देर तक उसी कम्बल पर लेट गये। जब हम लोग भी ऊपर आ गये तो वे मुस्कुराये।

"हरि—"मैं बहुत थक गया हूँ। भूख बड़े जोर की लगी है। कितनी देर में भोजन मिलेगा ?"

मैं—"बहुत अच्छा। तो, माधव, जल्दी तैयारी करो। जरा अपना सब गुण खर्च कर दो तो। आज की मेहनत को देखो, हम लोग उसके योग्य हैं।"

यहाँ घर तो था नहीं कि पर्याप्त बर्तन-भाँड़े और सारी चीजें मिलतीं, तो भी यथा-सम्भव तैयारी में कसर नहीं रखी गई। मेरा भोजन का चौका सचमुच बहुत ही सुन्दर था। मेरे आनन्द का आधा भाग तो था, मोहनस्वरूप को खाते देखना। भूख कड़ी लगने से हमने भोजन बड़ी रुचि से तथा अधिक मात्रा में किया।

हमारे इस भोजन के आनन्दमय वायुमंडल का क्या कहना है ? जरा, स्मरण करो ! इस अन्तिम और अत्यावश्यक समय में मोहन के अचिन्तित आगमन को, जो सचमुच एक जादू था। मैं सोचने लगा कि अब पुष्पक को खुले समुद्र में लाकर देश की ओर घुमाना आसान होगा। मुझे आशा होने लगी कि अब जल्दी ही हरिकृष्ण वर्तमान परिस्थिति के अनुसार भविष्य-कर्तव्य पर परामर्श करेंगे, किन्तु मैंने देखा कि उनके दिमाग में कुछ दूसरा ही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजन समाप्ति के बाद ही उन्होंने कहा—"आ जाओ, अभी अँधेरा होने में एक घंटे से अधिक देर है। यहाँ मेरे पास बैठ जाओ।" उन्होंने कम्बल उस कोने पर बिछाया था जहाँ सूर्य की अन्तिम किरणें सुगमता से पहुँच रही थीं। हम दोनों जाकर वहाँ बैठ गये। अब हरि वहाँ से उठकर दीवार के पास चले गये जहाँ उन्होंने अपना नमूना ले आकर रखा था। सावधानी से उसे लेते हुए वे हमारे बीच में आकर बैठ गये और उसे अपने पैरों पर रख लिया।

उन्होंने पूछा—"तुम्हें मालूम है, यह क्या है?"

मैं—"पत्थर है।"

हरि—"हाँ, और उससे कुछ अधिक, इधर देखो।"

यह एक गोल छोटा-सा मामूली पत्थर था, किन्तु बीच में बारीक फाँक थी जिससे चमक निकलती थी। हरि ने उसे ऊपर घुमा दिया जिसमें सूर्य की किरणें अन्दर जा सकें। उसे देखते ही हम और मोहन दोनों ही ठक हो गये। एकाएक नानावर्ण की किरणें उसमें से फूट निकलीं।

मैं—"आँख!"

हरि—"हाँ, यही वह आँख है जिसे गुफा में तुमने देखा था। इस पर तुम्हारे बत्ती का प्रकाश पड़ता था, जैसे कि इस वक्त सूर्य का पड़ रहा है। इधर नजदीक से देखो।"

हमने देखा। वह रोशनी एक छोटी-सी जगह से, पत्थर के अन्दर से आ रही थी। वहाँ काँच की भाँति कोई एक चीज थी जिसका बाहर का भाग चिकना था। इसी चिकने भाग पर जब प्रकाश पड़ता था तो उसमें से अद्भुत लाल किरणें निकलने लगती थीं। इसी को देखकर मैं गुफा में डर गया था।

हरि—"यह तुम्हारी 'आँख' इस पत्थर में मढ़ा हुआ एक छोटा-सा स्फटिक-खंड है जो युग-युगान्तर तक कोसों नीचे पृथ्वी के उदर की भयानक अग्नि में पड़ा था। किसी ज्वालामुखी की तूफान के भयंकर ऊर्ध्व विवेचन में पड़ कर बाहर फेंक दिया गया और वहाँ यह और वमन की हुई वस्तुओं की धार में पड़ गया जो इस गुफा से होकर समुद्र की ओर जा रही थीं। किसी तरह यह बीच ही में यहाँ गुफा के सबसे निचले भाग में पड़कर दीवार से लगकर रह गया और इस अन्धकार में दस हजार वर्षों से प्रतीक्षा करता रहा। अभी यह प्रतीक्षा में ही था कि इसी बीच बाहर आदमियों ने आजकल का संसार बनाया। उन्होंने असभ्यता, जंगलीपन से निकल कर बोलना, जोतना, घर बनाना, बस्ती बसा कर रहना, धर्मानुष्ठान करना, राज्य-साम्राज्य, प्रजातंत्र-स्थापन करना, ऐतिहासिक वीरता प्रदर्शित करना और अन्त में दूर-दूर के समुद्री भागों का पता लगाना सीखा। इस तरह एक समय इस टापू में ऊँचे मस्तूलों और पालों वाला एक लकड़ी का जहाज, जो आजकल के जहाजों के सामने एक खेल-सा होता, आया। उस पर बहुत-से बहादुर मनुष्य थे जो आधे नाविक और आधे सैनिक थे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिनका अफसर एक कवचधारी और खड्गधारी वीर था। यह लोग पुर्तगीज थे जो 'विस्की' या 'सेविल्ले' से यहाँ आये थे। यह वे लोग थे जिन्होंने अपनी पहुँच भर पुरानी दुनिया को अधिकृत करके नई दुनिया पर धावा बोला था। उन्होंने खोजते-खोजते 'गुप्त समुद्र' पा लिया और मेहराबदार मुहाने के द्वारा अपने जहाज को वहाँ घुसा दिया। फिर टापू की देखभाल में कई दिन लगाये। और शायद इन वीरान चट्टानों पर अपने बादशाह का झण्डा गाड़कर अपना अधिकार भी उद्घोषित किया। आखिरकार एक दिन वह उत्तरी दीवार के पास पहुँच गये और फिर उन्होंने इस गुफा में प्रवेश किया जिसको कल हमने पाया था। उनका इरादा इसके खोजने से, समुद्र तक पहुँचने का रहा होगा।

उसी समय यह घटना घटी। आगे चलने वाले आदमियों के हाथों में मशाल थे। जब वे इस गड़हे में आये जहाँ 'आँख' बाट जोह रही थी तो एक ने इसकी चमक वैसे ही देखी जैसे कि तुमने देखी थी और यही स्फटिक की चमक उनके जान की गाहक हुई। पहिला आदमी चिल्लाकर आगे दौड़ा कि इसकी परीक्षा करें। किन्तु भयंकर गैस ने, जो पास ही एक चट्टान की दरार से निकलती है, उसे ढाँक लिया और वह वैसे ही वहाँ गिर पड़ा, जैसे कि तुमने उसे हाथ चट्टान के ऊपर फैलाये हुए देखा। दूसरे भी उसकी ओर झुककर आँखें फाड़कर देखने लगे और शीघ्र ही वह भी एक-दूसरे के ऊपर गिर पड़े। सबसे अन्त में, उस टोली का कप्तान एक और आदमी के साथ आया कि देखें क्या हुआ? कप्तान स्थिति को खतरनाक समझ तलवार खींचकर आगे बढ़ा। शायद कुछ देर तक ही उसने भौंचक-सा इस हत्याकाण्ड को देखा होगा कि उसका भी समय आ गया और वह भी वहीं गिर पड़ा। किन्तु उसके साथी ने जब यह दशा देखी तो उसका होश उड़ गया। जब उसने देखा कि 'आँख' उसकी ओर घूर रही है तो वह यहाँ से बेतहाशा भाग निकला। किसी प्रकार वह जहाज पर पहुँच गया। वहाँ उसने यह सारी कथा बयान की और मिथ्या विश्वासपूर्ण काल में यह 'शैतान की आँख' भयानक अटलांटिक के सम्बन्ध में एक मशहूर कहानी हो गई।

उस जाल में फँसे लोग फिर अपनी जगह से न उठ सके। थोड़ी देर तक उन्होंने लम्बी साँस ली। इसी गैस ने अपना पूरा अधिकार जमा लिया और वे सर्वदा के लिए सो गये। इसके बाद यह काण्ड चार सौ वर्षों के लिए अन्तर्हित हो गया। तब सिर्फ बीस वर्ष हुए—एक दूसरा अन्वेषक—महाराज जगदीशपुर आये जिन्होंने शैतान की आँख वाली कहावत को पढ़ा था और उस पर हँस दिया था। किन्तु उनके दिल में आया कि इसका अवश्य कोई और रहस्य है और इसी रहस्य का पता लगाने के लिए वे इसकी तह में घुसे। आखिर बत्ती की रोशनी से आँख फिर चमकी, किन्तु उस चमक के खोजने के ख्याल में उनके दिमाग ने गैस का कुछ भी ख्याल न किया और वह भी उसी फंदे में फँस गये। उनके पीछे एक-एक करके उनके साथी और फिर उनके पता लगाने वाले भी उसी बला के शिकार हुए। वह सब यहाँ मौजूद हैं। माधव ! मैंने उन्हें गिना है ?"

बहुत पीछे मोहन ने मुझसे अनेक बार कहा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"देखो, माधव ! यदि हमने ऐसी एक कथा भी तैयार कर ली तो यही हमारे लिए पर्याप्त होगी । हमें फिर किसी रोजगार की आवश्यकता न होगी ।"

उस समय मैंने उनसे कुछ न कहा । हरिकृष्ण अपनी बात समाप्त कर थोड़ी देर बैठे । फिर पत्थर को अपने पैरों के बीच में दबाकर उन्होंने एक नाविकों वाला मजबूत चाकू अपने पाकेट से निकाला ।

हरि—"अच्छा, अब आँख को इससे निकालना है ! काम कोई बहुत कठिन नहीं है ।"

और, सचमुच ही यह कोई मुश्किल नहीं था । जहाँ-तहाँ उन्होंने चाकू को दबाया और तिर्छे खींचा कि टुकड़ा-टुकड़ा अलग होने लगा । पाँच मिनट के भीतर सब पत्थर को काटकर आँख को अलग कर लिया । उसकी आकृति बहुत कुछ अण्डाकार थी । उसके चारों ओर एक पतला चिकना-सा पत्थर का पलस्तर था ।

हरि ने उसे बार-बार उलट-पलट कर बड़े आश्चर्य और उत्साह से कहा—"यह है वह रहस्य, जिसने शताब्दियों तक संसार को अन्धकार में रखा, जिसने एक विचित्र और भयानक कहावत प्रसिद्ध की, जिसने पृथ्वी के उच्चतम श्रेणी के मनुष्यों की बलि ग्रहण की । लेकिन यह बिल्कुल छोटा-सा स्फटिक का चिकना टुकड़ा था । बस, यही सब कुछ था । जब तुमने इसको उस समय, उस भयानक दृश्य के बीच में देखा था, तो यह चिकना हृदय-विदारक मालूम होता था । वस्तुतः किसी चतुर पुरुष की यह उक्ति बिल्कुल सत्य है—मनुष्य कुछ नहीं, वह परिस्थिति के हाथ का एक खिलौना है । जरा सोचो 'पुष्पक' और उसके सारे आरोही इसी के शिकार हुए । शैतान की आँख ! सचमुच यह शैतान की आँख है ।"

मैंने घृणा के साथ कहा—"फेंक दो इस जघन्य वस्तु को । जाने दो इसे समुद्र में सदा के लिए ।"

हरि—"नहीं, इसकी हमें आवश्यकता है । जब हम अपनी कथा कहेंगे तो उस समय वह उसकी पक्की साक्षी होगी । इस समय इसे हमें अपने पास रखना होगा । हाँ ! माधव ! तुम्हारे पास बहुत-सी पाकेट हैं । लो इसे एक में रख लो । मेरी पाकेट पहिले से भरी हुई है, और बेचारे मोहन के पास तो कोई पाकेट ही नहीं है ।"

मैंने उस टुकड़े को रूमाल में लपेट कर अपनी ऊपर वाली पाकेट में डाल लिया । यही 'पुष्पक' और उसके लुप्त आदमियों की कुंजी और मुर्दों की गुफा का रहस्य था ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शैतान की आँख

मोहन—"इस बात का विश्वास कठिनाई से होता है।"

मैं—"ठीक।"

मोहन—"अब भी मुझे मुश्किल से विश्वास पड़ता है।"

मैं—"और मुझे भी।"

यही बात हमने कई बार दुहरा-दुहरा कर की। अन्तर यही था कि कभी मैं प्रश्नकर्ता होता और कभी मोहन। अन्त में हम दोनों एक-दूसरे के हाथ को अपने हाथों में दबाकर एक निश्चय पर पहुँचे कि यह सब निस्सन्देह सत्य है।

उस गम्भीर समय में अपनी मानसिक शान्ति और स्वस्थता पर हमें बड़ा आश्चर्य होता है। शायद हम दोनों जोश में थे और इसके अतिरिक्त दो वर्ष के बाद मिले थे। दोनों बड़े धीमे स्वर से बात करते थे। इसके अतिरिक्त कभी-कभी हाथ मिला लेते थे। हम दोनों एक ही कम्बल के नीचे बड़े आनन्द से सोये। उस समय मेरा मुंह मोहन के मुँह के पास था। हम दोनों इतने ही दिनों में बहुत बढ़ गये थे।

उस रात निद्रा असम्भव मालूम होती थी और हमने उसकी इच्छा भी न की। हम लोग आपस में तरह-तरह की बात करने में लगे थे। हरि हमसे बीस गज के फासिले पर छाया में सोये थे। उस भलेमानुस ने ऐसी जगह अपना बिस्तरा किया था कि जहाँ हमारी फुस-फुस नीचे की समुद्र-गर्जना को पार कर पहुँच न सकती थी। निद्रा बहुत देर के बाद आई। अन्तिम बात मोहन ने हरि की की थी—

"क्यों माधव ! तुम्हारा हरि पत्थर-सा है ?"

मैं—हाँ, ऐसा ही।"

मोहन—"जानते हो, मुझे क्या ख्याल हो रहा है ? मैं उसके पीछे आग-पानी में कूद सकता हूँ।"

मैं—"मैं भी, और उनके लिए भी। मैंने इस बात का उसी समय अनुभव किया जिस दिन पहिले-पहिल मैंने उन्हें देखा।"

मोहन ने थकावट से एक लम्बी साँस ली। थोड़ी देर बाद अर्द्धनिद्रितावस्था में जम्हाई ली, फिर बुदबुदाया—।

"—मैंने नहीं सोचा था कि यह ऐसा होगा ! यह—"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"यह अभी उसकी जिह्वा पर ही था कि वह निद्रा में मग्न हो गया। उसका सिर उसकी दाहिनी बाँह पर था और बायीं बाँह मेरी छाती पर थी। मैं उसके इस आत्म-समर्पण पर मुस्कुराया और पाँच मिनट के बाद मेरी भी वही दशा थी।

यह पाँच मिनट अनेक विचारों से परिपूर्ण थे, यद्यपि वे विश्रृंखलित थे, जैसे कि निद्रा के समय के विचार साधारणतया हुआ करते हैं। मुझे खूब स्मरण है कि मैंने समुद्र से अपनी भूख के लिये क्षमा माँगी। मैंने कहा—

"मैंने ख्याल किया था, कड़ी मेहनत-मशक्कत, तूफान और धक्के के अतिरिक्त तुम्हारे पास कुछ नहीं है। इसलिए मेरा विश्वास तुम पर से उठ गया था। उस समय मुझसे यही आशा हो सकती थी, किन्तु अब तुमने मुझे बहुत-सी चीजें दीं जिनमें से अन्तिम और सर्वोत्तम मेरा बालमित्र मोहन है जिसे तुमने दिया। समुद्र देव! मेरी क्षमा-प्रार्थना को स्वीकार करो और मुझे अपना आज्ञाकारी सेवक समझो।" इसके बाद मैं निद्रा में लीन हो गया। उस निद्रा में मुझे स्वप्न आने से मालूम हुये। नीचे की लहरों के धक्के से वह पहाड़ हिलने लगी!

मैं कई घंटे सोता रहा। मेरी निद्रा खुली। उस समय समुद्री ऊषा की रक्त-किरणें नीचे समुद्र के उस स्थान पर खूब प्रतिफलित मालूम हो रही थीं जहाँ कि तूफान ने 'शोभा' को पटक कर तोड़ा था। थोड़ी देर तक सोये हुये मैं इस दिन के नवजात शिशु-सूर्य के महान् प्रयास को देख रहा था जो कि सब जगह अपने शत्रुओं को परास्त कर अपना अधिकार जमाना चाहता था। मुझे उस समय कुछ ठण्डक मालूम होती थी, किन्तु जैसे ही मैंने उठकर अपनी रगों को कुछ हर्कत दी, फिर मेरी तबियत ताजी हो गई और मैं अपने में नूतन उत्साह पाने लगा। जवानी की फुर्ती फिर लौट आई। मैंने स्वच्छ और खुली समुद्री हवा को दिल खोलकर पान किया।

मोहन अब भी गहरी नींद में था। मैंने उसे जगाने के बदले अपने आधे कम्बल को भी उसके ऊपर ओढ़ा दिया। अब मेरे दिमाग से कल वाले स्वप्नं की गन्ध निकल गई थी। अब मेरे लिए मैं और मोहन दोनों ही यथार्थ थे। उसके आने ने कितना परिवर्तन उत्पन्न कर दिया। कोई भी वीरान द्वीप वीरान नहीं हो सकता जिसमें मोहन हो। कोई भी निराशामय प्रदेश निराशामय नहीं हो सकता जहाँ आशापूर्ण मोहन उपस्थित हो। अवश्य यह उपस्थिति हर एक वस्तु के आकार में महान् परिवर्तन करेगी।

हरिकृष्ण भी अभी सो रहे थे, किन्तु उनकी साँस बहुत धीमी-धीमी बिना किसी प्रकार का शब्द किये चल रही थी। मैं शौचादि से निवृत्त हो नाश्ता तैयार करने में लग गया। मुझे ख्याल हुआ कि मैं अब इसे उदारता के साथ कर सकता हूँ, क्योंकि अब हमारा मुँह घर की ओर है और शायद रात्रि के आने से पूर्व ही हम लोग उस जगह पर पहुँच जायेंगे जहाँ हमने आते समय अपनी रस का कुछ भाग जमा कर दिया है। मैंने प्रथम दर्जे का नाश्ता तैयार किया। फिर हरिकृष्ण को जगाया—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"नाश्ता तैयार है, सरकार, उठिये।"

उन्होंने अपनी आँखें खोल कर देखा। चीजें तैयार करके अलमूनियम की तश्तरी में रखी थीं और दूध स्टोव पर चढ़ा हुआ था। हरि उठकर झट मुँह-हाथ धोने गये। फिर मैंने मोहन को जगाया—

"उठिये कुम्भकर्ण जी, तुम्हारे भाग्य से फिर रात आयेगी।" मोहन ने कम्बल के नीचे से अपना स्मित मुख बाहर किया। उसने कहा—"मैं जागता था कितनी देर से। सब कुछ देख रहा था।"

मैं—"जाओ जल्दी मुँह-हाथ धोकर तैयार हो जाओ, नहीं तो देखना ही तुम्हारा हिस्सा रहेगा, समझे? मैं बड़ा भूखा हूँ। मेरे लिए दो हिस्से अधिक न होंगे।"

प्रातःकाल के छिटकते हुए प्रकाश में नाश्ता बड़े ही आनन्द का मालूम होता था। सायंकाल के भोजन से मधुर था, क्योंकि उस समय हम थके-माँदे थे और अब खूब तरो-ताजे। हरिकृष्ण चुपचाप खाने में लगे हुये थे, किन्तु मोहन बीच-बीच में अपना नटखटपन दिखाये बिना न रहता था। बीच-बीच में हरिकृष्ण की दृष्टि गुफा के अन्धकार की ओर चली जाती थी। मुझे उसके देखते ही फिर वह पैशाचिक दृश्य स्मरण आने लगा। मैंने उसमे हटाने के लिए कहा—

"चलने के लिए बड़े उत्सुक हैं, क्यों?"

उन्होंने विकसित-बदन हो कहा—"हाँ, हमें बँगले पर चलना है। यहाँ तक का प्रोग्राम तो निश्चित हो गया। अब इसके बाद दूसरा अध्याय सोचना है। तुम्हारी क्या राय है?"

मैं—"बिल्कुल ठीक। भगेलू जब दो की जगह हम तीनों को देखेगा, तो कैसे अचरज में पड़ेगा। यद्यपि इसमें सन्देह नहीं कि वह इस समय हम सबको सर्वथा भूल गया होगा, तथापि सामने जाते ही उसे बातें फिर याद आने लगेंगी।"

मोहन—"इससे भी बढ़कर कितनी बातें उसे याद आयेंगी। मैं बड़ा उत्सुक हूँ कि उसके उस आनन्द को देखूँ जो कि उसे मुझे देखकर होगा। अच्छा अब बाँधा-बूँधी करें। मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मैं समझता हूँ, एक पक्ष सेब का फलाहार आदमी के सभी रोगों को चंगा कर सकता है। मैं जानता हूँ, माधव! जिस समय वह देखेगा, उसे स्वप्न की भ्रान्ति होगी। वाह, क्या खूब।"

मैं—"किन्तु वह तुम्हें खाते देखेगा, तो तुम उसके लिए महामारी हो जाओगे।"

मोहन—"उँह, यह वही, माधव। अब भी है, चलो अब अपना काम ठीक करें।"

हमने इसके बाद का आधा घंटा गठरी बाँधने में लगाया। अब मैं निस्संकोच कह सकता हूँ कि अब की बार की बँधाई मुझे यात्रारम्भ की बँधाई से बढ़कर मनोरंजक लगी। बीच-बीच में मोहन एकाध चुटकुले छोड़े बिना नहीं रहता था।

मोहन—"वाह! कितनी चीजों का गट्ठर तुम बाँध लाये हो। तुमने तो रॉबिन्सन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रूसो की चोटी पर भी लात दे दी। स्वयंसेवक का झोला, स्टोव, बत्ती और क्या-क्या। वेचारा रॉविन्सन न हुआ, नहीं तो उसे काम के बहुत-से गुर अप्रयास ही मिल जाते।"

मैं -"हाँ, ठीक कहा, किन्तु यहाँ उसको इसके लिए कोई गुर न मिलता कि अपने से बड़ों के सामने कैसे जवान में लगाम देनी चाहिए। हाँ, अच्छा लो, जो गठरी चाहो, चुन लो।"

मोहन—"यदि दो वुराइयों में से एक चुनना है, वो मुझे छोटी दो।"

मैं—"बिल्कुल ठीक। ठीक ही कहा, बच्चे। और यही अधिक भारी है।"

अव हमने उस भूमि को अन्तिम नमस्कार किया। अँधेरे में पहुँचते ही, मोमवत्ती जला ली गई। इसके वाद शनैः-शनैः हमारी हँसी बुझ गई, क्योंकि उस अन्धकार के घर में दाँतों को खोलने का हुक्म न था।

हरि अपनी गठरी को लिये आगे-आगे चल रहे थे। मोहन तथा मैं उनके पीछे थे। यह उतराई का रास्ता था। उतराई, जो कंकाल गर्त तक चली गई थी। हमारे लिए अव रास्ता कुछ नहीं था, क्योंकि हमको उसका अनुभव हो गया था, बल्कि हमारे दो साथियों ने तो उसे दो वार तय कर लिया था। मेरा हृदय भी अव यद्यपि शान्त था, तथापि उत्सुकता-भरे हृदय से हरि ने दो-एक बार फिर कर मेरी ओर देखा।

हरि—"ज्वालामुखी-अलाप-विलाप से भरी यह गुफा है। सम्भव है तुमको दूसरी 'आँखें' देखने में आयें, किन्तु इसकी आशा कम है।"

उसके वाद मैंने अनेक बार अपने आस-पास नजर दौड़ाई। रास्ता बराबर जान पड़ा। यद्यपि हमने कई जगह उस चट्टानी दीवार के खनिज-कोष में अनेक बार चमक देखी, तथापि लाल-लाल आँखें करके घूरने वाला वह स्फटिक-नेत्र फिर देखने में न आया।

अन्ततः हम कंकाल-गर्त पर आ गये। वहाँ थोड़ी देर तक दम लिया। उस समय उस पैशाचिक स्थान के विषय में हम में से किसी ने जिक्र न छेड़ा। एक तरह से हम सभी मौन-से थे। सचमुच, मैं नहीं समझता कि किसी ने भी उस समय अँधेरे में उस दीवार की ओर देखा होगा जहाँ कि कंकाल-राशि थी। यद्यपि हमारे लिए यह बड़े आनन्द की वात होती, यदि हम उनकी समाधि वना पाते, तथापि वहाँ इसके लिए गुंजाइश न थी। गढ़े खोदना या पर्याप्त मिट्टी का संग्रह करना असंभव था। जहाँ इतने दिनों से वे पड़े हुए हैं, वहीं उन्हें रहना होगा, अखंडित अन्धकार ही उनकी समाधि है।

अवशिष्ट गुफा की यात्रा अव आरम्भ हुई। यद्यपि रास्ता साफ न था, तथापि पूर्व-परिचित था। हमें पहिले के कई स्थान याद थे। हम लोगों ने इस यात्रा को इतनी अच्छी तरह तय किया कि शायद प्रकाश में पहुँचते-पहुँचते हमें एक घण्टा भी न लगा होगा।

मोहन (लम्बी साँस ले)—"ओह ! मालूम होता है, जैसे कोई अभागा गदहा हूँ।"

मैं—"हाँ, लेकिन, शृंगयुक्त और पुच्छरहित। देखो न, यह तुम्हारे सिर पर काला सींग है ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फिर हम लोग चबूतरे पर चढ़ गये। वहाँ हमने झोरा-झण्डा नीचे पटक दिया और विश्राम करने के लिए पड़ रहे। यहाँ हम कुछ देर तक ठहरे, क्योंकि उस अँधेरे और ऊबड़-खाबड़ ढंग के चलने ने हमारे चित्त को न जाने कैसा-सा बना दिया था। यद्यपि आगे का रास्ता भी कोई अच्छा नहीं था, तथापि उसमें वह कालरात्रि की भयानकता तो नहीं आने वाली थी।

हरि—"गुप्त समुद्र से यहाँ तक आने में हमें एक पूरा दिन लग गया था, किन्तु इसकी वजह यह थी कि हमको रास्ता देखना, जगह-जगह ठहरना और कभी-कभी इधर-उधर भटकना भी पड़ा था। यदि हम लोग सीधे चलते गये तो मुझे आशा है कि सूर्यास्त से पहिले ही किनारे पहुँच जायेंगे।"

मैं—"और बाकी तो सिर्फ झिझिरी खेलना होगा।" मुझे यह नहीं मालूम था कि महापथ के समाप्त करते ही हमारी सबसे बड़ी समस्या आरम्भ होगी।

एक लम्बा दम लेने के बाद हम लोग फिर उठ पड़े। हम जल्दी-जल्दी हरि के पीछे-पीछे चल रहे थे और कोशिश कर रहे थे कि जहाँ तक हो, नजदीक से चलें। किन्तु जितना ही हम आगे बढ़ते थे, उतनी ही हमारे मार्ग की कठिनाई बढ़ती जाती थी। यद्यपि मोहन को द्वीप के बारे कुछ अनुभव हो चुका था, तथापि उसके लिए भी यह आश्चर्यकर था। उसमें लथड़-पथड़ होने से पहिले ही कहा—"हाय रे किस्मत! मैंने एक बार बद्रीनारायण के एक पर्वत की, हाँ, तुंगनाथ की चढ़ाई का वर्णन पढ़ा था, किन्तु मैं उस समय उसे ठीक न समझा सका था। मालूम होता है, वह भी ऐसी ही होगी। लेकिन यह दृश्य, माधव! अफसोस है कि राज-ग्रह में नहीं ले जाया जा सकता, नहीं तो भाग्य खुल जाता।"

मैं—'हाँ, आठ आने का टिकट और लड़कों के लिए आधा टिकट, देखने के लिए। सारा पटना और वाराणसी उलट पड़ता कि शायद बिहार वाले रेल के बच्चे से न काम चलता, पटना से सीधी लाईन लानी पड़ती। लेकिन बच्चू! मैं उसके लिए भगीरथ नहीं बनने जा रहा हूँ। बस! 'बकसें बिलार, मूष बाणा रहि हैं।' इन्हें यहीं रहने दो।"

इसके बाद मैंने देखा कि मोहन आगे बढ़कर हरि के साथ होने के लिए बड़ा जोर लगा रहा है। हरिकृष्ण ने दिग्दर्शक अपने हाथ में ले रक्खा था। जैसे ही जैसे दिन ढलता जाता था, वैसे ही वैसे वे अधिक उत्सुक होते जा रहे थे। अब उनका ध्यान रास्ते की ओर इतना आकृष्ट था कि बातें करने की फुर्सत न थी। मुश्किल से एक-दो बार उन्होंने मुझसे और मोहन से थकने के बारे में पूछा होगा। किन्तु उसमें भी मैंने ख्याल किया कि वे उत्तर की प्रतीक्षा न करते थे। उनके अभिप्राय को जानकर हम लोग भी दिल तोड़कर साथ रहने की कोशिश करने लगे। यद्यपि मैं चलने में बदहवास था, तथापि मोहन की अवस्था देखकर बीच-बीच में एकाध बात उससे किये बिना मन न मानता था। एक बार मैंने कहा—

"कहो मोहन! तुमने कहा था कि तुम्हारे जहाज के आदमियों ने जहाज पर से एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाव उतारी, ठीक उसी समय, जब कि वह टकराने के समीप पहुँच गई थी। तुम ठीक जानते हो कि वह उलट नहीं गई ?"

मोहन—"हाँ, ठीक, यद्यपि मैंने इसे अपनी आँखों से न देखा, तथापि मुझे इस पर बिल्कुल सन्देह नहीं। क्यों ?"

मैं—"क्योंकि, यदि वह उलटती नहीं, सीधे किनारे चली आती, तो आदमी 'गुप्त-समुद्र' का पता लगा लेते और वहाँ जाकर बँगला दखल क लेते। और यह बहुत खराब होता, यदि वह आदमी उत्तम श्रेणी के न होते।"

मोहन—"इसके लिए बेखटके रहो। यह कभी नहीं हो सकता। मैं इसे स्वीकार करता हूँ कि आदमी उत्तम श्रेणी के न थे—कोई-कोई बड़े ही रूखे उजड्ड मल्लाह थे। किन्तु मुझे कदापि विश्वास नहीं कि वे जीवित हैं।"

मैं भी सुस्त न था, तिस पर हरि की बढ़ती हुई उत्सुकता ने और चित्त को चंचल कर रखा था। अब दिन समाप्त हो चला था और तो भी अभी हम वहीं चट्टानों के मैदान में चक्कर खा रहे थे। हम अभी उस स्थान को न पा सके थे जहाँ हम रसद का एक हिस्सा रख गये थे। हरि ने इसका जिक्र भी मुझ से न किया था। जिस समय मैं उन्हें इधर-उधर अपनी तेज दृष्टि दौड़ाते देख रहा था, उस समय मेरा होश और भी उड़ रहा था। यद्यपि यह अकारण था, तथापि ऐसी वह मनहूस जगह थी जहाँ हजारों ऐसी अकारण बातें जमा थीं।

किन्तु एक-ब-एक रंग पलट गया। जिस समय मैं यह सब सोच रहा था, उसी समय हरि एक चट्टान पर चढ़ कर चिल्लाये—

"समुद्र, बस आधा घण्टा और।"

इस जोश ने एक नया असर पैदा कर दिया। इसने हमारी नसों और जाँघों की थकावट भी भुलवा दी। हरि फिर आगे बढ़े। हम लोग साँस बन्द किये उनके पीछे थे। क्रमशः मार्ग की कृच्छता दूर होने लगी और रास्ता चौड़ा दिखलाई देने लगा। दस ही कदम और चले थे और सामने 'गुप्तसमुद्र' आ गया।

यह गोधूली का समय था। दूसरे छोर पर छाया पड़ी हुई थी। बँगला भी साफ नहीं दीखता था। जान पड़ता था अँधेरे में कोई सफेद-सफेद दाग है। मैंने देखा कि अब हम महा-पथ से प्रायः निकल आये हैं। अब आगे एक सौ पचास गज ही बाकी रहा है। सौ गज तक फैले हुए पत्थर और चट्टान, और फिर पचास गज ही बालुका तट बाकी है। इसी बीच मैंने देखा, हरि आधी दूर निकल गये। किन्तु इसी समय एक चिकने पत्थर पर उनका पैर फिसल गया और वे आधी दर्द भरी और आधी असन्तोष भरी कराह के साथ गिर पड़े। तुरन्त ही खड़े हो गये, किन्तु अब पैर पर बल न दिये जाने के कारण उन्होंने एक बाँह मेरे कंधे पर रख ली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरि—"यह बाधा पड़ी। मालूम होता है, मेरे पैर में मोच आ गई है।"

मैं—"वह खुश-किस्मती है कि आपने पैर पहिले नहीं तोड़ लिया। आप समझते हैं कि चल सकेंगे ?"

उन्होंने दो-चार कदम चलकर देखा, किन्तु दर्द बहुत अधिक होता था। फिर रुक गये।

हरि—"ना, मुझे बड़ा सख्त अफसोस है, लेकिन असम्भव है अब तुम्हें नाव लानी पड़ेगी।"

मोहन—"मान लो, यदि गोली दागी जाये तो क्या भगेलू नहीं सुनेगा, और नाव नहीं लायेगा ?"

आरम्भ में यह ख्याल अच्छा मालूम हुआ, किन्तु विचारने के बाद मैंने इसे व्यर्थ समझा—"छोड़ो, इसकी जरूरत नहीं। वह बिस्तरे पर चला गया होगा। यदि सुनेगा भी तो अपनी अनेक कल्पनाओं में से इसे भी एक समझ लेगा, क्योंकि यह निश्चय है कि अब तक वह हमें भूल गया होगा।"

हरि ने स्वीकारते हुए कहा—"अच्छा है, तुम दोनों जाओ, मैं यहाँ बैठा प्रतीक्षा कर रहा हूँ। यदि बहुत अँधेरा भी हो जायेगा, तो भी मैं तुम्हें पुकार सकूँगा अथवा बत्ती दिखा सकूँगा।"

मैं—"बहुत ठीक आपने फरमाया। आप समझते हैं कि हम आपको अकेले छोड़कर चले जायेंगे ? नहीं, जनाब, तृतीय अफसर साहब, यह हमारा इरादा नहीं है। मोहन, अपने सेब के फलाहार के बाद भी खतम हो चुका है, उसे भी जरा दम लेने की आवश्यकता है। मैं अकेला बँगले को जा रहा हूँ नाव लेने। आप इसके लिए कोई चिन्ता न करें। भगेलू मुझे पहिचान भी सकेगा और मोहन उसके लिए एक विचित्र जन्तु-सा होगा, जिससे वह यदि भड़क भी जाय तो कोई सन्देह नहीं।"

मेरा तर्क लाजवाब था। अन्त में दोनों को इसे स्वीकार करना पड़ा। हमने अपनी-अपनी गठरी वहाँ बालू पर रख दी और कम्बलों को बिछा दिया जिस पर कि दोनों आराम करें। अब मैं खाली हाथ था। किन्तु इसी समय मैंने एक भारी भूल की। मैंने अपनी जेब से पिस्तौल निकाल कर मोहन के कम्बल के पास रख दी, यद्यपि अब तक उसे मैंने बराबर साथ रक्खा था। अब मैंने किनारे-किनारे जहाँ तक मुझसे हो सकता था, जल्दी-जल्दी आगे बढ़ना शुरू किया।

मेरे चले जाने के तीन मिनट बाद हरि की नजर मेरे रिवाल्वर पर पड़ी, वह आश्चर्य और भय से ठक हो गये, उन्होंने अपने ओठ खोले और चाहा कि मुझे वापस बुला लें, किन्तु मेरी थकावट का ख्याल करके फिर मुँह बन्द कर लिया।

RajGuru Math, Ṣhivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बँगलें में क्या देखा-सुना

मैंने पहिले कहा था कि 'गुप्त समुद्र' की लम्बाई एक मील से कुछ अधिक होगी। अतः मुझे डेढ़ मील के करीब चलना था। अब अँधेरा हो गया था। मेरे पैरों के नीचे की काली रेत बड़ी चिकनी और चलने में मुश्किल थी। मैं एक पैर जमा कर जैसे ही दूसरा पैर उठाना चाहता था, वैसे ही पहिला अपनी जगह से आधा कदम पीछे हट जाता था। मैं आगे बढ़ने की कोशिश में बहुत जल्दी कर रहा था, किन्तु मुझे सफलता मिलती नहीं जान पड़ती थी। मैंने बालू छोड़ ऊपर से चलना चाहा तो देखा कि वह उससे भी कठिन और भयानक काम है। वहाँ रास्ते में बड़े-बड़े पत्थर पड़ते थे जिनसे उस अँधेरे में पैर तोड़ बैठना आसान था। मैंने लाचार फिर वही रास्ता पकड़ा। देर ही लग सकती थी, किन्तु सुरक्षित तो था।

यह कहना कठिन है कि क्योंकि जितना ही मैं आगे बढ़ता जाता था, मेरी बेचैनी बढ़ती जाती थी। शायद उस भयंकर टापू में उस पैशाचिक अन्धकार में, उस जादू के समुद्र के किनारे यह पहिला समय था जबकि मैं अकेला था। इसके अतिरिक्त हरि की वह उत्सुकता थी जिसके चिह्न मैंने स्पष्ट उनके मुखमण्डल पर देखे थे। यह सभी बातें एकत्रित होकर मेरे ऊपर इतना अधिकार जमा चुकी थीं कि बँगले से आवाज भर की दूरी पर पहुँचते-पहुँचते मुझें चारों ओर कुआँ और भूत-प्रेत का ही भ्रम होने लगा था। इसमें सदेन्ह नहीं, यदि उस समय अकस्मात् कोई एक कंकड़ भी खड़खड़ाता तो मैं चिल्लाकर भाग उठता।

कोई भी इस प्रकार की घटना नहीं हुई। अन्त में जो चीज मुझे दिखाई भी दी, वह मेरे लिये अधिक आनन्ददायक और उत्साहप्रद थी। यह एक रोशनी—लैम्प की रोशनी थी, जो शनैः-शनैः अधिक स्पष्ट होती जाती थी। वह बँगले की एक खिड़की द्वारा आ रही थी। पहिले-पहिल जब मैंने देखा तो मुझे इतनी खुशी हुई कि मैंने चाहा कि बूढ़े भगेलू को आवाज दूँ। किन्तु इस डर से कि इस हल्ले से बेचारे को नाहक कष्ट होगा, मैं अपने इरादे से बाज आया। इसके बाद फिर एक बार भय मेरे चारों ओर जमा होने लगा। यद्यपि यह बेवकूफी थी, यह मैं जानता हूँ, तथापि हुआ ऐसा ही।

फिर कोई बात बड़े जोर से मेरे सामने आई।

समुद्र अब घोर अंधकार में था, किन्तु उसमें दूर तक 'पुष्पक' श्वेत ढाँचा-सा मालूम होता था। वह वहाँ वैसा ही था, जैसा कि मैंने उसे पहिले नीरव, मृत और महान् देखा था। मैंने थोड़ी देर तक ठहर कर देखना चाहा, किन्तु वहाँ कोई वस्तु स्पष्ट न थी। इसके बाद मेरी नजर घाट पर पड़ी जहाँ छोटी डोंगी सदा खड़ी रहती थी। वह अब भी बड़ी मजबूती के साथ बँधी, सुरक्षित थी। ऐसा भगेलू दोनों बोटों के बह जाने के बाद सावधानी से किया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करता था। मैं उसके ढाँचे मात्र को देख सकता था।...मैं थोड़ा ओर ठहरा, उत्सुकतापूर्ण दृष्टि से अन्धकार को चीर कर उसे फिर एक बार देखना चाहा। वह ढाँचा डोंगी का न था। निस्सन्देह, वह नाव से, जिसे मैं अस्पष्ट देख सकता था, डोंगी से अधिक बड़ी थी।

यह बहुत अच्छा हुआ कि मैं वहाँ देखने के लिए खड़ा हो गया। मैंने दो-तीन लम्बी साँसें लेकर गति को साधारण कर दिया। उधर बालू में चलने से आती हुई आवाज भी बन्द हो गई। इस सन्नाटे में बँगले की ओर से कुछ आवाज आती जान पड़ी।

उन शब्दों के साथ मुझे धक्का-सा मालूम हुआ। यह आवाज भगेलू के रामायण पढ़ने की नहीं थी। यह दूसरी तरह की आवाज थी, उतनी दूर से यद्यपि मैं यह निश्चय न कर सकता था कि वह किसकी है, तथापि एक बात निश्चय हो गई। मैं अब खबरदार हो गया। अब मुझे वहाँ भय और सन्देह अनुभव होने लगा। अब वह उत्सुकता और प्रसन्नता मुझसे दूर गई। मैं इसी अवस्था में दबे पाँव आगे बढ़ा।

अब मैं बँगले से पचास गज की दूरी पर उससे कुछ नीचे की ओर था। जब मैंने एक क्षण उधर ध्यान लगाकर सुना तो मेरी अकल ठीक हो गई और वहाँ से हटकर मैं एक सुरक्षित जगह में चला आया। अब मैं तट से समथर भूमि की ओर घूम गया। यहाँ से मैं बगल में तथा पीछे से होकर भी स्वेच्छानुसार बँगले के पास जा सकता था। मैंने अपने जूतों को खोलकर अलग कर दिया।

इस समय मेरे बढ़ते हुए आतंक ने बड़ा अच्छा किया। अब मेरी घबराहट दूर हो गई थी और मेरे दिल में हिम्मत आ गई थी जो कि दस मिनट पहले मुश्किल थी। उस पैशाचिक द्वीप के अन्धकार और नीरवता में भय की अपेक्षा, जीवित शत्रु विशेष जानने योग्य वस्तु है। मैंने निश्चय कर लिया कि चाहे कुछ भी हो, देर किये बिना वास्तविक खतरे का पता लगाना आवश्यक है।

बँगले के पीछे की ओर खिड़की न थी, अतः उधर से कुछ पता लगाना असम्भव था। मैंने देखा था कि प्रकाश उस कमरे से आ रहा है जिसमें अपने मालिक के नमूनों की खबरदारी करते हुए भगेलू सोता था। मैं बिल्ली की भाँति दबे पाँवों बँगले के कोने पर पहुँच गया और थोड़ी देर वहाँ खड़ा होकर सुनता रहा। सचमुच वहाँ दो धीमी-धीमी आवाजें खण्डित वार्तालाप की थीं। मुझे यह जानने में देरी न लगी कि भाषा अँग्रेजी थी। बँगले का दरवाजा खुला हुआ था और उसी प्रकार उस कमरे का भी दरवाजा खुला था जिससे आवाज आ रही थी।

धीरे-धीरे सरकते हुए मैं दरवाजे के पास पहुँच गया और झाँककर भीतर देखा। यद्यपि द्वार आधा खुला था, तथापि कुछ भी नजर न आया। कुछ भी देख पाने के लिए मुझे खिड़की का सहारा लेना होगा! मैं अब खिसकते-खिसकते जँगले के पास जा पहुँचा। अपने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपको प्रथम आड़ में छिपा कर, फिर जरा पीछे हटकर, मैंने अपने सिर को जरा आगे बढ़ाया और अन्दर झाँककर देखा।

कमरे की छोटी मेज खिड़की के पास रखी थी। इस जगह महाराज अपने प्रतिदिन के नमूनों को रखकर उनका पृथक्करण और सूचीकरण करते थे। भगेलू के सोने की चारपाई हमेशा कमरे के बीच में रहा करती थी। किन्तु उस समय स्थान में कुछ परिवर्तन दिखाई पड़ा। मैं चारपाई को बिल्कुल न देख सका। अतः अनुमान हुआ कि शायद खींचकर खिड़की की आड़ में कर दी गई हो। मेज के पास दो आदमी बैठे हुए थे जिनके शब्द अब भी मैं सुन रहा था। भगेलू की लालटेन मेज पर उनके बीच में खूब जल रही थी। उनके सामने एक बोतल शराब, कुछ प्याले तथा और खाने के बर्तन थे। वे खाना खा रहे होंगे, किन्तु खाना और अब शराब के साथ-साथ बात कर रहे थे।

इतना सब जानने से पूर्व ही मैंने उन आदमियों को पहिचान लिया। किन्तु अब उनके सिर नंगे थे। मैंने इस तरह उन्हें न देखा था। दाहिनी ओर के आदमी के बाल बहुत छोटे और प्रायः श्वेत थे और दूसरे के लम्बे काले-काले बाल गर्दन पर पड़े हुए थे। एक का चेहरा स्थिर भूरा और पतला था, और दूसरे का भारी, गम्भीर शान्तिद्योतक, जिसमें मोटे लेन्स के चश्मों के बीच गहरी आँखें थीं। एक आदमी कद का छोटा और फुर्तीला था और दूसरा लम्बा, मजबूत और भारी। पहिली ही बार देखने के बाद मैंने उन्हें अच्छी तरह पहिचान लिया। एक मौड-मूलर का कप्तान स्टुअर्ट जेक्सन था और दूसरा उसका साथी चुप्पा भूगर्भ-शास्त्र का प्रोफेसर।

मुझे आश्चर्य होता है, जब मैं ख्याल करता हूँ कि इतना पहिचानने के बाद क्यों नहीं मैं आनन्द के मारे चिल्ला उठा तथा उनके स्वागत के लिए दौड़ गया। यह स्वाभाविक भी होता, क्योंकि हम लोग उनके आने की प्रतीक्षा में थे। किसने मुझे रोक दिया—बचा लिया, यह और कुछ नहीं एक लड़कपन, एक बदमाशी थी। मैंने आनन्द-ध्वनि नहीं की; न दौड़कर घर में घुस गया। पता लगने के पहिले धक्के के बाद मैं चुपचार यह जानने के लिए खड़ा हो गया कि क्या खबर है और उसका हम सबसे क्या ताल्लुक है? तब मैं धीरे से दरवाजे के पास गया। मेरे दिल में यह इच्छा न थी कि मैं एकदम उनके पास चला जाऊँ। मैं खड़ा-खड़ा सुनना चाहता था कि वह क्या बात कर रहे हैं और इसी में जब कोई अनुकूल प्रकरण जायेगा, तो उसी समय मेरा नाटकीय प्रवेश होगा।

मेरे विचार को कार्य-रूप में परिणत करने का अच्छा मौका था। बाहरी द्वार खुला था और अन्दर का अधखुला। मुझे सिर्फ बरामदे में खड़े होकर अवसर की प्रतीक्षा करनी होगी। मैंने यह सब काम बारीकी से, बिना किसी प्रकार की आहट दिये किया। मैंने दबे पाँव बरामदे में कमरे के द्वार से दो हाथ के फासिले पर चला गया। यहाँ से उनकी बातचीत मैं स्पष्ट सुन सकता था। उनके द्वार से लैंप बरामदे में प्रकाश फेंक रहा था जो मेरे पैरों से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक गज की दूरी पर पड़ता था। उतने प्रकाश के अतिरिक्त बड़े द्वार तक सारा बरामद अन्धकार में था।

पहिले से मैं पकड़ न सका कि वे क्या बात कर रहे हैं, क्योंकि मेरा ध्यान एक दूसरी चीज की ओर था। इसी बरामदे में, जहाँ प्रकाश पड़ता था, उससे जरा आगे, ढेर-सी, ढीली-ढीली बँधी हुई कोई चीज थी। उस रोशनी को लाँघकर उसके पास जाकर मैं न देख सकता था, क्योंकि इससे मैं दिखाई पड़ जाता। मालूम होता था, कोई लम्बा चोंगा या ओवरकोट है जिसे मैंने समझा कि नवागतों में से किसी ने शायद असावधानी से वहाँ फेंक दिया है। इससे आगे मैं कुछ न सोच सका और मैंने इस ख्याल को छोड़ दिया। लेकिन धीरे-धीरे अँधेरे में मेरी आँखें अभ्यस्त होती जा रही थीं। उस ढेर के करीब ही कोई चीज थी जो अन्धकार से पृथक् कुछ सफेदी लिए हुए थी। यह सफेद चीज थी। जान पड़ता था कि आदमी का हाथ जोर से बँधा हुआ है......और उसके नीचे की ओर का काला दाग, यह क्या था? क्या पानी था?

मैंने साँस रोक ली। मेरे दिल में भय होना शुरू हुआ। मैं सोचने में असमर्थ था। मुझे जान पड़ता था कि क्या सोचूँ। एक मिनट तक इस अवस्था में रहने के बाद दूसरा स्पष्ट विचार आया आदमी का हाथ? अगर यह सचमुच हाथ है तो यह ढेर ओवरकोट नहीं हो सकता......। यह अवश्य आदमी होगा......

अब भयानक आतंक मेरे ऊपर—सारे शरीर और मन पर छाने लगा। आदमी! कोई आदमी ऐसी जगह पर सोना न स्वीकार करेगा......और तिस पर उस ढेर से साँस और हर्कत का पता न था। यदि यह आदमी ही है तो अवश्य एक मृत मनुष्य हो सकता है। और वह दाग—जिस पर हाथ पड़ा है! पानी।

इसके बाद सन्नाटा, मेरे आतंक का सन्नाटा। मैंने कमरे के भीतर के शब्द सुना। यह पहिला स्पष्ट शब्द कप्तान जेक्सन के स्वरों में था—

"किन्तु मैं खून नहीं पसन्द करता!"

मालूम हुआ, जैसे यह मेरे प्रश्न का उत्तर है। यद्यपि भयंकर था तथा मेरे लिए लाभदायक हुआ। मैंने छाया में पड़े-पड़े उस ढेर की ओर से ख्याल हटाया। मेरी दशा उस समय ऐसी हो गई, जैसे किसी बेहोश होकर गिरते हुए आदमी पर ठंडा पानी पड़ जाय। मैंने आत्मस्थ होने का प्रयत्न किया और सावधान तथा चिन्ताशील हो गया। मालूम हुआ, बरामदे के रहस्य की कुंजी कमरे के अन्दर है और मैं इसे चाहता भी था।

कप्तान के शब्दों के जवाब में एक हँसी सुनाई पड़ी। इस उत्तर ने उस दुबले आदमी के दिल में बेचैनी पैदा कर दी और उसने अब की और स्पष्ट करके कहा। मैं जरा और आगे क ो खिसका कि जरा झुककर वक्ताओं को देखूँ। कप्तान की पीठ मेरी ओर थी और प्रोफेसर अपने साथी की ओर न देखते हुए अपने पास के फर्श की ओर देखते हुए बैठा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कप्तान—"नहीं, मैं खून नहीं पसन्द करता। और मेरी समझ में, महाशय! आपको इससे बचना चाहिए था। इसकी यथार्थ में कोई आवश्यकता न थी।"

प्रोफेसर अब भी ऊपर की ओर ताक रहा था। उसने अबकी शब्दों में उत्तर दिया—"मत बेसमझ बनो। यह आदमी नहीं था, यह था केवल भूत—छाया। मैंने उसे सिर्फ कैद से मुक्त कर दिया है। इसके अतिरिक्त, मैं क्या कर सकता था। जब तक वह जीता, हम इस निधि को हाथ न लगा सकते थे। तुम्हें मालूम है, उसके पास एक पिस्तौल थी। वह जो कुछ भी जानता था, बस यही जानता था कि वह यहाँ का चौकीदार है। किन्तु उसे यह नहीं मालूम था......।"

सन्तुष्ट करने के लिए यह स्पष्ट गम्भीर तर्क था। इसका एक-एक वाक्य हथौड़े की चोट थी। कप्तान जेक्सन ने थोड़ी देर तक कुछ उत्तर न दिया और जब दिया तो वह स्थान-भ्रष्ट हो चुके थे। कप्तान—जो कुछ भी हो, यह खेदजनक है। यदि और किसी ने जान लिया तो मामला भयानक हो जायगा।"

प्रोफेसर—"हाँ, सचमुच यह खेदजनक है। किन्तु हम दोनों के अतिरिक्त कोई नहीं जान सकता।"

मालूम हुआ, इन निठुर दलीलों से कप्तान को सन्तोष हो गया। उसने गिलास मुँह में लगाया। जिस समय वह इस प्रकार शराब पी रहा था, उसका रिवाल्वर उसके हाथ के नीचे मेच पर लैम्प के नीचे रक्खा था। इसी समय मुझे स्मरण हो आया कि मैं अपना रिवाल्वर छोड़ आया। ओह! मैं कैसा बेवकूफ गदहा था! एक घूँट लेकर उसने पैंतरा बदल दिया—

"मैं स्वीकार करता हूँ, प्रोफेसर! कि तुम्हारे पास उत्तर की दरिद्रता नहीं है और जो कुछ तुम कहते हो, वह एक प्रबल तर्क पर अवलंबित होता है।...किन्तु संयोग का भी तो ख्याल करना चाहिए......क्योंकि संयोग मिल सकता है।"

प्रोफेसर—"किन्तु इस काम में नहीं। यहाँ डर चीज पक्की है।"

कप्तान—"हाँ, ठीक, जहाँ तक किया जा सकता है। मैं यह कहने के लिए बिल्कुल तैयार हूँ कि आप इसमें उस्ताद हैं। किन्तु यहाँ तक और मार्ग है, उस गुफा वाला। मैं उसे बिल्कुल नहीं पसन्द करता। किन्तु कुछ भी हो, वह एक ऐसी चीज है जिससे संयोग भिड़ सकता है।"

तब प्रोफेसर ने अपने सिर को ऊपर उठाया और मोटे-मोटे चश्मों के भीतर से अपने साथी पर उसने एक गम्भीर नजर डाली। उसने कहा—

"उस गुफा को मैं आप पर छोड़ता हूँ। यह आपका काम है। किन्तु मुझे उसका डर नहीं है। हम लोग कुशलपूर्वक जहाज पर पहुँच सकते हैं।"

थोड़ी देर के सन्नाटे के बाद कप्तान ने धीमे स्वर में कहा—"और तब?"

प्रोफेसर—"उसके बाद घर, अपनी निधि की परीक्षा में, जैसा कि मैंने कहा। तब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैक्सन ! तुम्हारे लिए एक अच्छा इनाम होगा जो तुम्हें जिन्दगी भर के लिए मालामाल कर देगा—यदि हमारी निधि निराशाजनक न हुई।"

कप्तान जैक्सन फिर चुप हो गया, किन्तु एक ही मिनट के लिए। अब मुझे उसके ढंग से मालूम होने लगा कि उस पर शराब का असर हो आया है।

कप्तान—"और यदि यह निराशाजनक नहीं हुई तो प्रोफेसर, यह कहाँ जायगा ? क्या उसके पास जिसके राज्य में यह चट्टानें हैं या उस बेचारे के उत्तराधिकारियों के पास जिसने पहिले-पहल इस गुप्तकोष को ढूंढ़ निकाला है ? या उनके लिए भाग होगा ? क्या ऐसे प्रश्नों की भी कोई आवश्यकता है।"

एक बार हँसते हुए प्रोफेसर ने अपनी तीखी नजर को अपने साथी के चेहरे पर गड़ाकर कहा—"नहीं, जैक्सन ! इसके पूछने की कोई आवश्यकता नहीं।"

कप्तान—"यह ठीक है। मुझे दोटूक बात अच्छी मालूम होती है। तो आप इसकी सूचना न ब्राजील वालों को देने जा रहे हैं और न संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका वालों को।"

प्रोफेसर—हाँ ! कप्तान, इसके बारे में मैं समझता हूँ आपको रोड़ा न अटकाना होगा। आप अपना हिस्सा लीजिये और अल्ला-अल्ला-खैर-सल्ला।"

कप्तान कुछ होश में आते हुए—"हाँ,प्रोफेसर ! मैं आपका अपमान करने के ख्याल से नहीं पूछ रहा था; अच्छा, जाने दीजिये। लेकिन क्या हम लोग रात भर उस भूत को बरामदे में रखे इस घर में सोयेंगे या उसे किसी ठौर ठिकाने लगाना होगा।"

प्रोफेसर—"क्यों ? मुझे इसमें कोई हर्ज नहीं है, किन्तु यदि तुम्हारी इच्छा हो, तो इसे पानी में फेंक आओ।"

कप्तान—"नहीं, जनाब, मैं कुछ नहीं करूँगा। मैंने कह दिया कि मुझे खून पसन्द नहीं है। मैं बड़ा कृतज्ञ हूँगा यदि आप स्वयं यह काम करेंगे।"

मैंने प्रोफेसर की ओर से स्वीकार का-सा संकेत पाया। उसी समय मैं दबे पाँव वहाँ से बाहर निकल गया। कुछ ही देर में मैं एक चट्टान की आड़ में चला गया जो बँगले के दरवाजे से दस हाथ पर अँधेरे में थी। वहाँ से एक मिनट के बाद मैंने देखा एक आदमी के हाथ में एक लम्बी गठरी-सी है। वह आगे बढ़ा और थोड़ी देर में मैंने पानी में किसी चीज के गिरने की-सी आवाज सुनी। तब वह आदमी बँगले की ओर लौटकर अन्दर आया और उसने द्वार बन्द कर लिया।

———

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुष्पक का अन्त

हरि और मोहन मेरे लिए अब कुछ उत्सुक होने लगे थे। मुझे गये दो घंटे हो गये थे। यद्यपि हमने अन्दाज किया था कि इसके आधे ही समय में बँगले पर जाकर नाव द्वारा लौट भी आऊँगा। नाव द्वारा लौटने के ख्याल से उनका ध्यान बराबर समुद्र की ओर था। बहुत देर की प्रतीक्षा के बाद उन्हें जान पड़ा कि दूर पानी में छींटा उठने की-सी आवाज आई। निस्सन्देह उन्होंने इसे सुना होगा, किन्तु यह वही भगेलू की अन्त्येष्टि थी।

इसके बाद वह लोग विश्वास और उत्सुकता भरे हृदय से प्रतीक्षा करने लगे। उन्होंने निश्चय कर लिया कि मैं चला आ रहा हूँ और यह ठीक भी था। किन्तु उस मार्ग से नहीं। कोई एक घंटा बीत गया, हारा-थका, पसीने-पसीने, भय और घबराहट से आधा पागल-सा मैं उनके पास पहुँचा। आप अनुमान कर सकते हैं कि मेरी भीषण कथा सुनकर उनके हृदय पर कैसा प्रभाव पड़ा होगा।

बँगला—डाकू, हत्यारे! उन्होंने गरीब भगेलू को मार डाला—और समुद्र में फेंक दिया। पहिले-पहल मैं बहुत घबराया हुआ था। मेरे मुँह से बात तक न निकलती थीं, क्योंकि मैंने अपनी आँखों से उस भयानक अभिनय का उपसंहार देखा था। मैंने समझ लिया कि कथा को अच्छी तरह सुनाने के लिए स्वस्थ होने की आवश्यकता है। फिर वहीं बैठकर साँस लेने लगा। मोहन ने एक गिलास शर्बत देकर और अच्छा किया। फिर कम्बल पर झुके-झुके मैंने एक-एक करके सारी बात कह सुनाई।

एक बार सबके चेहरे पर सन्नाटा छा गया। उनके ढङ्ग से मुझे मालूम हुआ कि उसका असर उन पर भी मुझसे कम नहीं हुआ है। जब मैं कथा कह रहा था तो मेरे ऊपर प्रश्नों की बौछार होने लगी। यथाशक्ति मैंने उत्तर देने का प्रयत्न किया। फिर उन्होंने यह असन्दिग्ध यथार्थ स्वीकार कर लिया। हरि के हृदय में बूढ़े भगेलू के दुर्भाग्य पर ही सन्ताप नहीं था, जान पड़ता था उनका ध्यान किसी और चीज की ओर भी गया। उन्होंने बदला लेने का प्रस्ताव ही नहीं उठाया। दृढ़ता से कहा—

"चढ़ाई करने का ख्याल ही फिजूल है। पहिली बात तो यह कि इन, पैरों से मैं वहाँ पहुँच ही नहीं सकता और दूसरे, इससे कोई लाभ नहीं।"

मैंने विरोध किया—"हमारे पास दो रिवाल्वर हैं।"

हरि—"और उतने ही उनके पास भी हैं, माधव! अधिक नहीं हों तो भी वे उनका प्रयोग उनसे अच्छा जानते हैं। वे हैं भी सुरक्षित स्थान में। यदि तुम वहाँ गये, तो वे खिड़की से ही तुम पर फैर करेंगे।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैं—"तो फिर बेचारा भगेलू ?"

हरि—"हाँ, ठीक, यह बड़ी ही गर्हित हत्या है और इसका बदला अवश्य मिलना चाहिए। किन्तु उसके खून के बदले हमें नाहक और खून न करने चाहिए। हमें भी एक बड़ी चाल चलनी होगी, जानते हो न, वे बड़े ही चालबाज हैं।"

मोहन बोल उठा—"खास करके प्रोफेसर।"

हरि ने सिर हिलाकर स्वीकार किया। तब मैंने अपनी बात छोड़ दी। हम लोगों के सामने एक बड़ा काम है; यह हमारे नेता के चेहरे से मालूम होता था।

मैंने कुछ न सोच सकते हुए कहा—"हमें क्या करना चाहिए ?"

हरि—"पहिले तो हमें तट से हट जाना चाहिए, नहीं तो सवेरे शायद वह रोशनी या उजाले में देख लेंगे। और यदि एक बार भी उन्होंने हमें देख लिया, तो वे हमारा सर्वनाश किये बिना न रहेंगे।...एक खून दूसरे खून के लिए मजबूर कर देता है, समझे ?......पीछे की चट्टानों में हमें रात भर शरण लेनी चाहिए। फिर सवेरा होने पर देखा जायगा कि हमें क्या करना चाहिए।"

यह स्पष्ट और पक्की सलाह थी। इसमें जोशीलापन और उभाड़ने की बात न थी। जोशीला और सीधी-सादी होने पर भी यह एक युद्ध-घोषणा थी जो एक ऐसे आदमी की ओर से हुई थी जो कि बहुत ही विचारशील और हृदय का अत्यन्त दृढ़ था जिसको मन्सूबे से उसके डिगाना टेढ़ी खीर थी। जब मैंने यह देखा, तो मैं अपने ख्याल को छोड़ दिल से उसका अनुयायी बन गया। मेरा स्वभाव है, चतुर और शान्त मस्तिष्क का अनुसरण करना। मैंने अपने हृदय में दृढ़ संकल्प कर लिया कि चाहे कुछ भी हो, इस युद्ध में उस दिमाग के पीछे-पीछे मैं अन्तिम समय तक लड़ूँगा। जहाँ भी वह मिलेगा, मैं जाने के लिए तैयार रहूँगा।

अब हमने अपना मुकाम वहाँ से छोड़कर थोड़ी दूर पीछे हटकर दो चट्टानों के दर्मियान रखा। यद्यपि मार्ग नहीं था जिससे हम आये थे और मारे भय के मोमबत्ती भी जला न सकते थे, तथापि सौभाग्य से हमें वहाँ आने में कोई चोट-फोट न आई। यह नई जगह सुरक्षित थी। यहाँ पर कम्बल बिछाने के लिये भी हमें स्थान मिल गया। हरि के पैर में दर्द था और उसका जल्दी से अच्छा हो जाना भी हमको अभीष्ट था, अतः अब उसकी चिकित्सा शुरू हुई। मैंने स्टोव जलाने की थोड़ी स्प्रिट निकाली और उसी से पैर को पहिले धीरे-धीरे फिर अच्छी तरह मलना शुरू किया। घण्टों मालिश के बाद जब उसमें छूने से दर्द न जान पड़ा, तब हरि के मोजे के साथ अपने भी दोनों मोजों को पहिनाकर कपड़े से उसे कसकर बाँध दिया। हरि ने दूसरे दिन कहा कि यदि यह चिकित्सा न हुई होती, तो वह दूसरे ही दिन टहलने लायक न हो गये होते।

कुछ देर तक तो इसी काम मैं रहे, उसके बाद भी नींद का आना कठिन हो गया। हम धीरे-धीरे बातचीत करने लगे। हरि ने बताया कि किस-किस बात का ख्याल आ रहा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरि—"वे सबेरे यहाँ से चले जायेंगे। बहुत सम्भव है, ज्वार की प्रतीक्षा कर रहे हों। वह किसी तरह भी गुफा के अन्धकार की ओर कदम न रखेंगे। जिस बोट को तुमने, माधव, वहाँ खड़ा देखा था, निस्सन्देह वह उनका छोटा अग्निबोट था। तुमको याद होगा, उनके जहाज पर भी एक ऐसी ही नाव थी।"

मैं—"हाँ, मैंने देखा था।"

हरि—"और जब वे चले जायें तो हम खुशी से बँगले पर चल सकते हैं। अब इसकी सम्भावना नहीं है कि वे फिर लौट कर आयेंगे। उनका मनोरथ पूर्ण हो गया। अब वे किसी प्रकार निकल भागना पसन्द करेंगे।"

मैंने उत्सुकता से कहा—"लेकिन क्या था जिसे वे चाहते थे और वह निधि क्या थी, जिसकी बात डेलिंग करता था!"

हरि थोड़ी देर चुप रहे, फिर बोले—"अच्छा, मेरे दिल में एक ख्याल आ रहा है, किन्तु जब तक कुछ और न मालूम हो जाय, मैं उसे कहना नहीं चाहता। वे स्वयं भी उस विषय में निश्चित न थे। तुमने उन्हें हताश होने की आशंका करते हुए भी सुना था! किन्तु यदि एक बार मैं बँगले को अच्छी प्रकार देख सका तो इसके बारे मैं दृढ़तापूर्वक कह सकूँगा।"

मेरे दिमाग में भी एक कल्पना थी जो शायद कल्पना नहीं, किन्तु उससे कुछ अधिक थी—कुछ निश्चय-सा था, किन्तु जब मैंने देखा कि उन्होंने बात इस तरह टाल दी तो मैंने भी अपने ख्याल को दिल ही में रख छोड़ा। मोहन एक कदम आगे बढ़ा और बोला—

"उनके ख्याल में वह कोई अच्छी चीज थी, अन्यथा वह हत्या करने पर उतारू न होते।"

हरि—"हाँ, किन्तु यह भी तुम्हें याद रखना चाहिये कि डेलिंग जैसा आदमी एक मनुष्य के प्राण को वैसा ही नहीं समझता, जैसा कि हम समझते हैं, क्योंकि वह वैज्ञानिक है और वैज्ञानिकों के कितने अपने सिद्धान्त हैं जिन्हें सुनकर साधारण आदमी घबरा उठेंगे। दूसरे वह स्वार्थी था, जानते हो न 'अर्थो दोषं न पश्यति'।"

मैं—"किन्तु बूढ़े भगेलू को मार कर तो उसने आफत ही मोल ले ली। यदि इसका पता लगा, तो अवश्य गिरफ्तार होकर खण्डित होना होगा?"

हरि—हाँ, तब भी उसे अपनी करनी पर असन्तोष नहीं हुआ। इसका एक मात्र साक्षी कप्तान है, दूसरे किसी की उपस्थिति का उसे गुमान तक नहीं है और कप्तान के लिये तुम्हें निश्चय है कि उन्हें शपथ उठाते देरी न लगेगी। वे यह भी कह सकते हैं कि धोखे से हो गया था, इससे भी एक कदम आगे—उन्होंने आत्म-रक्षा के लिये गोली चलाई। तुम जानते हो, भगेलू के पास एक रिवाल्वर था और उसने अवश्य ही अपने स्वामी की सम्पत्ति के लिये जान तक दे दी होगी। निस्सन्देह उस सच्चे आदमी ने इसी स्वामिभक्ति में अपने प्राण अर्पण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किये। गिरफ्तारी के लिये तुम्हारी बात तक भी माधव अच्छी तरह नहीं सुनी जा सकती है। समझे !"

अब मैंने देखा और अनुभव किया कि बात उतनी आसान न थी जितनी कि मैंने ख्याल की थी। अब मैंने उनकी बातचीत का एक दूसरा अंश लिया—

"उसका इससे क्या अभिप्राय था जब कि वह कह रहा था कि यदि एक सप्ताह और चला ज़ाता तो फिर बात असम्भव हो जाती, फिर अवसर सदा के लिये हाथ से निकल जाता।"

हरि—"इसके विषय में मैं कुछ नहीं कह सकता। मैं इस पर विचार कर रहा था, किन्तु मुझे कुछ भी नहीं समझ पड़ता। शायद इसका पता आगे चलकर लगे।"

इस तरह हम विषय पर उलट-पलट कर कई तरह से वार्तालाप करने रहे। आखिर-कार प्रकृति ने मजबूर किया। निद्रा भगवती की पधरावनी हुई। मोहन सबसे पहिले चरणों में झुका। जब मैंने उसकी ओर देखा तो उसका सिर कम्बल पर पड़ा हुआ था। हमने निद्राभंग होने के भय से अब बात करनी छोड़ दी। हरि का पैर अब अच्छा था। जरा ही देर में उन्होंने भी आत्म-समर्पण किया। पहिले मैंने अपने इरादों को दृढ़ रखा। मैं नहीं झुकना चाहता था। किन्तु अन्त में मुझे भी परास्त होना पड़ा। यह ध्यान था कि सबेरे इनसे पूर्व ही मैं जाग उठूंगा।

धीरे-धीरे निद्रा की मोहनी गोद का प्रभाव मेरे ऊपर पड़ने लगा। पहिले पलकों ने अपना काम बन्द किया। फिर आँखों के भीतर की ओर पर्दा पड़ने लगा। अभी यह गाढ़ा न हो पाया था कि मुझे स्मरण है कि मैंने कुछ सुना। क्या सुना, यह अस्पष्ट था। किन्तु सवेरे उठने के बाद भी मुझे इसका स्मरण बना रहा। यह कोई आवाज थी जो 'गुप्त समुद्र' की ओर से किनारे पर आई; कुछ ऊँचे पानी की थपथपाहट-सी जान पड़ी। किन्तु इससे मेरी निद्रा में यिघ्न नहीं हुआ। मैंने भी, हाँ, मैंने भी एक सच्ची ध्वनि सुनी। इसके बाद में गाढ़ निद्रा में पड़ गया।

जब मेरी नींद टूटी तो मैंने अनुभव किया कि कोई चीज मेरे शरीर में लग गई है। यह चीज हरि का हाथ था। हरि ने कहा कि मुझे तुम्हें जगाने में कुछ दिक्कत पड़ी। तुम खूब सो गये थे। किन्तु मुझे मालूम हुआ कि मैं पहिली बार के हाथ लगाने में ही जग गया हूँ। अब दिन का उजाला खूब फैल गया था। हरि पेट के बल पड़े चट्टान के बीच से दूसरी ओर कुछ देख रहे थे।

हरि—"हल्ला मत करो और अँगुली भी देखो न दीख पड़ने पाये। बिना अपने आप को दिखाये, देखना हो तो देखो।"

मैं अब बिल्कुल चुस्त हो गया था। मोहन अब भी खर्राटे भर रहा था। एक बार उसकी ओर देखकर मुझे मुस्कुराहट आ गई। फिर मैं सरक कर चट्टान के दूसरे सिरे की आड़ में चला गया। यहाँ से मुझे देखने का अच्छा अवसर था। मेरे सम्मुख सारा 'गुप्त समुद्र' और बड़ी गुफा वाला उसका मुहाना अच्छी तरह दिखाई पड़ रहा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उस नीरवता में मेरी आँखों के सामने सभी चीजें जीवित मालूम हुईं। मैंने पहिले बँगले की ओर देखा। थोड़ी देर में उसमें से घना धुआँ निकलता दिखाई पड़ा। फिर घाट से एक नाव खुली और उसका मुँह सीधा मुहाने की ओर लगा। उस पर दो आदमी बैठे थे। एक छोटा और दुवला, दूसरा मोटा-ताजा। नाव में डाँड़-पतवार कुछ नहीं था। समुद्र में और कितनी चीजें जगह-जगह तैर रही थीं; परन्तु मालूम होता था कि उनकी ओर उनका ध्यान ही नहीं लगा। उन्होंने सीधा मुहाने का रास्ता लिया जो अब ज्वार से भर गया था। उन्होंने एक बार भी फिर कर पीछे की ओर नहीं देखा।

अब वहाँ फैलते हुए धुएँ के नीचे वह बँगला था और वही नीला गुप्त समुद्र जिस पर कुछ चीजें तैर रही थीं।

तब मैंने देखा, दृश्य में कुछ नवीनता है, कुछ भारी आशंका है। मैं फिर ख्याल करके देखने लगा। कोई चीज जैसे गुम हो गई है। क्या सही है? और, तब एक बड़े धक्के की सूरत में बड़ी घबराहट में सत्य दिखलाई पड़ा। इसके दो ही सेकण्ड बाद हरि ने उद्विग्न स्वर में कहा—

"पुष्पक खतम!"

हाँ, यही चीज थी जिससे दृश्य में भयानकता आई थी। सुन्दर जहाज लुप्त हो गया। पहिले यह बात अविश्वासास्पद जान पड़ी, किन्तु थोड़ी देर बाद हम आँखों को धोखा न दे सकते थे। अब 'पुष्पक' वहाँ लंगर डाले हुए न दिखाई पड़ता था। वह सर्वदा के लिये विलीन हो गया था।

"उसे भी वे साथ लेते गये।" मैंने घबराहट के साथ चिल्लाकर कहा। इस चिल्लाहट पर मोहन की भी नींद टूट गयी और वह उठ बैठा, किन्तु हमने इसका ख्याल नहीं किया। इसी समय हरि का पीला और उद्विग्नतापूर्ण चेहरा मेरी ओर घूमा।

हरि—"यह असम्भव है। उसको उन्होंने डुबा दिया।"

मोहन भी अब मेरी बगल में आ गया। हरि ने और स्पष्ट करते हुए कहा—"वह वहाँ रात को था। हम सभी ने उसे देखा था, किन्तु उसे बाहर जाते हमने बिल्कुल नहीं देखा। कप्तान खूब जानता है कि कैसे उसके साथ चाल चली जा सकती है। धीरे-धीरे उसमें फिर पानी भरने लगा होगा और रात में किसी वक्त आखिर को वह डूब गया होगा।"

मैं चिल्ला उठा—"हाँ, मैंने रात को आवाज सुनी थी। पहिले एक चमकने की आवाज सुनाई दी। फिर बड़ी-बड़ी लहरों की थपथपाहट किनारे पर। किन्तु उस समय मेरे मस्तिष्क पर निद्रा का आधा अधिकार जम चुका था।"

हरि—"वह आवाज पुष्पक के डूबने की थी। आः राक्षसो!"

मोहन और मैं एक-दूसरे की ओर घबराहट से ताकने लगे। अवस्था भयानक थी। एकाएक हरि चिल्ला उठे—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हाय ! उन्होंने बँगले में भी आग लगा दी।"

मुझे इसको मालूम करते जरा भी देर न लगी। उतना घना धुआँ भगेलू के चूल्हे का नहीं हो सकता था और यह चिमनी से भी तो नहीं निकल रहा था। वास्तव में यह उस छोटे घर की एक खिड़की से निकल रहा था। हरि ने एक ठंडी साँस ली, फिर कहा—

"लेकिन मैं दौड़ने में असमर्थ हूँ। देखो भाइयो ! तुम्हीं जाकर यह करो। यह रिवाल्वर उठा लो, और चल दो। यदि वे नरपिशाच लौटकर आये तो देखते ही मात्र शूट कर देना। जैसे भी हो, बँगला बचाओ। यदि अब भी अन्दर जाया जा सकता हो तो लकड़ी-पत्थर जो हाथ आये, पहिले उससे आग को ढाँक दो। तेल के कनस्तरों को, जहाँ तक जल्दी हो सके, दूर रख आना। जितनी भी रसद बचाते बने, बचाना और उसे अलग करके रख-रखा आना। वह हमारे लिए जीवनाधार है। उसके बिना हम मरे दाखिल हैं। सावधानी के साथ जल्दी जाओ, जल्दी दौड़ो। मैं भी भरसक जल्दी से जल्दी आ रहा हूँ।"

हमें अब दूसरी बार कहने की आवश्यकता न थी। हम साँस लेना तक भूल गये। जब वहाँ से हम दौड़ने लगे तो हमने उन्हें कड़कती आवाज में कहते सुना—

"हाँ, राक्षसो, नरपिशाचो !"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमारा घनिष्ठ संघ

हम वहाँ से जान छोड़कर दौड़े। रास्ते में हम साँस लेना तक भूल गये। जल्दी पहुँचने और आगे भयंकर दृश्य के ख्याल ने उस समय हममें पागलों की-सी ताकत भर दी थी। कदम-कदम पर, उत्सुकता के साथ हमारे दौड़ने की गति भी बढ़ती जाती थी। हमने समझ लिया था कि यही जल्दी का अन्तिम अवसर है। मेरे साथ-साथ बेचारा मोहन भी जी तोड़कर दौड़ा चला आ रहा था। वह मुझसे आगे चला जाता, किन्तु नौ दिन के फलाहार ने उसकी ताकत आधी कर दी थी। जिस समय हम वहाँ पहुँचे, उस समय हमारे सामने काम था, और कुछ नहीं।

हमने वहाँ पहुँच कर देखा कि अभी बँगला लपट में नहीं है। खिड़की से धुआँ अधिक परिमाण में निकल रहा था। आग हमें दिखलाई नहीं देती थी, किन्तु दिखलाई देता था कि अधिक धुआँ उसी कमरे से निकल रहा है जिसमें रात दोनों शराब पी रहे थे। थोड़ा-थोड़ा धुआँ दूसरे कमरे की खिड़की और बड़े द्वार से भी निकल रहा था। मैं बाहर की ओर देख रहा था कि मोहन बरामदे में घुस आया। वहाँ उस धुएँ का अँधेरा इतना था कि किसी चीज का देखना असम्भव था। ढूँढ़ते हुए एकाएक दोनों ने एकसाथ ही अँधेरे में हिलती, जगती और धीमी हो जाती एक छोटी-सी लौ देखी। लौ फर्श पर पड़े हुए किसी प्रकार के ढेर से निकलने की कोशिश कर रही थी। हमने समझ लिया कि यह असली खतरा है। पीछे हमने देखा कि वहाँ कागजों, पुस्तकों और बिछौने के कपड़ों के टुकड़ों को जमा करके उन पर मिट्टी का तेल छिड़क दिया गया है।

हमने अपना काम बाकायदा करना आरम्भ किया। पहिले दूसरे कमरे से बहुत-सा कपड़ा ढो-ढोकर हमने उस ढेर को चारों ओर से खूब मूँदा, ताकि ताजी हवा इस छोटे से भयंकर शत्रु से न मिलने पाये। फिर कागजों को अलग किया, तेल में भीगे कपड़ों को दूर किया और क्रमशः स्थान को धुएँ से खाली कर दिया। तब हमने दम लिया।

मोहन—"जो दस ही मिनट और देर हो जाती तो काम हाथ से बेहाथ था। अभी ही आग बढ़ने लगी थी। उन लोगों ने बहुत-सा कागज डालकर आग लगाने में भूल की थी।"

मैं—"उनको क्या मालूम था कि यहाँ हम लोग आ रहे हैं। जो आकर हमने अलग-अलग न किया होता, तो फिर यह आग बड़ा जोर पकड़ जाती।"............ओ हो! यह देखो!"

यहाँ कोई चीज थी जिसे हम दोनों में से किसी ने नहीं देखा था। यह छोटी मेज के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिल्कुल नीचे थी। यह विचित्र वस्तु बहुत ही साफ, वर्गाकार छिद्र था जो दो तख्तों में कटा हुआ और कम्बल से ढँका हुआ था।

मोहन ने गम्भीरतापूर्वक कहा—"यह एक छिद्र-सा है। हाँ, सचमुच छिद्र। वह देखो काठ का टुकड़ा। मालूम होता है, इसका ढक्कन है। यह उस पर ठीक आ जाता है।"

तख्ता अब कमरे में दीवार के सहारे खड़ा था। मैंने आगे बढ़कर मेज को घुमा दिया कि नीचे देखूं। वहाँ कोई भय करने की चीज न थी। वह एक खाली छिद्र था।

मैं—"बूढ़े भगेलू की चारपाई यहाँ खड़ी रहती थी और कम्बल भी था। मैं समझता हूँ, चारपाई जान-बूझकर यहाँ रखी रहती थी। मुझे बार-बार ख्याल आता था कि क्यों यहाँ बीचोबीच चारपाई बिछी है।"

मोहन—"हूँ यही सन्देह डाकुओं के दिल में भी आया होगा। फिर उन्होंने खोजना आरम्भ किया होगा। किन्तु बूढ़ा भगेलू उनके रास्ते का काँटा था, और मारा गया। लेकिन क्या चीज थी वह यहाँ गड़ी हुई?"

सचमुच। किन्तु मैं नहीं बता सकता था और अपने कच्चे विचार को अभी सामने रखने में मैं हिचकता था कि शायद वह मूर्खतापूर्ण हो।

मैं—"अच्छा है, चलो अब हरि के पास चलें। उन्हें हमारी सहायता अपेक्षित होगी। और जब वह यहाँ आकर सब चीज देखेंगे, तो मोहन सब की कुंजी का मिलना दो मिनट का काम होगा।"

अब हम हरि की ओर चले, जो किनारे-किनारे आ रहे थे और अभी आधी मील दूर थे। जब सब कथा कहते-कहते समाप्त हुई, तो हम बँगले पर पहुँच गये थे। अन्दर आने पर वह एक कुर्सी पर बैठ गये और एक बार नजर दौड़ाकर उन्होंने सभी चीजें देखीं।

हरि—"ओफ! उन्होंने सचमुच सभी चीजें बर्बाद करनी चाही थीं। उन्होंने बूढ़े को मार डाला, जहाज को डुबा दिया और मकान के जलाने के साथ सारे कागज-पत्र को भी नष्ट कर देना चाहा था। एक-एक को खोज-खोजकर चौपट करने का उनका इरादा था।

हरि इस समय अपनी प्रकृति के विरुद्ध बड़े कड़वे हो गये थे। उनकी इस सारी बात में उस कड़ुवाहट की मात्रा पूरी दीख पड़ रही थी। जैसे ही उन्होंने अपनी बात समाप्त की, मैंने उनकी दृष्टि को देखा। तीखी थी। उससे अब असहायपन, घबराहट, क्रोध एकसाथ मिले झलक रहे थे।

मोहन—"यह सब समाप्त हो चुका होता जो आपने हमें जल्दी न भेजा होता, किन्तु हमने सब ठीक कर लिया।"

हरि के होठों पर एक टेढ़ी-सी मुस्कुराहट थी—"जो कुछ हुआ सो हुआ। अब हमें देखना है कि उन्होंने क्या हमारे वास्ते छोड़ा है। उन्होंने इन सारी ही पुस्तकों को जलाकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खाक कर देने की कोशिश की थी। मैं समझता हूँ, जब तक मैं इनको ठीक से लगाता हूँ, तब तक माधव, तुम जलपान तैयार करते हो। क्यों ?'

मैंने और मोहन ने एकसाथ 'हाँ' कहा। तब मैं मोहन को रसोईघर की ओर ले गया कि कुछ गर्म-गर्म नाश्ता तैयार किया जाय। पन्ने-पन्ने जोड़ने से मुझे यह अच्छा भी मालूम हुआ। हमारा मन उनमें लगा था। यद्यपि बीच-बीच में उन नृशंसों के लौट आने का ख्याल आ जाता था। पर, हमें तब तक हरि का स्मरण न आया जब तक कि खाना तैयार हो जाने पर उनके बुलाने की जरूरत न हुई। मैं पुकारने के बदले उन्हें लिवाने वहाँ चला गया जहाँ कि मैं उन्हे कुर्सी पर छोड़ आया था। देखा, उनके सामने छोटी मेज पर किसी हस्तलिखित पुस्तक के अलग-अलग किये पन्ने रखे हुए हैं। अपना काम समाप्त कर अब वह जंगल की ओर देख रहे थे।

मैं—"जलपान तैयार है, भाई साहेब !"

हरि—"धन्यवाद, बड़ी खुशखबरी लाये।"

वे मेरे साथ वहाँ से रसोईघर में आये।

मोहन—"मैंने जब पहिले इस घर को देखा तो मुझे मालूम हुआ कि मैं जैसे दार्जिलिंग में मामा के घर में हूँ। आह ! कैसा सुन्दर ख्याल है। धन्य जन्मभूमि !"

जन्मभूमि की कल्पना ने ही मेरे हृदय में आनन्द की धारा प्रवाहित कर दी। किन्तु उसी समय मुझे एक बात का ध्यान आया और मैंने घाट की ओर देखकर कहा—

"और, डोंगी कहाँ गयी ?"

हरि इस पर पहिले ही विचार कर चुके थे—"वह भी समाप्त हो गई—सम्भवतः डुबा दी गई ?"

मैं—"डुबा दी गई ! तब तो उसके बिना हम लोग सर्वथा निस्सहाय हैं। अब इस जेल से निकलना असम्भव है।"

हरि (शान्तिपूर्वक)—"हाँ, इस समय तो ऐसा ही है।"

यह निराशा की शान्ति न थी, यद्यपि पहिले-पहिल कुछ वैसी ही जान पड़ी।

हरि—"इस उपाय से नहीं, हम किसी दूसरे उपाय के लिए सलाह करेंगे......... जरा-सी और भाजी, मोहन ! इस समय हमारे सामने यह काम है। इसे समाप्त कर फिर दूसरे पर पैर रखा जायगा।"

इस प्रकार और वेदनाओं की भाँति यह भी चली गई। हम लोगों ने नाश्ते की मौज में सबको बहा दिया। फिर मुझे ख्याल आया और ख्यालों की भाँति हरि को भगेलू के नाश्ता बनाने की विधि का भी ख्याल बिना आये नहीं रहा होगा, खासकर जब कि जहाज की रसद की भी अब आशा थी। शायद उन्हें इसका भी विचार आया होगा कि अब हमारे पास कितने दिनों के लिए रसद है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"भोजन-समाप्ति के बाद एक बार उन्होंने भोजन-भण्डार तथा और सभी चीजों की देखभाल की। फिर, बड़ी शान्तिपूर्वक काम की बात की तरह सीधे-सादे तौर पर कहा—

"हमारी अवस्था यह है। हमारे पास कुछ सप्ताहों के लिए रसद रह गई है। सो भी सावधानीपूर्वक खर्चने पर ही उतने दिन भी चलेगी। उसके बाद यदि हम यहाँ ठहरे तो हमारे लिए होगा उपवास और मृत्यु। पहिले हमें 'मौडमूलर' की आशा भी थी। किन्तु अब वह भी समूल उच्छिन्न है। 'गुप्तसमुद्र' और उसके रहस्य को पा लेने के बाद अब वह लुटेरे बहुत जल्दी यहाँ से चले जायेंगे। अब तो उधर की प्रत्याशा की डोर ही कट गई।

"और रहा रहस्य के विषय में, सो वह यहाँ था, सब चोरी हो गया। निस्सन्देह इस भयानक पहाड़ी में किसी प्रकार का खजाना था, जिसे महाराज जगदीशपुर ने बीस वर्ष पहिले पता लगा कर पा भी लिया था। उसे उन्होंने फर्श के उस छिद्र में छिपा दिया और यदि उन्होंने अपने प्राण गँवाये। किस तरह, यह तुम्हें मालूम है। पीछे दूसरा भूगर्भशास्त्री आया और वह भी उसी परिणाम पर पहुँचा। उसके लिए महाराज की सारी सावधानता और बूढ़े भगेलू की जाँनिसारी बच्चों के ख्याल थे। कप्तान अर्जन सिंह की लॉगबुक के पढ़ने के बाद उसने सम्भवतः ताड़ लिया कि उसे किसकी खोज जरूरी है और उसे उसने फर्श के छेद में पा लिया। इसी छेद में उसे महाराज का प्राइवेट लेख मिला जिसे मैं अभी पढ़ रहा था। असली चीज के पा जाने पर उसने लेख को अपने ख्याल में नष्ट कर दिया। यदि उसे हमारी विद्यमानता का पता भी होता तो भी वह इससे अधिक चतुराई नहीं कर सकता था।"

मैंने ओर मोहन ने हैरान होकर एक-दूसरे के मुँह की ओर ताका। फिर मैंने पूछा—

"किन्तु क्या था वह खजाना, और क्या था उसका मूल्य ?"

हरि (धीरे से)—"वह क्या वस्तु थी, यह स्पष्ट किसी जगह भी नहीं लिखा मिला। वस्तु का नाम यहाँ नहीं लिखा है। किन्तु यह पता लगा है कि महाराज की दृष्टि में वह मूल्यवान् थी। उनका विश्वास था कि उन्हें ऐसा एक खजाना मिला है जिसका मूल्य कम से कम दो अरब रुपया है।"

यहाँ अब सारे चुप थे।

मोहन—"ओ हो ! ऐसा !"

हरि—"और यह उस बात को भी स्पष्ट कर देता है जो माधव ने रात में सुनी। मुझे मालूम है, डेलिंग इस खजाने के पीछे पड़ा था। उसने किसी तरह खजानों के टापू के विषय में एक पुरानी कथा सुन ली। वह उसके अन्वेषण के लिए तैयार हो गया। उसके लिए एक आदमी के जीवन का कुछ महत्व न था।"

दो अरब रुपया !

मैं—"किन्तु वह सम्पत्ति भारतवर्ष की थी, क्योंकि एक भारतीय ने उसे पहिले पाया।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरि—"मुझे इसमें सन्देह है। यह पहाड़ियाँ ब्राजील की हैं, यद्यपि उसने इनसे कभी कोई काम न लिया। यदि तुम दोनों मिनट दो मिनट ठहरो, तो मैं सुनाता हूँ कि स्वयं महाराज की इस विषय में क्या राय थी।"

उन्होंने हमें मेज के पास छोड़ दिया और थोड़ी देर बाद कुछ कागजों को लिये हुए आये—

"यह आश्चर्य है कि वे महाराज के कागजों को अच्छी तरह नष्ट न कर सके। इसका कारण भी था। उन्हें विश्वास न था कि कोई दूसरा भी यहाँ आग बुझाने वाला पहुँच जायगा। दियासलाई की एक तीली ही इनको सर्वदा के लिए अपठनीय बनाने में समर्थ थी। किन्तु कितनी ही बार वृहस्पति के कान काटने वाले भी धोखा खा जाते हैं। जैसे भी हो, यह देखो वह हमारे लिए मौजूद है। यह एक प्रकार से महाराज का वसीयतनामा है। इससे यह भी पता लगता है कि वे केवल एक सज्जन भारतीय ही न थे, बल्कि उनकी दृष्टि और हृदय बहुत ऊँचे थे। वस्तुतः जगदीशपुर के लिए यह स्वाभाविक था।"

लेखपत्र चार टुकड़ों में फटा हुआ था। हरि ने उन्हें ठीक से मिला कर रख दिया। फिर यह भूमिका बाँधी—"महाराज ने इसे एक सांकेतिक लिपि में लिखा था जिसका अभिप्राय यही हो सकता है कि कोई दूसरा पोतारोही न पढ़ ले। किन्तु इसकी भाषा शुद्ध सुन्दर हिन्दी है। महाराज के नाम और दो और नामों के पता लगाते ही मेरे लिये इस सांकेतिक लिपि का जानना भी आसान हो गया। अच्छा सुनो—

इस राशि का मूल्य जो मेरी समझ में जँचता है, सम्भव है, उसे कोई मुबालिगा समझे हो, किन्तु मैं ऐसा नहीं समझता। मुझे भूगर्भशास्त्र का पर्याप्त ज्ञान है। उस पर भी मुझे इस विषय का पूरा अनुभव भी है। मनुष्य निश्चय नहीं कह सकता कि भविष्य के गर्भ में क्या है। अतः मैं यहाँ पर अपने उत्तराधिकारियों के लिए, जिनके हाथ में कि यह राशि पहुँचेगी, अपनी आकांक्षाएँ लिखता हूँ—

यह द्वीप ब्राजील प्रजातंत्र के अधिकार में है, अतः इस प्रकार की निधि पर उसका दावा अयुक्त नहीं कहा जा सकता। कितना हिस्सा किसका होता है, इस पर मैं बहस करना नहीं चाहता, किन्तु यह निश्चय है कि पता लगाने वाले को इसका एक भारी हिस्सा मिलेगा। और मैं इसे साफ-साफ, लिखना चाहता हूँ कि इससे मेरे वंश को कुछ भी लाभ न उठाना चाहिए। हमारी आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त धन-सम्पत्ति हमारे पास मौजूद है। इसलिए मैं अपने उत्तराधिकारियों से चाहता हूँ कि इसका सार्वजनिक हित तथा विद्या-प्रचार के कामों में होना चाहिए।

आज से सात सौ वर्ष पूर्व तक नालन्दा का विद्यालय अपने अस्तित्व को कायम रखे हुए था। उसमें बहुत दूर-दूर के विद्यार्थी पढ़ने के लिए आते थे। हजारों वर्ष तक अनवरत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्यादान करके अन्त में मानवी क्रूर हाथों तथा हमारी उपेक्षा से वह विद्यापीठ नष्ट हो गया। बालपन में जब मैंने चीनी भिक्षु ह्वेनसांग की भारत-यात्रा पढ़ी थी, जब मैने उनके मुँह से नालन्दा के वैभव और यश की भूरि-भूरि स्तुति होते देखी थी, तभी से मेरे चित्त में यह बात बड़े वेग से उठने लगी थी कि क्या भारतवर्ष के गौरव, विहार के मुकुटमणि और आत्मस्वरूप उस नालन्दा विद्यालय का पुनरुद्धार करना हमारे प्रधान कर्तव्यों में नहीं है! विद्या-समाप्ति के बाद मैं कुछ राज्य के कार्य और कुछ अपने प्रिय विषय भूगर्भशास्त्र के अध्ययन में निरत रहने लगा, किन्तु तो भी वह बचपन के हार्दिक भाव विस्मृत न हुए थे। मेरे दिल में पक्का इरादा हो गया था कि अपनी रियासत से कुछ सम्पत्ति विद्यालय के लिए अलग कर दूँ। मैं यह जानता था कि मेरे उत्तराधिकारियों में से किसी को यह रुचिकर न होती। खैर, मेरे संकल्प को एक दूसरी ही रीति से पूरा होना था। अस्तु, संक्षिप्त में मेरी यह आकांक्षा है कि वह सम्पूर्ण निधि जो मेरे हिस्से में आये, वह नालन्दा को मिलनी चाहिए।

हरि—"यह थे महाराज जगदीशपुर, जिसे बूढ़ा भगेलू इष्टदेव की तरह पूजता था और अन्त में जिनकी सेवा में अपने आप को न्योछावर कर गया। तुम उसे कैसा समझते थे ?"

मैं—"भगेलू बहुत अच्छा था। आह, वेचारा भगेलू !"

हरि ने उन टुकड़ों को इकट्ठा करके खूब सावधानी से मोड़कर रख लिया और कहा—

"यह पवित्र वसीयत है मेरे, भाइयो! और यह मेरे लिए भी पवित्र है। हम अब इस कारागार से मुक्त होने अथवा इसी प्रयत्न में मरने जा रहे हैं। यदि बचकर निकल सके तो मैं सारी शक्ति उन लुटेरों से उस निधि को फेर लेने और दुष्टों को उनके अपराध का दण्ड दिलाने में लगाऊँगा।"

मैं—"और हम आपके साथ हैं, क्यों, मोहन ?"

मोहन—"हाँ, चाहे आग हो, चाहे पानी।" हमने एक-दूसरे के हाथ पकड़े। मानो हम आपस में प्रतिज्ञाबद्ध हुए; यद्यपि हममें से किसी ने शब्दों से इस बात को न प्रकट किया।

हरि उठ खड़े हुए और बोले—

"अब से एक घंटा पूर्व मुझे अवस्था सोचनीय मालूम होती थी, किन्तु अब मुझे अच्छा उपाय सूझा है, आओ।"

हम लोग बढ़ी उत्सुकता से उनके पीछे बँगले से बाहर और फिर उसके पीछे की ओर गये। वहाँ टीन के नीचे एक लम्बी-चौड़ी लकड़ियों की टाल लगी हुई थी। मोहन ने आश्चर्य से कहा—"क्यों, यहाँ तो बहुत लकड़ी है।"

हरि ने उत्तर दिया—हाँ, यह उन लकड़ियों में से बची हैं जो महाराज 'मौन्ते,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वायदों' से इस घर के बनाने के लिए बीस वर्ष पूर्व लाये थे। सुरक्षित दशा में रहने से, यह अब भी वैसी ही दृढ़ और कार्योपयोगी है, जैसा कि उस समय थी, बल्कि उससे भी अच्छी है। अब हमें इससे काम लेना है?"

मैं बोल उठा—"नाव बनाना है?"

हरि—"नहीं, उसके लिए हफ्तों की आवश्यकता है, किन्तु हमारे पास उतना समय नहीं है।"

मोहन—"तो बेड़ा बनाना है।"

हरि—"हाँ, इसी की जरूरत है। और, उसका नाम क्या होगा, जानते हो? 'शुभाशा'।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुभाशा का निर्माण

आशा—हाँ, यह आशा है जो महान् परिवर्तन कर देती है। उस दिन उसने हमारे भीतर कैसा परिवर्तन उत्पन्न कर दिया था। हम उन भयानक घटनाओं, उन लोमहर्षक यातनाओं को नहीं भूल सकते जिन्हें अब तक हम अनुभव कर चुके थे। उसके आगे भी, हमारे नवीन प्रोग्राम के रास्ते में कितनी विघ्न-बाधाएँ थीं, कितने भयानक सन्देह थे। क्या अनन्त जलराशि से परिपूर्ण, असंख्य विराट तरंग-मालाओं से उद्वेलित अतल, विस्तृत सागर इन मनहूस चट्टानों से कम है ? किन्तु उन सब की कुछ परवाह न कर हम अपने काम में भिड़ गये। हमारे सामने जलधिपार, हिमालय और विन्ध्याचल के मध्य की सस्य-श्यामला भूमि थी। हमारे सामने जाह्नवी और स्वर्णभद्रा का मंजु-मनोहर कलकल नाद था। हमारे सम्मुख स्नेह-सौहार्दपूर्ण स्वजन बन्धुओ के मुख थे। यह इतना परिवर्तन किसने उपस्थित किया। क्या आशा ने ?

हमने हरि की सभी बातें सुन ली थीं। अब मोहन को तुरन्त कार्यारम्भ से अलग रखना कठिन था। यही स्थान था जहाँ मोहन का 'शोभा' का अनुभव और ज्ञान बड़े काम का था।

उसने उत्सुकता से कहा—"सब चीज़ ठीक है। बेड़ा बनाने का मेरा कुछ अपना भी ख्याल है। मैंने नाव बनाने के विषय में बहुत कुछ सीखा है। किन्तु यहाँ कोई बहुत मजबूत और भारी कड़ी नहीं है जिसे बीच और अलग-अलग में आधार के तौर पर लगाया जा सके। अच्छा कोई हर्ज नहीं, दो-तीन तख्तों को नीचे-ऊपर रखकर काँटी मार देने से काम चल जायगा। फिर हमें एक मस्तूल, पतवार, पाल और बेड़े के चारों ओर एक कटहरे की आवश्यकता होगी।"

अभी घर में कुछ काम करना था। इसलिए मैं तो उधर चला गया और मोहन लकड़ियों की तजवीज में लगा। उसने कहा भी—

"एक आदमी था, उसने एक बालू के टापू में अकेले ही एक नाव बनाई......... (क्रूसो तो नहीं !)। वह नाव बड़ी थी और जब सब काम समाप्त हो गया तो वह इतनी भारी थी कि वह वहाँ से ढकेल कर पानी तक नहीं ले जा सकता था। किन्तु हम अपने बेड़े को घाट पर बनायेंगे और केवल आधार भर पानी से बाहर बनायेंगे। आधार के तैयार होते ही उसे पानी में डाल देंगे और बाकी काम वहीं होगा।"

यह बड़ा अच्छा ख्याल था। सब ने ही इसे एक राय से पसन्द किया। इसके बाद मोहन एक कागज-पेंसिल लेकर बैठ गया। उसने उसका एक नक्शा बना डाला। उसे दिखाते हुए उसने कहा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हमें एक ऐसे वेड़े की आवश्यकता है कि जो कुछ खेया भी जा सके। हमारे पास हथियार, लकड़ी और समय मौजूद है। आप थोड़ा इन्तिजार कीजिये, और देखिये।"

हरि ने केवल मुस्कुरा दिया। तब आरम्भिक काम में मैं और मोहन दोनों साथ ही लगे। हमने भगेलू के सुरक्षित रखे हुए हथियारों और लकड़ी को घाट पर पहुँचाया। मोहन ने इसे हलका और पतला कहा था, इसलिये हमने बरामदे में बाहर लगी हुई शहनीरों को निकाला। वे मोटी और लम्बी-चौड़ी थीं। अब खूब गर्मागर्मी से काम शुरू हुआ। तुरन्त ही वह जगह हथौड़ों और आरों की आवाज से गूँजने लगी। उस दिन का काम देखने से भी हमें मालूम होने लगा कि काम जल्दी और खूबी के साथ पार लग जायगा।

मुझे अक्सर ख्याल होता रहा कि इस विषय पर पद्य लिखूँ; किन्तु उससे गद्य ही लिखना अच्छा मालूम हुआ। इसमें वर्ण-मात्रा का बंधन न होने से बात पूरी बिना संकोच के लिखी जा सकती थी। कथा में गीत की भी आवश्यकता है, क्योंकि उसमें जगह-जगह आरों, हथौड़ों के संगीत के साथ मेरे मित्र का मृदुहास मिश्रित था। वह कविता वैसी ही ओजस्विनी होती, जैसा कि किसी वीरवाहिनी का रणक्षेत्र में प्रयाण। यद्यपि मैं उसे नहीं लिख सका, तथापि वह पद्य, उसका वह मधुर संगीत, अब भी मेरे कानों में गूँज रहा है। जब कभी मैं उस व्यस्त पूर्वाह्न को देखता हूँ तो अब भी हथौड़ों और आरों के साथ ही अपने मित्र की आवाज भी सुनता हूँ और वह सब संगीत से पूर्ण होता है। यह वह संगीत है जिसे शब्दों में प्रकट नहीं किया जा सकता। और, सभी के साथ हरि शान्त और दृढ़ उसी प्रकार चिन्ताशील और प्रसन्न थे। सचमुच हरि का वह नेतृत्व हमारे लिये उन दिनों बड़े ही अहोभाग्य की वस्तु थी।

मैं न प्रकृत कप्तान था और न प्रकृत बढ़ई। मुझे वहाँ आज्ञा के अनुसार काम करना था जिसमें घर का काम-काज, रसोई-पानी आदि सभी था; इसलिये समय-समय पर मुझे हथियार रखकर चुपके से वहाँ से खिसक जाना पड़ता था। मोहन को इसका तब तक पता न लगता जब तक कि वह अपनी एक-दो बातों का उत्तर न पाता। उस समय वह रुक जाता था और देखने लगता था।

मोहन की तजवीज ने हरि के कुछ संशोधनों के बाद एक ऐसे वेड़े का रूप धारण किया जो देखने में दो बड़ी कड़ियों पर बिछा एक से लम्बा-चौड़ा तख्तपोश-सा जान पड़ता था। कड़ियाँ आगे की ओर कुछ नोकदार और दस हाथ लम्बी थीं। दो तख्तों को मिलाकर फिर उसने एक पतवार बनाया और कड़ियों के किनारों पर भाले के नोक की आकृति में दो तख्ते जोड़कर लगा दिये जिससे पानी काटने में सुविधा हो। वास्तव में इतनी तैयारी के बिना हमारा दो सौ मील का सफर, किसी भी समुद्र में असंभव था।

मेरा काम यह था कि जहाँ-जहाँ पानी आने का रास्ता हो, वहाँ-वहाँ तेल और पेण्ट को मिलाकर खूब गाढ़ा लगाता जाऊँ। आधार के ऊपर तख्तों का पहिला फ़र्श था। तब फिर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कड़ी देकर दूसरा फ़र्श तैयार किया गया था और फिर तीसरा। इस प्रकार हमारे बेड़े का ऊपरी फ़र्श पानी से काफी ऊपर था। वहाँ पानी का छींटा नहीं पहुँच सकता था। यद्यपि हमारा बेड़ा मजबूत था, तथापि बहुत से उपयोगी हथियारों के न होने से वह व्यर्थ को बोझिल और भद्दा हो गया था। राम-राम करके किसी तरह दूसरी रात को वह पानी पर तैरा दिया गया।

मोहन ने साँस लेते हुए कहा—"आखिरकार, यह बहुत खराब नहीं है। बस एक दिन में ही अब यह बिल्कुल तैयार हो जायगा। किन्तु अब सब काम इसके ऊपर ही करना होगा।"

हरि ने कहा—"हाँ, और बाकी काम अब हल्का भी है। तुमने बहुत जल्दी की। सचमुच, मोहन ! मैं नहीं जानता तुम्हारे बिना हमारी क्या दशा होती ?"

प्रशंसा-सूचक बातों से प्रसन्न होते हुए मेरे दोस्त ने कहा—"हाँ, सचमुच हमारा बहुत-सा काम अब पूरा हो चुका। अच्छा कप्तान ! हम लोग इस तरह कब प्रस्थान करने योग्य हो जायेंगे ?"

हरि ने शान्ति और दृढ़तापूर्वक कहा—"जितनी जल्दी हो सके, उतना।"

मैंने हरि के चेहरे पर चिन्ता की झलक आते देखकर पूछा—"आप शायद रसद का ख्याल करते होंगे ?"

हरि—"हाँ, थोड़ा-सा। और भी बातें हैं जो शायद हमारे काम की जल्दी समाप्ति चाहती हैं। आओ, आज रात भर काम में लगा रहा जाय। काम पूरा होने पर ही हम बात करेंगे। इस समय बात का अवसर नहीं है।"

जब हरि की बात इस प्रकार की गम्भीरता लिये हुए होती थी, तो हमारे लिये बस एक ही काम रह जाता था कि बिना पूछे उनकी इच्छानुसार काम करें। यद्यपि हम लोग बिल्कुल थक गये थे, किन्तु फिर काम में जुट गये। हमारे पास अब भी मोमबत्तियों का ढेर था। तो भी उनकी रोशनी में काम करने में अड़चन जरूर मालूम होती थी। मैं उस समय उन सारी आवश्यक चीजों को एकत्र करने और बाँधने-छाँदने का काम करता रहा जिन्हें कि हमें साथ ले चलना था। कुछ कम्बलों को खूब अच्छी तरह सीकर मैंने एक पाल भी तैयार किया।

दस बजे रात का समय था। अँधेरा अपने यौवन पर आ चला था। दिन में सूर्य का प्रकाश एकदम न होने से समय कुछ रूखा-सा मालूम होता था। जब मैं अपने बाँधने-बूँधने के काम में लगा हुआ था, उसी समय हरि ने मुझे पुकारा। मैं दौड़ा-दौड़ा किनारे गया। मैं सारे वक्त बँगले में काम कर रहा था, इसलिये बाहर की बात मुझे न मालूम होती थी। मैंने अब देखा कि परिस्थिति में भारी परिवर्तन आ गया है। आकाश में धुंध-सी छाई हुई है ! 'गुप्त समुद्र' का तल एक-एक पीली रोशनी से भयंकर चमक के साथ चमक रहा है। पीछे के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहाड़ी-शिखर भी उसी प्रकाश से चमक रहे हैं। इस प्रकाश में मेरे मित्रों के चेहरों का रग-रग दिखाई देता है जिसमें एक प्रकार का आतंक और घबराहट अंकित-सी जान पड़ती है।

मैंने दृष्टि उधर फेरी, जिधर मोहन देखने को कह रहा था। पहाड़ी दीवार के ऊपर आकाश लाल था। कोई चीज वहाँ से कभी लहकती और कभी धीमी-सी होती दीख पड़ती थी; जैसे दूर का कोई जलता भट्ठा हो।

मोहन—"टापू के उस तरफ किसी जहाज में आग लगी-सी मालूम होती है। देखो वह आग की लौ दिखलाई दे रही है। शायद वह "मौडमूलर" है, ओह !"

थोड़ी देर के लिए मैंने भी ऐसा ही समझा। किन्तु झट ही, हरि की ओर बिना देखे ही सत्यता प्रकट होती-सी जान पड़ी। हरि ने उसे शब्दों में प्रकाशित किया—

"नहीं, मोहन ! यह जहाज की आग नहीं है। यदि यह आग है, तो ज्वालामुखी की आग है। वहाँ पर, टापू की दीवार में ज्वालामुखी ने नया मुँह खोला है और उसके भीतर से निकलती लौ है।"

मोहन—हाँ, क्या आप सचमुच ऐसा समझ रहे हैं ?"

हरि—"सचमुच, मुझे कुछ भी सन्देह नहीं जान पड़ता।"

मैंने उत्सुकता से कहा—"आपने क्या कुछ सुना या कुछ देखा ?"

हरि—"हाँ, अभी मैं सुन रहा था। मुझे कोई आवाज तोप के गोले की-सी सुनाई दी। वह देर तक होती रही, किन्तु जान पड़ा बहुत दूर की थी। और उसी समय पृथ्वी कम्पित हुई। इसी ने मुझे चारों ओर देखने को मजबूर किया। फिर मैंने प्रकाश देखा। यह एक-ब-एक हुआ। शायद इसे दस मिनट न हुए होंगे।"

मुझे उस दिन सवेरे की घटना याद आई. जबकि मैं गुफा के मुँह पर सोया था। मुझे उस समय भूकम्प-सा प्रतीत हुआ था जिसने कि अटलांटिक के थपेड़ों की पहाड़ी पर और जोर से मारना आरम्भ किया था। क्या उसका भी यही कारण तो नहीं था ?

हरि ने फिर कहा—"और यही इस बात को भी स्पष्ट कर देता है कि क्या तुमने गुप्त समुद्र का पानी गर्म पाया था और उसमें बुलबुला उठते देखा था। ओफ्, कितनी भूल ! शायद पृथ्वी के उदर में अब फिर गड़बड़ी मची है। अब उसकी खट्टी डकारें और उसकी गन्ध, पुराने क्रेटरों से आनी शुरू हो गयी और एक नया मुखविवर कहीं और खुल गया। अब डेलिंग की उस बात का भी अर्थ लग गया जो उसने कही थी—एक और सप्ताह बीतने के बाद काम हाथ से बेहाथ हो जाता। उसे मालूम हो गया था कि यह संकट आ रहा है।"

मैं चिल्ला उठा—"क्या, अब हमारे पास निकलने का समय नहीं रहा ?"

हरि—"इसके विषय में निश्चित कौन कह सकता है ? यह भी सम्भव है कि इतना होने के बाद भी कुछ न हो। किन्तु यह अच्छा है, कि प्रोफेसर के कहने के मुताबिक, जितनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जल्दी हो सके, हम यहाँ से रवाना हो जायें। हमें अच्छी तरह भोजन करके एक घंटा आराम करना चाहिए। फिर काम शुरू होगा।"

थोड़ी देर के बाद भी हमने देखा कि अवस्था और भयंकर ही होती जा रही है, उसमें कमी होने की सम्भावना नहीं मालूम होती। दूर रेतीली खाड़ी की ओर लपट और जोर से उठती-सी मालूम होती है। अब हवा भी कुछ उठती-सी मालूम हुई। हमारी मोमबत्तियाँ एक झोंके में खतम हो गईं और वास्तव में उनकी रोशनी इस तीक्ष्ण प्रकाश में भी पराभूत थीं।

जिस समय हम लोग खाकर बेड़े पर लौटे, तो देखा वहाँ कोई सफेद चद्दर-सी पड़ी है। उस पर कुछ काले-काले धब्बे भी हैं। मैंने उँगली लगाई तो कुछ आटा-सा मालूम हुआ।

मैं—"मोहन! देखो, यह क्या है?"

मोहन—"क्यों, मालूम नहीं है?"

अब उसने अँगुली से उसी पर मोटे अक्षरों में लिख दिया—

"भागने की सूचना।"

मोहन—"यही वह राख है जिसने 'पाम्पे' और 'हुर्कुलेनियम' को दबा दिया।"

हमने रातभर बिना विश्राम के काम किया। कभी हमें अपनी मोमबत्ती का सहारा लेना पड़ा और कभी उस भीषण प्रकाश का। इस प्रकार हमें तीसरे दिन काम करने की आवश्यकता न पड़ी। सवेरा होते-होते 'शुभाशा' बिल्कुल तैयार हो गई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यात्रारम्भ

हमने सब काम इतनी जल्दी-जल्दी कर लिया कि दोपहर के पहिले ही बँगला हमारे पीछे था और हम मुहाने की ओर मुँह किये थे। अब दूसरी एक भयंकर गड़गड़ाहट सुनाई पड़ी। इसके साथ ही पृथ्वी डगमगाने लगी, गुप्त समुद्र का पानी हाथों ऊँचा हो गया और उसमें लाल, पीला, हरा तरह-तरह का रङ्ग दिखलाई पड़ने लगा। जब-तब कोई बुलबुला नीचे से जलतल पर उतरा आता था और धीरे से फूटकर दुर्गन्ध फैला देता। जैसा कि पहिले मैंने देखा था, हमारे बेड़े पर सभी चीजें लाद ली गई थीं और अब वह यात्रा के लिए बिल्कुल प्रस्तुत था। कीलों से जड़ा हुआ मस्तूल उसके बीच में था।

मोहन—"भिनसहरे के समय हमने एक इंच मोटी राख गिरी देखी। यदि शाम तक और रह जाते तो निश्चय ही हम उसके अन्दर दब जाते।"

हरि—"बिल्कुल ठीक। किन्तु जो हवा इस राख को ला रही है, वही यहाँ से गुफा और फिर आगे समुद्र तक की हमारी यात्रा के लिए भी बहुत उपयोगी है। अच्छा अब पाल तान दो।"

पाल पतली-पतली रस्सियों के सहारे मस्तूल पर चढ़ा दिया गया। हवा ने हमारी मदद की, और अब "शुभाशा" शीघ्रता से मुहाने की ओर बढ़ने लगी। उसके नुकीले मुँह ने उसकी गति में और वृद्धि कर दी और वह गुप्त समुद्र के बुलबुलों को चीरती आगे-आगे बढ़ने लगी। इसी वक्त शुभाशा का मुँह दूसरे किनारे की ओर होते देखकर मोहन डाँड़ लिये माँगे पर जा बैठा और मैं पतवार लिये पूँछ पर जा धमका। जरा से इशारे पर शुभाशा फिर अपने सीधे रास्ते पर थी।

मोहन बोल उठा—"बोतल का मुँह बड़ा कुलकुला रहा है।" इसी समय मैंने भी जान लिया कि हवा और बाढ़ अब मुहाने की ओर बड़े जोर से लौट रही है। इसी से गुफा के मुँह से बड़ा गर्जन सुनाई दे रहा है। अब हमारा जहाज भी दौड़ने लगा था। वह एक तेज धार में पड़ गया था, जिससे हिलाना-डुलाना अब हमारे काबू से बाहर की बात थी। मैंने अब पाल का कोना खोल दिया और वह झण्डे की तरह उड़ने लगा।

"वाह"—हरि ने कहा, और अब हम लोग गुफा के अँधेरे में थे। इस समय हमारे ज्ञानतन्तु बेकार और कलेजा मुँह को आया था। हमने कहा—"अब क्या! जाने दो, चाहे बेड़ा दीवार से टकराये और चाहे बचे। कश्ती खुदा पर छोड़ दो, लङ्गर को तोड़ दो।" हमने सुतली की उन चारों चक्कियों (बीड़ों) से कुछ भी काम लेना न चाहा जो हमें समुद्र में तैरती हुई मिली थीं और जिन्हें कड़ी चीज के साथ धक्का लगने से रोकने के लिये उसने "शुभाशा" में लटका रखा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवस्था की भयंकरता ने फिर हमें दौड़-धूप के लिये बाध्य किया। कभी मैं माँगा की ओर दौड़ता था और कभी हरि पूंच की ओर। शुभाशा को ठीक रास्ते पर रखने के लिये हम खूब परिश्रम कर रहे थे। हरि के ललाट से कितनी ही बार पसीने की बूंद टपकती तो भी हमारा सारा प्रयत्न उसके वेग के सामने किसी गिनती में न थीं। यह सुभाशा ही की भलमंसी थी जो अगल-बगल की धाराओं के बहकावे में न पड़कर वह सीधे रास्ते से दौड़ रही थी। मेरी समझ में तो यह हमारा वही सौभाग्य था जिसने महागर्त और महागुफा से हमें बचाया था। नहीं तो, जरा-सी चूक में "शुभाशा" चूर-चूर दीखती और हम सब अगाध जलधि तल में होते।

उस पानी के घर्घर और अन्धकार में हम लोग बहुत देर नहीं रहने पाये थे कि अब हमें दूर एक अंडाकार सूराख दिखाई पड़ने लगा। हम जितना ही आगे बढ़ते थें, उतनी ही आवाज तेज होती जाती थी। उस समय हम स्तब्ध, निस्संज्ञ-से हो गये थे। जरा देर और, और अब हम सुरङ्ग से बाहर प्रकाश में थे। यहाँ वह भयंकर धार नील तरंगों से पर्यावृत्त अटलांटिक से एक बड़ी गर्जन और सफेद गाज के साथ भिड़ रही थी। हमारे सामने प्रकाश, ऊपर नीला आकाश और चारों ओर ऊपर-नीचे होती सजीव नीली चादर थी।

"वाह, वाह"—एक-ब-एक हम चिल्ला उठे। अब हमारे हृदय में एक अद्भुत उत्साह और आनन्द की लहर उठी। हमको यह देखकर बडी खुशी हुई कि इतनी भयंकर तरङ्ग में भी हमारे पोत-तल पर एक भी छिटकी नहीं आई है। "शुभाशा" अपनी प्रथम, किन्तु अत्यन्त कठिन परीक्षा में उत्तीर्ण हो गई।

हरि—"पाल को खड़ा कर दो, माधव ! अब उससे हमें बड़ी मदद मिलेगी।"

मैने डाँड़ को रख दिया—अब उसकी आवश्यकता भी न थी—और पाल के निचले अंचल वाले बाँस को पकड़ लिया। फिर उसे मस्तूल से कसकर बाँध दिया और बगल की रस्सी अपने हाथ में जकड़ ली। वायव्य कोण की हवा अब भी चल रही थी। वह पाल में जुट पड़ी और हमारी शुभाशा फिर अटलाण्टिक के विस्तृत नील गात्र पर दौड़ने लगी।

हरि मुँह पर दोनों हाथ फेरते हुए बोले—"धन्य भाग्य। क्यों भाई ! हमारे लिये यह कैसा सुन्दर समय है !"

मै—"हाँ, सचमुच। और मै तुम कारीगरों को क्या इनाम दूँ। तुम्हारा जहाज वाकई, गजब का निकला।"

मोहन खुशी से टोपी उतार कर नीचे रखते हुए—"तुम मुझे तारीफ करके फुसलाना चाहते हो। लेकिन एक बात है। जब यह चीज इतनी आसान थी, तो एक बड़ी नाव के सहारे भी वह दोनों आदमी बीस वर्ष पहिले क्यों नहीं बाहर निकल सके !"

मै—"संयोग कि वे धार में पड़कर दीवार से टकरा गये।"

हरि—"अरे, किस्मत समझो, जिसने हमें सुरक्षित बाहर निकाला।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोहन—"यह बेड़ा भी उस नाव से बहुत भारी है, इसलिये यह आसानी से मामूली धार के फन्दे में पड़ नहीं सकता, तिस पर हम बीच की धार में पड़ गये जो बराबर हमारी मार्गवाहक रही।···किन्तु अब जरा टापू को तो देखो।"

अब हम समुद्र में अपने कारा-स्थान से धीरे-धीरें दूर होते जा रहे थे। गुफा का महान् प्रवेश-द्वार, अब बड़ी-बड़ी पहाड़ियों की आड़ में हमारी आँखों से ओझल हो गया था। सारे द्वीप पर धुएँ और भाप का बादल छाया हुआ था जो कि बाहर की ओर श्वेत और हल्का, किन्तु भीतर धीरें-धीरे काला होता गया था। यही वह पर्दा था, जिसने हमारे पिछले दिनों को अशान्त-चिन्तापूर्ण बना दिया था। मालूम होता था कि वह क्षण-क्षण बढ़ता ही जा रहा है। यद्यपि दीवार की बाहरी ओर इसका आकार धीरे-धीरे विलीन होता-सा मालूम होता था, तथापि भीतर से उसके आने की गति धीरे-धीरे बढ़ती ही जा रही थी। जहाँ ज्वालामुखी ने अपना नया मुँह खोला था, 'रेतीली खाड़ी' के पार की दीवारों में से भाप और गैसें बराबर निकलती ही आ रही थीं। यह धुंध इतनी भारी थी कि यद्यपि हवा अच्छी तरह चल रही थी, तथापि वह उसको सिवाय सारे टापू पर फैला देने के, उड़ा नहीं ले जा सकती थी।

हरि—'नाविक' ने लिखा है—'इस टापू पर सदा बादल और कुहरा छाया रहता है,' और हम जानते हैं कि यह बादल क्या है। यह निस्सन्देह क्रेटर से निकले भाप और गैसों का समूह है और इन गैसों में से कुछ जहरीली भी हैं। इसी से इस द्वीप में न कोई जीवित प्राणी रहता है, न हरी घास ही उगती है।"

मोहन—"मेरी समझ में ज्वालामुखी किसी भयंकर षड्यंत्र की तैयारी में है। मैं बड़ा आनन्दित हूँ कि हम लोग जल्दी उसके चंगुल से बाहर आ गये, नहीं तो यदि गुफा की छत बैठ जाती और गुफा का रास्ता बन्द हो जाता तो हम क्या करते!"

मैं—"करना आसान था, हम वहीं घुटकर मर जाते और क्या। यदि इस वायु ने हमारा साथ दिया, तो हम लोग दक्षिण की ओर जायेंगे। किन्तु हमारे लिये तो उत्तर की ओर जाना ही अच्छा था। उधर शायद कोई जहाज मिल जाता।"

हरि—"हाँ, एक तरह से ठीक ही है। किन्तु इधर भी कोई हर्ज नहीं, हम धीरे-धीरे "कैप"—और "मौन्ते-वायदो" के रास्ते पर पहुँच जायेंगे। उस रास्ते बहुत-सा रोजगार होता है। कुछ भी हो, इसके अलावा हमारे अख्तियार में ही क्या!"

मैं—"हमारी चाल की रफ्तार क्या होगी!"

हरि—"प्राय: चार कोस घंटा, और यह बहुत है!"

इसके बाद हमने कुछ बातचीत न की। मैने देखा—दोनों की आँखें भारी हैं। उन्होंने रात भर जागते हुए बड़ी मशक्कत का काम किया था। मैंने कहा—

"मै देख रहा हूँ कि तुम दोनों नींद से मतवाले हो गये हो। तुमने बड़ा परिश्रम किया है। और इस वक्त कोई आवश्यकता भी नहीं है, इसलिये झटपट सो जाओ। मै बैठा देख रहा हूँ। बस सिर्फ पाल को ठीक रखने का काम है। पीछे न जाने कैसा काम पड़े।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन्होंने जरा आनाकानी की, किन्तु अन्त में मेरी राय बहाल रही और दोनों आदमी कम्बलों पर पड़ रहे। थोड़ी ही देर में वे खूब खर्राटे लेने लगे। मै भी एक गद्दा खींचकर उस पर आराम से बैठ गया। मुझे ↑रना कुछ नहीं था, सिर्फ जब-तब पाल को ठीक कर देना था। वास्तव में इससे अधिक काम था भी नहीं, क्योंकि हवा चल रही थी। लगा कि कहीं हवा वन्द हुई तो शायद हम तीनों ही साथ सो सकेंगे।

मैंने पीछे की ओर देखा। हम द्वीप से पाँच मील दूर थे। धुआँ जल्दी-जल्दी बढ़ता जाता था। ईशान कोण में एक जगह से बराबर भाप उठ रही थी। यह लगातार उठकर रुक-रुककर फक-फक करती थी। यह फक-फकाहट हर वक्त तेज होती जा रही थी। हर एक फक में उस फैले हुए बादल में एक पिंडीभूत वाष्प-राशि की वृद्धि हो रही थी। ऊपर उठने की अपेक्षा उस बादल ने सारे कधुच्छन्न को एक जाले की चादर की भाँति ढाँक लिया था। यह बादल की चादर हवा के कारण सब जगह एक-सी न थी।

तब मैंने आगे की ओर दृष्टि की। 'शुभाशा' पानी को चीरती आगे बढ़ रही थी। हवा तेज थी। अनुभव हुआ कि यदि ऐसा ही रहा तो तीन या चार दिन में हम लोग जहाजों के रास्ते पर पहुँच जायेंगे। यह दो-तीन हमारे लिये दो-तीन हफ्ते से कम नहीं थे, क्योंकि हमारी रसद अत्यन्त परिमित थी। फिन्तु यह प्रश्न मेरे विचार से वाहर का था, इसलिये मैंने इसे छोड़ दिया। फिर मैंने अपने पिछले आश्चर्यमय जीवन पर एक दृष्टि डाली जबकि मै प्रथम-प्रथम मधुच्छन्न में आया और जब मुझे बँगला दिखाई पड़ा।

मेरा ख्याल दौड़ने लगा—क्या यह दुष्ट अपने किये की सजा पायेंगे? क्या हम तीनों—दो लड़के और जरा सयाना आदमी—उन चालबाजों को पकड़कर महाराज के खजाने को लौटा सकेंगे! और, क्या सचमुच जीते जी हम इस जलराशि से पार हो सकेंगे! अच्छा!

———

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जलभित्तिका

सूर्यास्त से जरा ही देर पहिले हवा बन्द हो गई ! अब मधुच्छत्र उत्तर की ओर धुंधमय हो गया था। हम चारों ओर अनन्त जलराशि से घिरे हुए थे। समुद्र बड़ा शान्त था। वहाँ वीचियों का स्पन्दन विल्कुल मालुम न होता था। जान पड़ता था, जैसे 'गुप्त समुद्र' ही अपनी दीवारों को फाँदकर चला आया है।

हरि—"यह एक ऐसी चीज है जिसे मै पसन्द नहीं करता। इस प्रकार की पराकाष्ठा की शान्ति के बाद एक भयंकर तूफान अवश्यम्भावी है। चाहे तूफान न भी आ रहा हो, तो भी हमें जागरूक तो रहना चाहिये।"

मैं—"हाँ।"

अगले दिन भी हमें कोई काम करने की आवश्यकता न पड़ी। वेड़े पर का वह दिन सचमुच, एक आलसी आदमी के लिये, बड़े सौभाग्य का होता। हम लोग कम्वल ओढ़े चुपचाप लेटे थे। कभी थोड़ा सो लेते थे, कभी थोड़ी वात कर लेते थे और कभी कुछ सोचते थे। यद्यपि अब सूर्य अस्त हो गया था, तथापि सर्दी नहीं मालूम पड़ती थी। हवा निश्चल और गम्भीर थी, किन्तु नभोमंडल विल्कुल स्वच्छ था।

मोहन ने एक बार चारों ओर देखा और लम्वी साँस ली। वहाँ कुछ भी करने को न था। तव उसने कम्वल अपने ऊपर डाल लिया और सो गया। मैं हरि का अनुकरण करते हुए रसद के एक बक्स से लगकर आराम से बैठा था। हम दोनों जब-तव क्षितिजों को निहारते थे। कभी स्वच्छ आकाश में जगमगाते हुए तारों को गिनने लगते थे। अब शशि ने भी सिन्धु की गोद से धीरे:धीरे अपने प्रकाशमान मुख को वाहर किया। धीरे-धीरे नीला आकाश और कृष्ण उदधि उसके मृदुहास से परिपूर्ण हो गया। उसकी आभा के सम्मुख नक्षत्र पीले पड़ गये, किन्तु सम्पूर्ण जल-जगत् दुगुनी चमक से जगमगाने लगा। 'शुभाशा' बड़ी मन्द गति से सुनहले सागर पर विचर रही थी। हम उस दिगन्तव्यापी सौन्दर्य साम्राज्य को देखकर चकित थे। किन्तु इसी समय हमारे ऊपर असारता का ध्यान अपना प्रभाव जमाने लगा। यद्यपि हम इस शोभा-साम्राज्य में थे, तथापि इसके विलीन होते कितनी देर लगती है। थोड़ी देर के बाद वह शोभा-साम्राज्य हमारे लिये असह्य हो उठा। उसमें से हमें भय और वैषम्य की गन्ध आने लगी। अपनी मानसिक अवस्था में इस क्रान्ति को देखकर हम अधिक देर तक चुप रहकर उस निर्दय प्रकृति का एकान्त सेवन न कर सके। हमने मन्द स्वर में वात करना आरम्भ किया।

मैं—"यह सब कुछ बहुत सुन्दर है, किन्तु तो भी इसमें वीभत्सता प्रतीत होती है। चारे भगेलू और उसके भीषण अवसान पर जरा ध्यान दीजिये तो।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरि थोड़ी देर चुप रहे, फिर बोले—"मुझे बार-बार उसका ख्याल आता रहा है। शायद यही कारण है कि वह मेरे स्वप्न में आया। मैने उसके विषय में स्वप्न देखा—वड़ा विचित्र स्वप्न।"

मैं—"सुनूँ तो।"

हरि—"सचमुच वह वड़ा अच्छा स्वप्न था। मै स्वयं उसे वताना चाहता हूँ। उसने मेरे ऊपर वड़ा प्रभाव डाला है। उसने मेरे विचार में परिवर्तन पैदा कर दिया है। मैंने प्रथम निर्दयता और नृशंसता देखी थी, इसलिये मेरे हृदय में जम गया था कि मै अपराधियों को दण्ड दिलाने के लिये प्रयत्न करूँगा। स्वप्न में बूढ़ा भगेलु मेरे पास आया—मै समझता हूँ, यहीं इसी बेड़े पर। जानते हो, माधव ! उसका मुख-मंडल आनन्द से पूर्ण था, वह प्रफुल्लित था। उसने इस प्रकार की प्रसन्नता के साथ बात की कि मेरे लिए वह दिव्य दर्शन-सा प्रतीत हुआ। जानते हो, उसने क्या कहा !—"मेरे चित्त में उनके लिए कुछ भी द्वेष और घृणा नहीं है, बाबू। उनका भला हो, उन्होंने तो मेरे साथ वड़ा उपकार किया। उन्होंने मुझे कारागार से मुक्त कर दिया कि मालिक को पाऊँ। मैं उनसे वड़े आनन्द से मिला। पुष्पकारोही सारे मालिक की संगति का आनन्द लूट रहे थे, एक मै ही वंचित था। नहीं, मै उनके प्रति अपने मन में किंचिन्मात्र भी द्वेष नहीं रखता, रत्ती भर भी नहीं, मैं उनका ऋणी हूँ।"

मैं—"क्या पूरा सपना, बस, इतना ही था !"

हरि—"हाँ, मै इतने ही में जाग उठा।"

थोड़ी देर हम चुप रहे। फिर मैंने कहा—

"किन्तु वे अव भी वैसे ही अपराधी हैं।"

हरि—"मै मानता हूँ। और यह एक स्वप्न मात्र था तो भी यह तस्वीर का दूसरा पहलू सामने लाता है।"

"हाँ, सचमुच। मै इस पर निचार करने लगा। सचमुच वृद्ध भगेलू को एक बड़ी कैद से रिहाई हुई। चाहे वह कैसे ही भयानक ढंग से हुई, किन्तु हुई रिहाई अवश्य। वह अब मनुष्य-समाज के योग्य न था। उसका मस्तिष्क और बातों के लिए जवाव दे चुका था। उसे केवल अपने मालिक और उसकी सम्पत्ति का ख्याल था। ऐसे भी वह उसकी रक्षा के लिए जान देता और वैसे भी उसी की रक्षा में जान दी। जो कुछ भी हो, उसकी मृत्यु उसके लिये बड़ी हितकर हुई।"

फिर नीरवता छा गई। हरि ऊँघने लगे। थोड़ी देर में उनका सिर उनके हाथों पर गिर गया और वे निद्रामग्न हो गये। अब वे दोनों सो गये। मैं अकेला बैठा रह गया।

हरि के सोते ही मैने भगेलू का ख्याल भुला दिया और दूसरी-दूसरी वातों पर विचार करने लगा। इसी बीच मुझे अपनी जेंब में पड़े किसी बोझ का ख्याल आया। मेरे चित में उसे देखने की इच्छा हुई। मैंने ऊपर की जेव से रूमाल में बँधी एक छोटी पोटली निकाली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धीरे-धीरे गाँठ खोली और एक क्षण के बाद 'निराले हीरे की खोज' मेरी हथेली पर विराजमान थी।

उस दिन पाकेट में रखने के बाद हम इतने कार्यासक्त हो गये कि मुझे इसके निरीक्षण का ध्यान ही न रहा। अब मुझे यह झूठ-मूठ का बोझा बहुत बुरा-सा मालूम होने लगा और यदि हरि ने यत्न से रखने के लिये न कहा होता तो मैंने उसे निकाल कर फेंक दिया होता। मैंने उसकी ओर आश्चर्य से देखा। मुझे उससे घृणा होने लगी। मेरे दिल में आया, यह वही चीज है जिस पर अनेक वीरपुरुषों का रक्त लगा हुआ है। जब मैंने उसे उल्टा, तो एकाएक उसका चिकना भाग ऊपर आ गया। चन्द्रकिरण के उस पर पड़ते ही फिर वही हृदय-वेधक चमक निकलने लगी जिसे कि मैंने मुर्दों की गुफा में उस कंकाल-गर्त में देखा था।

मैं स्तब्ध रह गया। एक ही क्षण में मारे आतंक के मेरा हृदय शून्य हो गया। मेरे लिये आसानी से साँस लेना कठिन हो गया। फिर गुफा का वह सारा ही अतीत-दृश्य एक-एक करके बड़े स्पष्ट रूप में मेरे सम्मुख आना शुरू हुआ। अब यह अभागा काँच मेरे लिये असह्य हो चला। भय की झोंक में मेरा हाथ उठा और शायद दूसरे क्षण वह समुद्र के अन्धकारपूर्ण गर्भ में सदा के लिये चला जाता और वहाँ फिर उसे कोई आँखों से देख न पाता। किन्तु उसी समय मोहन ने करवट ली और कुछ बुदबुदाया। अब मेरी अकल कुछ ठिकाने-सी हुई। मेरा भय चला गया। मैंने झट उसे फिर रूमाल में बाँध पाकेट में रख लिया। किन्तु यह निश्चय कर लिया कि हरि के जागते ही इसे उन्हें दे दूँगा। इस अभागे काँच के टुकड़े को मैं कदापि न रखूँगा। हरि समझते हैं, इसका कुछ मूल्य है, यह साक्षी का काम देगा, किन्तु मेरे लिए तो इसकी साक्षी अवांछनीय, असह्य और भयंकर है।

यह मोहन का बरबराना था जिसने उस काँच के टुकड़े को बचा लिया और साथ ही शायद हम लोगों को भी, क्योंकि उसी समय स्मरण हो आया कि मैं देखभाल के लिये बैठा हूँ। मै एकाग्रचित हुआ और उसी समय मैंने कुछ सुना और मै झटपट उठ खड़ा हुआ। सवाल उठा—"यह कोई जहाज तो नहीं है?"

चन्द्रिका इस समय अपने यौवन पर थी। शशि इस समय हमारे सिर पर था। मैंने प्रकाश-मार्ग के साथ उत्तर की ओर नजर डाली। निस्सन्देह मैं कुछ देख रहा था। कोई श्वेत पाल तो उस सुनहले प्रकाश में नहीं दिखाई दे रहा है? मैंने अपने हाथों से अपनी आँखों को मला, फिर देखा। फिर मैं अपने समीप वाले मस्तूल को पकड़ कर खड़ा हो गया और ध्यान से देखने लगा। पाल? नहीं यह पाल नहीं हो सकता। यह चाँदनी में सफेद कानविस की चमक नहीं है। यह चमकीले फौलाद पर किरणों का प्रतिफलित होना हो ही सकता है। किरणें हिल रही हैं। हाँ, इधर ही आ रही हैं। और जल्दी-जल्दी। इसका जो भाग किरणों के सम्मुख पड़ता था, वे वहाँ से चमक उठती थीं। किन्तु अगल-बगल में कुछ काली छाया-सी मालूम होती थी। इस अद्भुत और भयंकर वस्तु का मुँह हमारी ओर थां। वस्तु चुपचाप, किन्तु शीघ्रता से हमारी ओर आ रही थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैं जल्दी से बोल उठा—"मोहन ! हरि ! साथ ही मैने अपने पैर से हिलाया भी। मैं उस चीज की ओर से अपनी दृष्टि हटाना नहीं चाहता था। हरि ने उठकर जम्हाई ली। मोहन ने नींद में उँह-उँह किया।"

मैं—"खड़े हो जाओ, जल्दी करो !"

हरि झट खड़े होकर फुसफुसाये—"क्या है ?"

मैं—"नहीं जानता; देखो।"

कितनी जल्दी वह आई। जब वह सर्वव्यापक शान्ति एक भयंकर गम्भीर शब्द में परिवर्तित हो गई। दूर से बहुत-से जल के आने की आवाज मालूम हुई। अब मैंने जाना—वह चन्द्रमा की चमक थी जो कि एक विशाल जलभित्ति—समुद्री महान् लहर—पर प्रतिफलित हो रही थी। उसकी गति बहुत तेज थी। मैं चिल्ला उठा।

"लहर है, लहर ? पकड़ो जोर से।"

मोहन उठकर झट मस्तूल को पकड़ कर लेट रहा। मैने और हरि ने दूसरे मस्तूल को जोर से पकड़ लिया। इसी समय लहर ने झटका दिया और बेड़ा उस पर टँग गया। यह बड़ा अच्छा रहा जो हम सभी ने चीजों को बेड़े के साथ खूब जकड़-बन्द कर दिया था। रसद के बक्स भी काँटे ठोक कर अचल कर दिये गये थे।

मैं—"ठीक है न, मोहन।"

मोहन—"बिल्कुल ठीक, अपने को ठीक रखो।"

हरि ने चिल्लाकर कहा—"पकड़ो जोर से अपने आप को।"

उसी वक्त बेड़ा काँपने लगा। हम लोग ऊपर ही ऊपर चढ़ने गये। यहाँ से बेड़ा इतना सीधा हो गया कि हमारे कम्बल का कोना पानी में गिर कर भीग गया। बेड़े को मानो किसी ने पहाड़ पर चढ़ा कर नीचे पटक दिया। थोड़ी देर तक तो हम लोग निराश हो गये थे। बेड़े के टँगने के साथ हमारे प्राण भी टँग गये थे। फिर लहरों के ऊपर हमारा बेड़ा गेंद की भाँति फेंका जाने लगा। पानी हमारे ऊपर थप्पड़ मारने लगा। अब बेड़ा कुछ सुरक्षित-सा मालूम होने लगा; यद्यपि समुद्र की हलचल बन्द न हुई। अब मैं बैठ कर दक्षिण की ओर जाती एक लम्बी, काली रेखा को निहारने लगा।

भयंकर आपत्ति आई, किन्तु उसने हमें छोड़ दिया। हम किस्मत के मारे हुओं पर उसने भी दया दर्शायी। मरे को मारना, उसे भी कायरता मालूम हुई। थोड़ी देर तक तो मैं बौखला-सा गया। फिर घबराहट के साथ बोला—

"यह बड़ी भयंकर लहर थी, किन्तु चली गई, और हम अब भी यहाँ हैं।"

मोहन—"धन्य भाग ! यह कहाँ से आई ! यह इधर साधारण बात है क्या !"

हरि ही एकमात्र इसका उत्तर दे सकते थे। उन्होंने कहा—"नहीं, यह साधारण बात नहीं है। ज्ञात होता है, यह किसी जलमग्न भूकम्प से उत्पन्न हुई थी, अथवा उसी टापू में कोई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बात हुई है। हाँ, सच यही बात है। मधुच्छत्र में एक भूडोल आया और सभी चीजें उसकी समुद्र के गर्भ में चली गईं। खुद वह स्थान भी अब अगाध जलराशि का स्थान हो गया। ऐसी बातें पहिले भी भूमण्डल के अनेक भागों में हुई हैं।''

हम अच्छी तरह जानते हैं कि उनका अनुमान ठीक था। उसी रात को जीर्ण ज्वालामुखी ने अन्तिम जीवन के लक्षण प्रदर्शित किये और अन्त में वह सदा के लिये समुद्रतल में विलीन हो गया। अब भी तुमको नक्शे में 'मधुच्छत्र भग्न' के नाम से उस स्थान का निशान मिलेगा। हलचल बन्द न हुई। अब मैं उठकर एक लम्बी, काली रेखा को निहारने लगा।

मोहन अब होश में आने लगा था। उसने कहा—''अच्छा, यदि फिर आस-पास ऐसा हुआ तो! मुझे आशा है, हमारे रहते-रहते न होगा; और यदि हुआ भी तो लहरें न उठेंगी। मुझे समुद्र का रहना पसन्द है, किन्तु समुद्र के ऊपर रहना, समुद्र के नीचे नहीं, करोड़ों मन पानी के अन्दर नहीं।''

अब प्रकृति में परिवर्तन आ गया। वायुमण्डल में कुछ गति थी। सभी चीज सजीव मालूम होती थीं। चन्द्रमा फिर सुन्दर मालूम होने लगा। यहाँ तक कि 'शुभाशा' ने भी जलतरंगों पर लहराना आरम्भ किया। अब हमें भी कुछ काम करने का अवसर मिला। हरि ने कहा—

''यह शायद अग्निकोण होगा, किन्तु पूर्व की ओर कुछ अधिक झुका हुआ है। यद्यपि यह वह रुख नहीं है जो हमें अभीष्ट है, तथापि जो हो सो ठीक। अब पाल को एकदम तान दो।''

पाँच मिनट भी नहीं होने पाये कि बेड़ा फिर ठीक हो गया। उसने अफ्रीका के किनारे का रास्ता लिया। यदि सौभाग्य हुआ तो हम एक मास या कुछ अधिक में वहाँ पहुँच सकेंगे। हरि ने बागडोर हाथ में ली। उन्होंने कहा—

''माधव! अब तुम्हारी बारी हैं, सो जाओ। अब हम मोहन ड्यूटी पर हैं।''

मैं इतनी गाढ़ निद्रा में और इतनी अच्छी तरह सोया कि मुझको स्वप्न भी न आया। चन्द्रमा पश्चिम समुद्र में डूब गया। उषा के आगमन से तारे पीले हो गये। उसी समय एक परिचित आवाज सुनाई दी—

''माधव। जाग जाओ, उठो, यह देखो।''

मुझे पहिले एक विचित्र छोटी-सी छाया पानी में दिखाई पड़ी। फिर किसी चीज पर लहरों को खेलते देखा। देखा कि वह उसके चिकने पृष्ठ पर चढ़ती है और फिर दूसरी ओर कूद जाती है। हरि ने इसे एक मृत ह्वेल मत्स्य समझा, किन्तु मेरे जगाने से पूर्व उनके विचार परिवर्तित हो गये। वह वस्तु किसी समुद्री प्राणी से कई गुना भारी थी। वह स्वयं स्थिर थी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और हमसे तीन सौ गज की दूरी पर पड़ी थी। हमारा हल्का वेड़ा नजदीक पहुँच रहा था। अब प्रकाश भी अधिक हो चला था।

मैं—"यह तो जहाज है।"

हरि—"हाँ, स्टीमर, और 'मौडमूलर' के आकार का। शायद हमने द्वीप को पहिले छोड़ा। उनको भाप तैयार करनी पड़ी। कप्तान ने उसकी राय मानने में गफलत की, अर्थात् वे द्वीप में ही थे जबकि अन्तिम घड़ी आ पहुँची। उस भयंकर लहर नें स्टीमर को लौके की भाँति उठाकर उलट दिया और फिर उसे तैरता छोड दिया। माधव, यह टूटा-फूटा नहीं है, यह लोहे की कब्र है।"

तीन दिन तक हम इसी तरह चलते गये। चौंथे दिन :सवेरे हमारे दुःख का अन्त हुआ। 'पर्नम्बकू' हमें लिये-दिये रायो-दि-जेनेरो की ओर बढ़ा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आँख के जानकार

''पर्नम्बकू'' के पोतारोहियों और कप्तान ने हम लोगों के साथ बहुत ही सहानुभूति दिखाई। ब्राजीली बन्धुओं ने सब तरह का प्रबन्ध स्वजन-बान्धवों की भाँति किया। मै पोर्तुगीजी नहीं जानता था, किन्तु अंग्रेजी द्वारा हमारा काम बखूबी चल जाता था। जब हम ब्राजील की राजधानी ''रायो-दि-जेनेरो'' पहुँचे तो ''पर्नम्बकू'' के कप्तान ने हमारे सारे वृत्तान्त के साथ एक परिचय-पत्र दिया।

यद्यपि अस्वस्थ होने से मैं जहाज पर कुछ कर न सका था, तथापि मुझे प्रसन्नता हुई जब मालूम हुआ कि मेरे मित्रों ने बहुत-सी उपयोगी सूचनाएँ वहाँ संगृहीत कर ली हैं। वहीं पता लग गया था कि 'रायो' में बौद्ध प्रचारक-संघ का केन्द्रीय कार्यालय है। प्रधान भिक्षु भद्रघोष यहीं पर रहे हैं। 'रायो' में गर्मी अधिक थी, इसलिए हम दो-एक दिन आश्रम पर ही रहे। पीछे प्रधानजी तथा एक दूसरे भद्र पुरुष की भी राय हुई कि कुछ सप्ताह हमारा पेत्रोपोलिस में रहना अच्छा होगा। यही यहाँ का शिमला है। स्वामी जी ने पेत्रोपोलिस के कार्यकर्ता श्री धर्मरत्नजी को पत्र भी लिख दिया।

तीन दिन के बाद मेरी तबियत बहुत कुछ अच्छी हो गई और छठे दिन के बाद यदि कोई बीमार कहता, तो मुझे क्रोध हो आता। मैं अपना बहुत समय आश्रम के बाग में बिताता। हरि और मोहन दोनों रोज 'रायो' जाया करते जिसमें हरि तो काम से ही जाते। किन्तु मोहन का काम मेरे लिये सिर्फ तरह-तरह की खबरें जुटाना रहता। मुझे मालूम हुआ कि हरि हम लोगों के घर की यात्रा के प्रबन्ध में हैं।

पेत्रोपोलिस आने के सातवें दिन फिर घटनाएँ घटित होने लगीं। उस दिन हरि मोहन के साथ लौट कर न आये और मोहन भी देर से करीब तीसरे पहर आया। उसके देखने मात्र से मालूम हुआ कि आज कोई विशेष समाचार है। मैंने उत्सुकता के साथ पूछा - ''कोई खास बात है क्या ?''

मोहन—''किस खास बात की बड़ी ख्वाहिश है ?''

मैं—''क्यों नहीं, तुम्हारी खबरें सुनने की ख्वाहिश है, दोस्त।''

मोहन—''तुम निस्सन्देह बहुत अच्छे हो। किन्तु उस्ताद जरा भी कृतज्ञ नही होते।''

मैं—''कृतज्ञता के लिये भी तुम्हें अलग टिकट कटाना होगा। जानते हो, भारत बहुत दूर है। अच्छा, जाने दो, सुनाओ क्या बात है ?''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब मोहन बातें स्मरण करने लगा। फिर बोला—"हरि दूसरी ट्रेन से आ रहे हैं। वे किसी की प्रतीक्षा में रुक गये हैं : उसे वे तुम्हें दिखलाने के लिये ला रहे हैं। मैं भी साथ ही आने वाला था, किन्तु फिर उन्होंने जाने क्या सोचकर पहले भेज दिया। चलो तुम्हें खवर तो मिल गई।"

मै—"मेरी तबियत तो इस देखा-देखी में और खराब होती जा रही है। यह तो बताओ कि कब चलना होगा?"

मोहन—"जब तुम्हें जरा सभ्यता आ जायेगी। तुम्हें इसी समय वीमार होने को किसने कहा था? अच्छा जो उत्सुक हो तो सुनो। हमारी यात्रा का प्रबन्ध हो गया है। ठीक आज से छै दिन बाद के जहाज 'दामिनी' से हम रवाना होंगे। किन्तु यदि हम तैयार न हो सकेंगे तो क्या होगा!"

मैं—"अच्छा, इस पर विचार किया जायगा। लेकिन यात्रा के व्यय के लिये हमें जहाज पर काम करना होगा न!"

मोहन—"जरूर, तिस में आप तो पूर्णाहुति कर देंगे, नहीं बच्चू। हम लोग मुसाफिर की तरह चलेंगे और फर्स्ट क्लास में चलेंगे। सुना!"

मैंने मेज पर से एक अच्छा अंगूर चुना और उसे मोहन के माथे पर फेंक मारा। उसने कहा—"हाँ, यह पारितोषिक है! किन्तु हँसी नहीं, बात बिल्कुल ठीक है। भारतीय राजदूत से हरि ने परिचय प्राप्त किया। भिर उनके द्वारा महारानी जगदीशपुर से फोन द्वारा वार्तालाप हुआ। महारानी ने पाँच हजार रुपये का तार मनीआर्डर भेजा है और हम लोग अब अमीरों की भाँति यहाँ से प्रस्थान कर रहे हैं।"

मैं—"उन्हें कथा सुनाने के लिये!"

मोहन—"इतना ही नहीं, वहाँ दूतागार में लोग 'मौडमूलर' के नष्ट होने की बात कर रहे थे न......!"

मैं—"वाह।"

मोहन—इतना ही नहीं, भूकम्प-तूफान का पता लगते ही, सैनिक जहाजों ने भूकम्प के प्रदेश की पड़ताल आरम्भ की कि देखें कोई यात्री-जहाज खतरे में तो नहीं है। किन्तु सौभाग्य से मधुच्छत्र प्रधान-प्रधान सामुद्रिक मार्गों से दूर है, इसलिए मार्ग के जहाजों को कोई हानि न हुई। उन्हीं जहाजों में से एक ने 'मौडमूलर' के शव को पाया और टकराने के खतरे से बचने के लिये तोप दाग कर उसे डुबा दिया।"

मैं—"और उस सबको भी, जो कुछ कि उसमें था!"

मोहन—"निस्सन्देह। उसे डेलिंग के रहस्य का पता न था। वहीं मधुच्छत्र का रहस्य भी उसकी भाँति ही समुद्रतल में विलीन हो गया और महाराज की निधि भी।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसके बाद मेरा दिमाग घर और कमल की ओर गया। मैंने तुरन्त पूछा—"मैं समझता हूँ, हरि ने देश तार दे दिया होगा !"

मोहन—"भारतीय राजदूत ने हमारे आने के बाद तुरन्त ही दे दिया। तुम्हें डरने की जरूरत नहीं। घर के लोग जान गये हैं कि तुम अब सुरक्षित हो।"

मोहन ने ऐसा कहा और उसे ऐसा ही विश्वास था, किन्तु पीछे हमें मालूम हुआ कि राजदूत के समझने में गलती हुई। उनका संक्षिप्त तार था—

"शोभा" के यात्रियों में से तीन आदमियों को एक वेड़े पर से एक जहाज ने उठाया है। वे दक्षिणी-अमेरिका के एक वन्दर पर उतारे गये हैं। मोहन के सम्वन्धियों ने वड़ी आशा और उत्सुकता से इस सूचना को पढ़ा, किन्तु मेरी वहिन विल्कुल अँधेरे ही में रही। बाद में फिर हमने पत्र भी न लिखा, क्योंकि पहिली डाक के समय ही हम रवाना होने वाले थे।"

न जानते हुए मैंने कहा—"अच्छा तो ठीक। और भी कोई खवर !"

मोहन—"वहुत आदमियों की जीभ इतनी वढ़ जाती है कि चाहे उनका पेट फट जाये, लेकिन उन्हें संतोष नहीं होता। अगर, दोस्त, तुम और खवर चाहते हो तो दूतागार में उसकी कमी नहीं है और तुम्हारा स्वागत भी वहाँ तुम्हारे योग्य ही होगा।"

हमारी वात अभी चल ही रही थी कि हरि आ गये। वाग में न आ वे सीधे घर में चले गये। वे अपने साथ एक लम्वे-चौड़े मध्यवयस्क भारतीय भद्र पुरुष को भी लाये थे।

मोहन—"हाँ, मेरी समझ में वे इन्हीं देवताजी के लिये रुके हुए थे।"

मैं—"दूसरे डाक्टर हैं ?"

मोहन—"मै समझता हूँ, कोई विशेषज्ञ हैं। तुम्हारी दशा ऐसी है और हमें दूसरे सप्ताह प्रस्थान करना है।"

मैं—"किन्तु मैं उनसे नहीं मिलूँगा। मैंने पिछली वार हरि से साफ कह दिया कि यदि अव फिर कोई डाक्टर लाये तो मै उससे वात तक न करूँगा।"

हरि घर से निकलकर हमारे पास आये। यद्यपि धूप से आये थे, तथापि उनका चेहरा वैसा ही शान्त और शीतल था। मुस्कराते हुए उन्होंने बूछा—"कहो माधव, कैसे हो ? मोहन ने खवर सुना दी न !"

मैं—"मैंने थोड़ी हो झपट पाई है। लेकिन तैयारी जल्दी होनी चाहिये।"

हरि—"तैयारी हो चुकी हैं। अव सिर्फ एक वात है। यदि तुम्हारी मर्जी होगी तो वह भी एक घंटे में तय हो जायेगी।"

मैंने लम्वी साँस ली और कहा—"मैने आपसे कह दिया था कि मैं अब किसी डाक्टर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की सूरत देखना नहीं चाहता। मैं अब भला-चंगा हूँ। किन्तु जब तुम उसे लिवा ही लाये हो तो अब क्या होना है? किस चीज का विशेषज्ञ है वह? नाड़ी, दाँत, आँख या किसी और चीज का?"

कुछ सोचने के बाद हरि ने कहा—"महाशय, आपकी आँख की ही परीक्षा की जायगी।"

मैं—"क्यों उसमें क्या है? जरा-सी उठ आई है। और, यह तो बहुत ही मामूली बात है, सभी की कभी-कभी उठ आती है।"

आखिर मैंने समझ लिया कि जान नहीं बचेगी। मैं वहाँ से उठा और दोनों आदमी मुझे घर ले चले। नवागत सज्जन हमारी बैठक में कुर्सी पर बैठे थे। हरि ने मुझे एक कुर्सी दी और आगत महाशय का 'महाशय विजयशंकर' के नाम से परिचय कराया। फिर हम दोनों का 'वन्देमातरम्' हुआ।

हरि—"यही महाशय माधवस्वरूप हैं, महाशय विजयशंकर! आँख वाले। (फिर मुझसे) महाशय विजयशंकर एक मनोरंजक बात कहने वाले हैं। तो कहें।"

मैंने अनमना-सा ही 'हूँ' कह दिया। अब महाशय विजयशंकर ने आरम्भ किया—

"मैं आपसे मिलकर, महाशय माधवस्वरूप, बहुत प्रसन्न हुआ हूँ और आपके उस भयानक स्थान से बचने के लिए अनेक साधुवाद या बधाई। यह बड़ी विचित्र कथा है। किन्तु आज मुझे आपको कारबार के विषय में एक सूचना देनी है। मैंने सचमुच आँख की परीक्षा की है। ऐसी और भी कितनों की है और अब मेरा सौभाग्य है जो मैं अपनी परीक्षा का परिणाम आपको बतलाने जा रहा हूँ।"

मैं हैरान रह गया। क्या सचमुच यह ऐसा विशेषज्ञ है जो तीन गज दूर से, सिर्फ दो मिनट में, मेरी आँखों की परीक्षा कर डाले और फिर उसका परिणाम भी बता दे? क्या बात है? जिस समय मैं इन्हीं आश्चर्य में डालने वाले विचारों में गोते खा रहा था, मैंने अपने पीछे कुछ आवाज सुनी। मुझे मोहनखाँ के हँसने की-सी आवाज सुनाई दी। मैंने समझा, आज कोई भारी मजाक होने जा रहा है। मैं अब सजग रहने की कोशिश करने लगा।

अब मैं स्थिर होकर प्रतीक्षा करने लगा। महाशय विजयशंकर को इस मजाक का कोई पता नहीं था। वे बेचारे अपने काम में लगे थे। उन्होंने अपनी पाकेट से चमड़े से मढ़ा एक छोटा-सा डिब्बा निकाला और उसे मेज पर रख दिया।

विजयशंकर—"शायद अपनी मेहनत का परिणाम दिखाना ही पहिले अच्छा होगा। मेरी समझ में बाद में बात करना आसान हो जायगा।"

उन्होंने डिब्बे को स्प्रिंग दबाकर खोला। अब ढक्कन पीछे गिर गया और वहाँ मखमल के ऊपर कोई चीज रखी जान पड़ी। कुछ चीज? अस्तु। यह और कुछ नहीं था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक बड़ा हीरा था—मुर्गी के अंडे से बड़ा अत्यन्त ही सुन्दर। पहिले-पहिल देखने में कुछ न मालूम हुआ। मालूम हुआ कोई स्फटिक का काटा हुआ टुकड़ा है, किन्तु घर में खिड़की से पूरा प्रकाश आ रहा था। जब मैंने उसकी ओर देखा तो मालूम हुआ, वह सारी किरणों को जमाकर फिर उसे हजार गुना करके आश्चर्यमय नानावर्ण की किरणों में बदल देना चाहता है। अब मुझे मालूम हुआ कि जैसे वह चीज जीवित हो गई। प्रकाश और किरणों को बढ़ाते-बढ़ाते अन्त में जान पड़ा जैसे ज्योति उठी। कुछ ही क्षण में मालूम होने लगा कि कमरे के सभी प्रकाशों की वह नाभि है। महाशय विजयशंकर ने उसे उठाकर जब हाथ में उलटा-पलटा, तो जान पड़ा—प्रकाश की झड़ी सी लगी हुई हैं!

मैंने आश्चर्य के साथ कहा—"हीरा" है।

फिर हरि ने स्पष्ट करते हुए कहा—"वही मुर्दों की गुफावाली तुम्हारी शैतान की आँख है। सिर्फ कटाई की गई है, और कुछ नहीं। महाशय विजयशंकर इसके विशेषज्ञ हैं। वह इसी के बारे में तुमसे बातचीत करने आये हैं।"

तब मुझे बात की तह मालूम होने लगी। यह वही काँच का टुकड़ा है जिसे कंकालगर्त से ले आया था और जिसे मैं समुद्र में फेंक चुका था।

विजयशंकर मुस्कुराते हुए बोले—"यह हमारे जैसे लोगों के लिए बड़ी लालसा का काम है, यद्यपि इसमें जोखिम भी था। पहिली ही नजर में हम लोगों ने मालूम कर लिया कि यह एक हीरा है, शुद्ध और बड़े मूल्य का! हमारी सारी ही परीक्षाओं में यह पक्का निकला। इतना ही नहीं, इसमें कुछ और भी बातें हैं जो इसे और हीरों से ऊँचा दर्जा देती हैं। देखिये मैं दिखाता हूँ।"

उन्होंने पत्थर को हाथ में लेकर मेरी ओर घुमाया। और एकदम उसी एक पहलू से एक लाल चमकीली रोशनी निकलने लगी जो मानो उसके हृदय में वर्तमान प्रचण्ड अग्नि की किरण थी। थोड़ी देर इसने मुझे चकित कर रखा। फिर मुझे कंकालगर्त का वह भीषण कांड, चन्द्रिका में उसका प्रकाश, सभी कुछ याद आने लगा!

मि० विजय—"आपने देखा, इस रत्न में कुछ विशेषता है जो इसके सौन्दर्य और इसकी मनोहारिता को बढ़ा देती है। हम बहुत-से प्रसिद्ध हीरों को जानते हैं, किन्तु इस प्रकार का हीरा हमें कहीं देखने को नहीं मिला। संसार का एक बड़ा हीरा, एक सर्वोत्कृष्ट वज्रमणि आपके सम्मुख है। ब्राजील की हीरे की खानें मशहूर हैं। किन्तु वहाँ भी ऐसा हीरा कभी नहीं मिला। इसका वजन तीन सौ कैरेट है, अर्थात् 'कोहनूर' (103 कैरेट) और 'मुगले आजम' (200 कैरेट) से भी अधिक। यह शोभा में ब्राजील से निकले 'दक्षिणी तारा' से भी बढ़कर है। चूंकि हम इस रत्न की महत्ता को समझते हैं, इसलिये दक्षिणी तारा से दूना दाम, अर्थात् पन्द्रह लाख रुपया इसके लिए आपको देने को तैयार हैं। हमें आशा है कि आप महाशय,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माधवस्वरूप, इसे स्वीकार करेंगे। हम यह नहीं कहते कि आपको इससे और अधिक कीमत न मिलेगी। किन्तु आपको हमारे जैसा ही ग्राहक खोजना होगा। आप जानते हैं, यह वह रत्न नहीं जो गली के कोने में बेचा जा सके।"

मैं थोड़ी देर तक सोचता रहा। फिर हरि से पूछा—

मैं—"क्या कहते हो हरि ?"

हरि—"यह तुम्हारी बात है। मैं इस विषय में क्या कहूँ ? किन्तु मैं यह अयश्य कहूँगा कि महाशय विजयशंकर ने गैर-वाजिब नहीं कहा है। यह श्री विजयशंकर कृष्णप्रसाद कोठी के भागीदार हैं। ब्राजील के भी यह सबसे प्रसिद्ध जौहरी हैं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.